भूमिका

विदेशीशासन से भारत को मुक्त करने के लिये हमारे देशवासियों ने सर्व प्रथम १८५७ में साम्प्रदायिक भेद-भाव भूलकर सशस्त्र संग्राम किया था। दुर्भाग्यवश उसमें सफलता नहीं मिली। १८८५ से कांग्रेस शान्तिपूर्ण उपायों से देशको स्वाधीन बनाने का आन्दोलन कर रही है। महात्मा गान्धीजी के नेतृत्व में कई बार भारत अहिंसा नीति द्वारा ब्रिटिश साम्राज्य से लड़ चुका है और आज भी हमारा स्वतंत्रता संग्राम जारी है। यद्यपि इस उपाय से भी अभी तक हम अपने प्यारे देशको स्वाधीन नहीं बना सके। द्वितीय विश्व महायुद्ध में नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने अपने अन्य सहयोगियों के साथ आजाद हिन्द सेना का निर्माण किया और १९४३ के २१ अक्तूबर को प्राथमिक आजाद हिन्द सरकार की स्थापना कर ब्रिटिश साम्राज्य के पंजे से भारत को मुक्त करने के लिये सशस्त्र संग्राम छेड़ा। यद्यपि यह प्रयत्न भी सफल नहीं हो सका; किन्तु फिर भी अनेक दृष्टियों से यह अभिनव था। इसमें पूर्व एशियाके सभी भारतीयों और जापान द्वारा युद्ध बन्दी बनाये गये भारतीय सैनिकों की पर्याप्त संख्या का पूरा सहयोग था। साम्प्रदायिक एकता के विचार से तो यह संगठन अद्भुत था। इसमें हिन्दू-मुसलमान, ईसाई, सिख और पारसी आदि सभी

रंगून में सहस्रों आजाद हिन्द सैनिक पड़े हुए हैं, किन्तु उन्हें भारत आनेकी सुविधा नहीं मिल रही है। छूटे हुए हजारों आजाद सैनिकों के रुपये—जो विविध फण्डों से उनको मिले हैं, सरकार ने जब्त कर लिया है यू० पी० के गवर्नर सर मारिस हैलेट सुस्पष्ट रूप से इन सैनिकों को देशद्रोही कह चुके हैं और उनके आदेश से प्रान्त भरकी पुलिस को सूचित किया गया है कि आजाद सैनिक जापानी साम्राज्यवाद के समर्थक हैं। ये भविष्य में बड़ा उत्पात कर सकते हैं अतः छूटे हुए आजाद सैनिकों की सूची बनाई जाय और उन पर निगाह रखी जाय। ऐंग्लो-इण्डियन पत्र अभी तक इस सेनाको देशद्रोही सिद्ध करनेमें लगे हैं। फिर भी जब कांग्रेस और समस्त देशवासी इनके साथ हैं; तो अच्छे ही परिणाम की आशा है। हमारे पाठक इन सबका पूरा विवरण अगले पृष्ठोंमें पढ़ेंगे। मैंने अंगरेजी, बंगला, मराठी, गुजराती और हिन्दी के विविध पत्रों और 'जय हिन्द' डायरी से इसका संग्रह और सम्पादन किया है। मैं इन सबके सम्पादकों का हृदय से कृतज्ञ हूं। इस पुस्तक के चित्र प्राप्त करने में बंगाल आटोटाइप कं० के श्री० ए० के० सेनगुप्त तथा लेखन और मुद्रण कार्यमें लोकमान्यके श्रीकृष्णकान्त मिश्रसे बड़ी सहायता मिली है। मैं इन सब मित्रोंको हृदयसे धन्यवाद देता हू। आजाद हिन्द सेना, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस तथा उनके युद्ध, शासन और संगठन आदि सभी विषयों पर राष्ट्रीय दृष्टिकोण से प्रकाश डालने का यत्न किया गया है। फिर भी मैं दावा नहीं कर

-सकूंगा कि इसके संग्रह और सम्पादन में मुझसे कोई भूल नहीं हुई। मै जो कुछ अपने पाठकों से कहना चाहता हूं, वह यह है कि हिन्दी साहित्य को अपनी समझ और शक्ति के अनुसार मैंने भारतीय स्वाधीनता के लिये जूझने वाले वीरों की अनुपम गाथा प्रामाणिक रूपमें देने की चेष्टा की हैं। फिर भी यह इतिहास है अतः इसमें राजनीतिक दृष्टि से अहिंसा और हिंसा का और कोई अर्थ ढूंढ़ना उचित न होगा।

आशा है, हिन्दी माता अपने तुच्छ पुत्र की यह क्षुद्र किन्तु महान् गौरव से परिपूर्ण प्रेम-भेंट स्वीकार करेगी।

जय हिन्द

लोकमान्य, कलकत्ता
२८-१२-४५

—रामशङ्कर त्रिपाठी

विषय सूची

पृष्ठ

आजाद हिन्द फौज के प्रधान सेनापति
नेताजी श्री० सुभाषचन्द्र बोस

भारत में राष्ट्रीय सेना

दिल्ली स्टेशन का दृश्य है। जेल से वाहर आने के वाद ही पण्डित जवाहरलाल जी नेहरू को शिमला सम्मेलन के सम्बन्धमें शिमला जाना पडा। गाडी वदलने के लिये पण्डितजी जब दिल्ली स्टेशन पर उतरे तो सहसा "जै हिन्द" के घोष से स्टेशन गूँज उठा। पण्डितजी ने देखा कि फौजियो की स्पेशल ट्रेन मे बैठे सिपाही यह नारे लगा रहे हैं और समूची गाडी पर सुभाष बोस जिन्दा-बाद और महात्मा गाधी तथा पं० जवाहरलाल जिन्दावाद के नारे लिखे हुए हैं। भारतीय जनता के स्वरको सदैव कान लगा कर सुनने वाले जवाहरलाल के लिये सुभाष बोसकी भारतीय राष्ट्रीय सेनाकी यह पहली गूँज थी। शिमला सम्मेलन कालमें भी पण्डित जवाहरलाल बहुत लोगों से मिले। भारतीय राष्ट्रीय

सेनाके लिये उनकी खोज चलती रही। पञ्जाब के बड़े-बड़े मुसलमान जमींदार घरानों के कई लोग भी पण्डितजी से मिले। यह वे लोग थे जिनके लड़के भारतीय राष्ट्रीय सेनाके ऊंचे अफसर हैं। यह भी मालूम हुआ कि अफसर श्रेणीमें ५० प्रतिशतसे अधिक मुसलमान हैं। परिस्थितियों की जानकारी ने पण्डितजी को भारतीय राष्ट्रीय सेनाके सैनिकों के भाग्यके लिये उद्विग्न कर दिया। उन्होंने देखा कि इस सेनाके खड़ी होने का कारण था भारत को स्वतन्त्रता प्राप्त करने की उनकी प्रबल इच्छा। भले ही वे जापानियों द्वारा भ्रान्त हो गये हों पर उनकी सच्ची भावनाओं पर सन्देह करना भारी भूलका काम होगा।

उस समय जापान पर न तो ऐटम बम गिरा था और न रूस ने ही जापान पर आक्रमण किया था। आशा थी कि जापान को हराने में अभी वर्ष दो वर्ष और लगेंगे। इसीलिये तत्काल पण्डित जवाहरलाल ने इस सम्बन्धमें कोई वक्तव्य नहीं दिया। उनका विचार था कि ऐसे वक्तव्य से भ्रान्ति पैदा हो सकती है। सम्पूर्ण भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन एवं महात्मा गांधी तथा पण्डित जवाहरलाल को करोड़ों रुपये खर्च कर विदेशोंमें जापान का पक्षपाती कहकर बदनाम करने का चर्चिल-एमरी का घृणित प्रयत्न हो चुका था अतः वास्तविक घटनाओं से अनभिज्ञ अमेरिका तथा दूसरे देशों की जनता सम्भवतः भारतीय राष्ट्रीय सेना के सम्बन्धमें पण्डित जवाहरलाल द्वारा इस अवसर पर

दिये गये वक्तव्य का गलत अर्थ लगाती, इसीलिये पण्डित जी चुप रहे।

पर पण्डितजी की खोज चलती रही। इसी बीच अमेरिका एवं चीनके भारत स्थित उच्च अधिकारी भी पण्डितजी से मिलने आये, साथ ही उनके हाथ में भारतीय राष्ट्रीय सेना के मुख-पत्र *"आज़ाद हिन्द"* की प्रतियां भी पड़ीं। यह पत्र हिन्दी, उर्दू तथा रोमन में निकलता था। इस पत्र से उपर्युक्त सेनाके वास्तविक दृष्टिकोण का पता लगता है। नेहरूजी को *"आज़ाद हिन्द"* की जो प्रतिया मिली हैं उनमें एक शब्द भी जापानी साम्राज्यवाद के पक्ष में नहीं कहा गया है। सारा पत्र भारतीय स्वतंत्रताके लिये लड़े जाने वाले युद्ध के सैनिकों, भारतकी स्वतंत्रता और पारस्परिक प्रेमकी भावनाओं से ओत-प्रोत है। इस पत्रमें सिगापुरमे भारतीयों की एक विराट सभामें दिये गये सुभाप बाबू के एक भाषण का उल्लेख है। *"गुरू के चरणों पर"* शीर्षक के नीचे महात्मा गाधीका चित्र है और फिर सुभाप बाबू का यह कथन है कि गाधीजी जहा भी हों, वे जो भी सोचते हों और मेरी वाणी उन तक पहुंचे या न पहुंचे पर मैं स्पष्ट घोषित करता हूं कि वे हमारे गुरू हैं, हम उनके शिष्य हैं। उन्होंने जिस भारतीय स्वातंत्र्य-संग्राम का सूत्रपात किया है हम उसी

स्वतंत्रता के लिये लड़ रहे हैं और अन्तिम श्वास तक लड़ते रहेंगे।

जापानी युद्ध समाप्त होने के बाद, जो ऐटम बम और सोवियट रूस के आक्रमण के कारण अनुमान से पहले ही समाप्त हो गया, पण्डित जवाहरलाल ने भारतीय राष्ट्रीय सेना के सम्बन्ध में अपना वक्तव्य दिया। उनकी आवाज़ को सारे देश ने उठा लिया। सब पत्रों ने उनका समर्थन किया। पं० हृदयनाथ कुंजरू और सर तेज बहादुर सप्रू जैसे लिबरलों ने भी न केवल पण्डित जवाहरलाल के विचारों का समर्थन किया वरन् वे तो और भी आगे बढ़ गये। उन्होंने चीनकी नानकिंग स्थित गुड़िया सरकार की १० लाख चीनी सेना की ओर ध्यान दिलाया जो पहले मार्शल च्यांगकाई-शेक की सेनाओं के विरुद्ध लड रही थी पर जिसे युद्धोपरान्त मार्शल च्यांग ने अपनी कुओमिंगटांग सेना मे सम्मिलित कर लिया। मि० जिन्ना से कराची मे जब भारतीय राष्ट्रीय सेनाके सम्बन्धमें पहले राय मांगी गयी तो वे चुप रहे। परन्तु जब उनको ज्ञात हुआ कि इस सेना के ५० प्रतिशत से अधिक अफसर मुसलमान हैं और पञ्जाब के नवाबी घरानों के हैं तो वे भी चुप न रह सके और उन्होंने भी इस सेना के पक्ष मे वक्तव्य दिया। हिन्दू महासभा और शिरोमणि गुरुद्वारा कमेटी के अकाली दल ने भी भारतीय राष्ट्रीय सेना का समर्थन किया। हां, बेसुरा अलाप तो

केवल कम्यूनिस्टोंका है पर वे तो आज राष्ट्रीय आन्दोलन से दूध की मक्खी के समान बाहर कर दिये गये हैं और उनके मतका कोई मूल्य नहीं रह गया है।

सम्पूर्ण देशमें जब राष्ट्रीय सेना के प्रति इस भांति गम्भीर सहानुभूति प्रकट की जा रही थी, उसी समय भारत सरकार ने उक्त सेना के अधिकारियों पर मामला चलाने और क़ानून के अनुसार दण्ड देनेके लिये कोर्ट मार्शल नियुक्त करने की घोषणा की। साथ ही सरकार ने यह भी स्पष्ट कर दिया कि बदला लेने की भावना से कोई कार्य नहीं किया जायगा। सैनिकों को आत्म रक्षाका अवसर दिया जायगा और उनके प्रति उदारता का व्यवहार किया जायगा। इस पर ३१ अगस्त को श्री नगर (काश्मीर) से एक वक्तव्य प्रकाशित कर राष्ट्रपति आजाद ने भारत सरकार की इस घोषणा का घोर विरोध किया। राष्ट्रपति ने स्पष्ट शब्दों में घोषित किया कि "*सरकार को उक्त सेना या उसके नेताओं पर मुक़दमा चलाने का कोई अधिकार नहीं है। उक्त सेना धुरी राष्ट्रोंके हितके लिये न बनी और न लड़ी। फिर जब युद्धरत धुरी राष्ट्रोंकी सेनाओं तक को अन्तर्राष्ट्रीय क़ानून की सुविधाएं दी जाती हैं,—तब विदेशी शक्ति द्वारा शासित देशके नागरिक उससे कम के अधिकारी नहीं*

है। भारतीय जनता अपने इन पुत्रों को कठोर दण्ड दिया जाना कभी सहन नहीं कर सकेगी। सरकार को स्मरण रखना चाहिये कि उस समय की परिस्थितियां असाधारण थी।"

भारत सरकार की ओर से इसके उत्तरमें कहा गया कि अन्तर्राष्ट्रीय विधानके अनुसार स्वाधीन भारत सेना के सदस्योंको युद्धरत सेना की अवस्था में नहीं माना जा सकता, क्योंकि राजभक्ति की शपथ लेने के बाद भी वे शत्रु से मिल गये अतः वे विद्रोही और विश्वासघातक हैं। इसलिये कानून के अनुसार उन पर कार्यवाही अवश्य की जायगी; फिर भी उनके साथ यथासम्भव उदारता का व्यवहार किया जायगा। लाहौर हाईकोर्ट के भूतपूर्व जज कुंअर दिलीप सिंहने 'ट्रिब्यून'में एक लेख प्रकाशित कर सरकार के इस निर्णय का प्रभावशाली खण्डन किया और अन्तर्राष्ट्रीय विधान का प्रमाण देकर बतलाया कि आज़ाद हिन्द फौजके सदस्य न विद्रोही हैं,—और न विश्वासघातक। वे तो फ्रांस के मार्किस पार्टी के (इस दलके सदस्योंने गत महायुद्धमें जर्मन अधिकारियों से फ्रांसको स्वाधीन बनाने के लिये युद्ध किया था) सदस्यों की भांति ही स्वीकार करने योग्य हैं। मेरा मत है कि भारत के प्रत्येक राजनीतिक दलका यह पवित्र कर्त्तव्य है कि इस सेना के प्रश्नको अपने हाथ में ले और ब्रिटिश सरकार को न्याय करने के लिये बाध्य करे। प्रयाग-

भारत में राष्ट्रीय सेना

विश्वविद्यालय के ला-रीडर श्री० के० भट्टाचार्य ने पं० जवाहर-लालके एक प्रश्न के उत्तर में कहा कि यह सेना जापानियों की देखरेखमें नहीं अपितु उस अस्थायी-स्वाधीन भारत सरकार के तत्वावधानमें बनी थी जिसे संसारके जर्मनी, जापान और इटली आदि ९ स्वतन्त्र राष्ट्रों की स्वीकृति प्राप्त थी। अतः स्पष्ट है कि यह सेना विद्रोही या विश्वासघाती नहीं अपितु शत्रु सेना स्वीकार की जानी चाहिये। गत महायुद्धमें चेकोस्लोवाकिया के नाग-रिकोंकी स्वतन्त्रता को मित्रराष्ट्रों ने स्वीकार किया था; यद्यपि उस समय भी चेकोस्लोवाकिया आस्ट्रिया के अधीन था। उसी सिद्धान्त से इन भारतीय नागरिकों को स्वाधीनता स्वीकार करनी होगी।

कलकत्ता हाईकोर्ट के एडवोकेट श्री जे० एन० घोप, एम० ए० बी० एल० ने *"अन्तर्राष्ट्रीय विधान और आज़ाद हिन्द फौज"* नामक विस्तृत लेखमें अकाट्य प्रमाणों से यह सिद्ध कर दिया कि इस सेना के सैनिक विद्रोही नहीं अपितु युद्धरत-राष्ट्रके सैनिक हैं और उसी प्रकार का व्यवहार इन्हें मिलना उचित है। ब्रिटिश पार्लामेन्ट के सदस्य मि० आर० सोरेन्सनने इस प्रश्न पर अपना मत देते हुए कहा कि *"मेरी धारणा में राष्ट्रीय सेना में सम्मिलित होनेवाले नागरिकों को क्विसलिंग (नारवेके देशद्रोही का नाम) समझना भूल है। जो इस सेनाकी नीति*

को सर्वथा अस्वीकार करते हैं वे भी उसे कितलिंग या देशद्रोही माननेको प्रस्तुत नहीं हैं।" इण्डिपेन्डेन्ट लेबर पार्टीके नेता मि० एफ० ब्रोकवे ने कहा कि *"इन सैनिकों पर मामला चलाना भारी भूल है। उनके कार्योंके सम्बन्धमें हम चाहे जो मत रखें; पर उनका उद्देश अपने देशको स्वाधीन बनाना था। उनके विरुद्ध कार्यवाही करना ब्रिटेन और भारतके बीच की खाई को और चौड़ा करना है।"* पार्लमेन्ट के श्रमिक सदस्य मि० विलियम कोव ने भी इसी मतका समर्थन किया। लण्डनके बड़े-बड़े कानून विशेषज्ञों ने यह मत प्रकट किया है कि इस सेनाके सैनिकों ने सम्राट् की राजभक्ति की शपथ त्याग कर स्वतंत्र भारतकी सरकारके जिसे जापान आदि राष्ट्र स्वीकार कर चुके थे, आनुगत्य की शपथ ली थी। यह स्मरण रखना चाहिये कि ब्रिटिश गवर्नमेन्ट जापान की सरकार को स्वीकार करती रही है अतः नैतिक और अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण से वे अपने देशकी स्वाधीनता के लिये लड रहे थे, न कि धुरी राष्ट्रोंकी लूटमें साझेदारी के लिये। यह सर्व सम्मत सिद्धान्त है कि अपने देशको स्वतन्त्र बनानेके लिये लड़ना उत्तम कार्य है, साथ ही प्रत्येक व्यक्ति का नैतिक उत्तरदायित्व भी है। उनकी नीतिका विरोध किया जा सकता है परन्तु उन्हें देशद्रोही कदापि नहीं कहा जा सकता।

भारत में राष्ट्रीय सेना

सर स्टेफार्ड क्रिप्स, भारतके भूतपूर्व उप सचिव लार्ड लिस्टोवल और दक्षिण-पूर्वी एशिया के प्रधान सेनाध्यक्ष लार्ड लुइस माउन्ट बेटन आदि,—विश्वस्त सूत्र से ज्ञात हुआ है कि इन सैनिकों के उद्देश को स्वीकार कर चुके हैं; पर उन्होंने यह कहा है कि यदि कोई व्यक्ति सर्वसम्मत सभ्य जीवन के सिद्धान्तों के प्रतिकूल अत्याचार करे तो उसे दण्ड दिया जा सकता है। ब्रिटिश लेबर पार्टी के अध्यक्ष प्रो० एच० जे० लास्कीने—जो लण्डन विश्व विद्यालयमें राजनीति विज्ञान के अध्यापक भी हैं, कहा कि *लार्ड लुइस माउन्ट बेटन के इस मत से मैं सहमत हूं कि भारतीय राष्ट्रीय सेनासे सम्बन्धित व्यक्ति मुक्त कर दिये जायें। मुझे आशा है कि हम कोई ऐसा कार्य नहीं करेंगे जिससे युद्धोत्तर भारत के साथ हमारी उलझन और बढ़ जाय।*

देश और विदेश के महान व्यक्ति और कानून विशेषज्ञ जहां इस प्रकार की घोषणाएं कर रहे थे—वहां भारत सरकार कोर्ट मार्शल द्वारा इस सेना के नेताओं पर मुकदमा चलाने के लिये कटिबद्ध थी,—अतः आवश्यकता यह जान पड़ी कि भारतके इन वीर सुपूतों की रक्षा के लिये कुछ विशेष प्रयत्न किया जाय। १७ सितम्बर को पूना में यूनाइटेड प्रेसके प्रतिनिधिसे इसी प्रश्न पर बातचीत करते हुए पं०जवाहरलालजी ने कहा "*भारतके* बहु-

संख्यक नर-नारी स्वाधीन भारत सेनाके नेताओं, पुरुषों और स्त्रियों के जो इस समय भारत और विदेशों की जेलोंमें बन्द हैं, भाग्यके सम्बन्धमें चिन्तित है। यह स्मरण रखने योग्य है कि इस सेनामें केवल ब्रिटिश भारतीय सेनाके ही सैनिक सम्मिलित नहीं हैं;—अपितु बर्मा, मलाया और स्याममें स्थित भारतीय नागरिक भी भर्ती हुए हैं। इसके प्रति किसी प्रकारका दुर्व्यवहार असह्य होगा।" पं० नेहरू और राष्ट्रपति आज़ाद आदि के प्रयत्नों का यह परिणाम हुआ कि आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी ने इस सेना का प्रश्न अपने हाथ में लिया—और सितम्बर की २२-२३-२४ तारीखों में बम्बई में उसका जो अधिवेशन हुआ था, उसमें इस आशय का प्रस्ताव स्वीकृत हुआ :—

"अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने उद्वेग के साथ यह सुना है कि सन् १९४२ में मलाया और बर्मा में जो स्वाधीन भारत सेना बनी थी उसके बहुसंख्यक अधिकारी और नर-नारियोंके अतिरिक्त पश्चिमी मोर्चेके कुछ भारतीय सैनिक भी सरकारके निर्णय का प्रतीक्षा में भारत और विदेशों की जेलों में बन्द हैं। जिस समय यह सेना संगठित की गयी थी उस समय और उसके पश्चात् भारत, मलाया बर्मा और दूसरे स्थानों में जो अवस्था थी, उसपर और सेनाके घोषित उद्देशोंपर विचार कर इन अफसरों और

नर-नारियोंके साथ युद्धरत सैनिकों और युद्ध बंदियोंकी भांति व्यवहार करना और युद्धके अन्त में उन्हें छोड़ देना उचित था। अस्तु; और सुदूर व्यापी कारणों पर ध्यान देकर तथा युद्ध बंद हो गया है इस बात पर विचार कर आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी दृढ़ता के साथ यह मत घोषित करती है कि भारतकी स्वाधीनता के लिये (चाहे कैसे ही भ्रान्त पथसे क्यों न हो) यत्न करने के अपराध में यदि इन अफसरों और नर-नारियों को दण्ड दिया जायगा तो वह बड़ी शोचनीय घटना होगी। स्वाधीन और नवीन भारत निर्माण के महान् कार्य में उनसे वास्तविक सहायता प्राप्त हो सकती है। इस बीचमें वे बहुत अधिक कष्ट भोग चुके हैं। इसके ऊपर भी यदि उन्हें और दण्ड दिया जायगा तो न केवल वह अयुक्त होगा। अपितु असंख्य घरोंमें और सम्पूर्णरूप से भारतीयों के हृदयमें पीड़ा उत्पन्न होगी और इससे भारत और ब्रिटेन की खाई और भी चौड़ी हो जायगी। अत: अखिल भारतीय कांग्रेस पूर्णरूपसे विश्वास करती है कि इस सेनाके अफसरों और नर-नारियों को छोड़ दिया जायगा। आल इण्डिया कांग्रेस यह भी आशा करती है कि मलाया, बर्मा तथा अन्य स्थानों के जिन असामरिक नागरिकोंने भारतीय स्वाधीनता संघ में सहयोग दिया है उन्हें भी किसी प्रकार परेशान नहीं किया जायगा और न कोई दण्ड ही दिया जायगा। अखिल भारतीय कांग्रेस यह भी आशा करती है कि युद्ध सम्बन्धी किसी भी

सम्बन्ध में यदि किसी भारतीय सैनिक या भारतीय नागरिक को फांसी का दण्ड दिया गया होगा तो वह कार्यरूप में परिणत नहीं किया जायगा।"

पण्डित नेहरू ने उक्त प्रस्ताव उपस्थित करने के साथ ही यह भी घोषित किया कि कांग्रेस इस सेना के लिये एक रक्षा-समिति गठित कर रही है जिसके सदस्य हैं:—सर तेजबहादुर सप्रू, श्री भूलाभाई देसाई, डा० के० एन० काटजू, श्री जवाहरलाल नेहरू, श्री रघुनन्दन शरण और श्री आसफअली (संयोजक)। बम्बई में ही २४ सितम्बर को श्री भूलाभाई देसाई के निवास स्थानपर उक्त रक्षा समिति की प्रारम्भिक बैठक हुई जिसमें रक्षा व्यवस्था पर विचार किया गया। २७ सितम्बर को नयी दिल्ली से एक वक्तव्य प्रकाशित कर श्री आसफअली (संयोजक) ने बतलाया कि भारत सरकार के हाथों में आज़ाद हिन्द सेना के लगभग ३०००० (तीस सहस्र) सैनिक हैं। श्री शरचन्द्र बसु के सुपुत्र श्री अमियनाथ बोस का कथन है कि राष्ट्रीय सेना की संख्या प्रायः १॥ लाख है जिसमें भारत केवल २० (बीस) ही सहस्र लाये गये हैं। भारत सरकार ने २० नवम्बर को एक विज्ञप्ति द्वारा इस सेना की संख्या १॥ लाख नहीं लगभग ४३ हजार बतलाई है किन्तु आज़ाद हिन्द सेना से सम्बन्धित व्यक्ति इसे ४० हजार कहते हैं। इस प्रकार आज़ाद हिन्द सेना के अधिकारियों और नर-नारियों के बचावके लिये कांग्रेस

ने जो प्रचण्ड आन्दोलन प्रारम्भ किया,—हम पहले ही कह आये हैं देशकी सामान्य जनता पर उसका प्रचण्ड प्रभाव पड़ा, और अखिल भारतीय हिन्दू महासभा, अकाली पार्टी तथा मुस्लिम लीग जैसी संस्थाओं ने भी अपने ढङ्ग पर उक्त आन्दोलन का समर्थन प्रारम्भ किया। लीग और शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटीने भी रक्षा समितियाँ स्थापित कीं; पर लोगोंको यह देखकर विस्मित होना पड़ा कि आजाद हिन्द सेनाके अधिकाश अफसरों ने साम्प्रदायिक आधार पर अपना बचाव कराना स्वीकार नहीं किया।

फौजी अदालत का गठन

इधर भारत सरकार ने कोर्ट मार्शल निर्माण कर उसके सदस्यों की नामावली घोषित कर दी। कोर्ट मार्शल (फौजी अदालत या सैनिक न्यायालय) के सदस्यों के नाम ये हैं:— प्रेसिडेन्ट मेजर जनरल ए० बी० बाक्सलैंड सी० बी० ओ० बी० ई० (सदस्य) ब्रिगेडियर, ए० जे० एच० बोरक, लेफ्टिनेन्ट कर्नल सी० आर० स्काट, लेफ्टिनेन्ट टी० आई० स्टीवेन्सन सी० आई० ई० एम० बी० ई० एम० सी०, लेफ्टिनेन्ट कर्नल नासिर अली खा, मेजर बी० प्रीतम सिंह आई० ए० सी० और मेजर बनवारीलाल।

कोर्ट मार्शल का निर्माण कैसे होता है? अभियुक्तों के अधिकार क्या हैं और अदालत मृत्युका दण्ड कब दे सकती है; इन सब पर संक्षेप में यहाँ प्रकाश डाला जाता है। यह सब

स्तातव्य विवरण भारतीय फौजी क़ानून से लिया गया है। क़ानून के अनुसार अदालत मौत की सजा तब तक नहीं दे सकती, जब तक कि अदालत के दो तिहाई सदस्य उसके पक्ष में न हों। अदालत के ७ सदस्यों में से ३ सदस्य यदि मौत की सजा के विपक्ष में हों तो अभियुक्त को यह सजा न दी जा सकेगी। भारतके फौजी क़ानून की दफा ५४ के मातहत भारत के प्रधान सेनापति के वारण्ट द्वारा अधिकृत एक अफसर फौजी अदालत का आयोजन करता है।

कम से कम ५ सदस्य—(फौजी कानून दफ़ा ५७) फौजी अदालत में कम-से-कम ५ ब्रिटिश व भारतीय कमीशनशुदा अफसर होने चाहिये। प्रत्येक अफसर ३ या उससे अधिक वर्षों तक कमीशनशुदा नौकरी कर चुका हो। (फौजी क़ानून रूल २६) कुछ परिस्थितियों में किसी अफसरको फौजी अदालतका अध्यक्ष भी नहीं बनाया जा सकता। उदाहरणार्थ जो मामला अदालत में पेश होना हो, उसकी जांच के लिये नियुक्त कोर्ट में यदि कोई अफसर सदस्य हो तो वह अदालत का अध्यक्ष नहीं हो सकता।

अभियुक्तों को आपत्ति का हक़—(फौजी क़ानून रूल २३ जी०) अभियुक्त को पहिले से ही यह जानने का अधिकार है कि फौजी अदालत में कौन-कौन से अफसर होंगे।

शपथ लेने से पूर्व अभियुक्त अदालत के एक अथवा एक से अधिक सदस्यों के सम्बन्ध में आपत्ति उठा सकता है। फौजी क़ानून के रूल ३४ के अनुसार व्यक्तिगत शत्रुता व पक्षपात के आधार पर अदालत के किसी भी अफसर के ख़िलाफ आपत्ति की जा सकती है। यदि कोई अफसर अदालत के सामने पेश होने वाले मामले के सम्बन्धमें अपनी राय प्रकट कर चुका हो अथवा अपनी राय बता चुका हो तो उसके सम्बन्धमें भी आपत्ति की जा सकती है। इन आपत्तियोंका निर्णय गुणोंके आधार पर किया जाता है। किन्तु फौजी अदालतों का आम रिवाज़ यह है कि यदि कोई आरोप स्पष्टतया निराधार न हो तो जिस अफसर के विरुद्ध आपत्ति की गयी हो उसे स्वयं अलग होने की प्रार्थना करनी चाहिये और उसकी यह प्रार्थना मंजूर कर ली जानी चाहिये।

प्रधान कौन ?—(फौजी क़ानून दफा ७७ रूल ३५) आपत्तियों का निर्णय करने के बाद स्थापित अदालत का सर्वोच्च सदस्य अदालत का प्रधान होता है। उसके बाद वे अदालत के शेष सदस्य और जज-एडवोकेट शपथ लेते हैं।

जज-एडवोकेट—(फौजी क़ानून रूल १०१) जज एडवोकेट का मुख्य काम मुकदमे के समय पैदा होने वाले क़ानूनी व प्रक्रिया सम्बन्धी मामलों पर अदालत को सलाह देना है; मुक़-

'ज्ञातव्य विवरण भारतीय फौजी कानून से लिया गया है। कानून के अनुसार अदालत मौत की सजा तब तक नहीं दे सकती, जब तक कि अदालत के दो तिहाई सदस्य उसके पक्ष में न हों। अदालत के ७ सदस्यों में से ३ सदस्य यदि मौत की सजा के विपक्ष में हों तो अभियुक्त को यह सजा न दी जा सकेगी। भारतके फौजी क़ानून की दफ़ा ५४ के मातहत भारत के प्रधान सेनापति के वारण्ट द्वारा अधिकृत एक अफसर फौजी अदालत का आयोजन करता है।

कम से कम ५ सदस्य—(फौजी कानून दफ़ा ५७) फौजी अदालत में कम-से-कम ५ ब्रिटिश व भारतीय कमीशनशुदा अफसर होने चाहिये। प्रत्येक अफसर ३ या उससे अधिक वर्षों तक कमीशनशुदा नौकरी कर चुका हो। (फौजी क़ानून रूल २६) कुछ परिस्थितियों में किसी अफसरको फौजी अदालतका अध्यक्ष भी नहीं बनाया जा सकता। उदाहरणार्थ जो मामला अदालत में पेश होना हो, उसकी जांच के लिये नियुक्त कोर्ट में यदि कोई अफसर सदस्य हो तो वह अदालत का अध्यक्ष नहीं हो सकता।

अभियुक्तों को आपत्ति का हक़—(फौजी क़ानून रूल २३ जी०) अभियुक्त को पहिले से ही यह जानने का अधिकार है कि फौजी अदालत में कौन-कौन से अफसर होंगे। अदालत द्वारा

शपथ लेने से पूर्व अभियुक्त अदालत के एक अथवा एक से अधिक सदस्यों के सम्बन्ध मे आपत्ति उठा सकता है। फौजी क़ानून के रूल ३४ के अनुसार व्यक्तिगत शत्रुता व पक्षपात के आधार पर अदालत के किसी भी अफसर के ख़िलाफ आपत्ति की जा सकती है। यदि कोई अफसर अदालत के सामने पेश होने वाले मामले के सम्बन्धमे अपनी राय प्रकट कर चुका हो अथवा अपनी राय बता चुका हो तो उसके सम्बन्धमे भी आपत्ति की जा सकती है। इन आपत्तियोंका निर्णय गुणोके आधार पर किया जाता है। किन्तु फौजी अदालतो का आम रिवाज यह है कि यदि कोई आरोप स्पष्टतया निराधार न हो तो जिस अफसर के विरुद्ध आपत्ति की गयी हो उसे स्वयं अलग होने की प्रार्थना करनी चाहिये और उसकी यह प्रार्थना मंजूर कर ली जानी चाहिये।

प्रधान कौन ?—(फौजी क़ानून दफा ५७ रूल ३५) आपत्तियों का निर्णय करने के बाद स्थापित अदालत का सर्वोच सदस्य अदालत का प्रधान होता है। उसके बाद वे अदालत के शेष सदस्य और जज-एडवोकेट शपथ लेते हैं।

जज-एडवोकेट—(फौजी क़ानून रूल १०१) जज एडवोकेट का मुख्य काम मुकदमे के समय पैदा होने वाले क़ानूनी व प्रक्रिया सम्बन्धी मामलों पर अदालत को सलाह देना है; मुक़-

ज्ञातव्य विवरण भारतीय फौजी क़ानून से लिया गया है। क़ानून के अनुसार अदालत मौत की सजा तब तक नहीं दे सकती, जब तक कि अदालत के दो तिहाई सदस्य उसके पक्ष में न हों। अदालत के ७ सदस्यों में से ३ सदस्य यदि मौत की सजा के विपक्ष में हों तो अभियुक्त को यह सजा न दी जा सकेगी। भारतके फौजी क़ानून की दफ़ा ५४ के मातहत भारत के प्रधान सेनापति के वारण्ट द्वारा अधिकृत एक अफसर फौजी अदालत का आयोजन करता है।

कम से कम ५ सदस्य—(फौजी कानून दफ़ा ५७) फौजी अदालत में कम-से-कम ५ ब्रिटिश व भारतीय कमीशनशुदा अफसर होने चाहिये। प्रत्येक अफसर ३ या उससे अधिक वर्षों तक कमीशनशुदा नौकरी कर चुका हो। (फौजी क़ानून रूल २६) कुछ परिस्थितियों में किसी अफसरको फौजी अदालतका अध्यक्ष भी नहीं बनाया जा सकता। उदाहरणार्थ जो मामला अदालत में पेश होना हो, उसकी जांच के लिये नियुक्त कोर्ट में यदि कोई अफसर सदस्य हो तो वह अदालत का अध्यक्ष नहीं हो सकता।

अभियुक्तों को आपत्ति का हक़—(फौजी क़ानून रूल २३ जी०) अभियुक्त को पहिले से ही यह जानने का अधिकार है कि फौजी अदालत में कौन-कौन से अफसर होंगे। अदालत द्वारा

शपथ लेने से पूर्व अभियुक्त अदालत के एक अथवा एक से अधिक सदस्यों के सम्बन्ध में आपत्ति उठा सकता है। फौजी क़ानून के रूल ३४ के अनुसार व्यक्तिगत शत्रुता व पक्षपात के आधार पर अदालत के किसी भी अफसर के ख़िलाफ आपत्ति की जा सकती है। यदि कोई अफसर अदालत के सामने पेश होने वाले मामले के सम्बन्धमें अपनी राय प्रकट कर चुका हो अथवा अपनी राय वता चुका हो तो उसके सम्बन्धमें भी आपत्ति की जा सकती है। इन आपत्तियोंका निर्णय गुणोंके आधार पर किया जाता है। किन्तु फौजी अदालतों का आम रिवाज़ यह है कि यदि कोई आरोप स्पष्टतया निराधार न हो तो जिस अफसर के विरुद्ध आपत्ति की गयी हो उसे स्वयं अलग होने की प्रार्थना करनी चाहिये और उसकी यह प्रार्थना मंजूर कर ली जानी चाहिये।

प्रधान कौन ?—(फौजी क़ानून दफ़ा ७७ रूल ३५) आपत्तियों का निर्णय करने के बाद स्थापित अदालत का सर्वोच्च सदस्य अदालत का प्रधान होता है। उसके बाद वे अदालत के शेष सदस्य और जज-एडवोकेट शपथ लेते हैं।

जज-एडवोकेट—(फौजी क़ानून रूल ६०१) जज एडवोकेट का मुख्य काम मुकदमे के समय पैदा होने वाले क़ानूनी व प्रक्रिया सम्बन्धी मामलों पर अदालत को सलाह देना है; मुक़-

दमे की समाप्ति पर शहादत को संक्षेप में पेश करना तथा क़ानून की दृष्टि से मामले के सम्बन्धमें अपनी सम्मति प्रकट करना है। जज-एडवोकेट को एकदम निष्पक्ष होना चाहिये। इसकी स्थिति जूरी के सामने पेश मामले में जज के समान होती है। हाँ, इतना फर्क़ ज़रूर होता है कि जज-एडवोकेट सिर्फ़ क़ानूनी बातों पर अपनी सलाह दे सकता है, अन्तिम निर्णय नहीं।

अभियोक्ता अफसर—(फौजी क़ानून, रूल ३३, रूल ७२ (बी) रूल ८१) फौजी अदालतके संयोजक जिस फौजी अफसर को अभियोक्ता नियुक्त कर दें; वही इस्तगासे की कार्यवाही पेश करता है। अभियुक्त की प्रार्थना पर संयोजक एक और फौजी अफसर को प्रतिवादी अफसर नियुक्त कर सकता है। अभियोक्ता अथवा प्रतिवादी अफसर का वकील आदि होना आवश्यक नहीं। लेकिन यदि अभियोक्ता वकील हो तो प्रतिवादी अफसर भी वकील होना चाहिये।

वकील—(फौजी क़ानून रूल ८२) इस्तगासे व अभियुक्तों दोनों की ओर से वकील भी रखे जा सकते हैं।

अदालत के नियम—(फौजी क़ानून रूल ५०) फौजी अदालत की प्रक्रिया और शहादतके नियम वही होते हैं, जो समूचे विश्व की ब्रिटिश अदालतोंमें प्रचलित हैं। अभियोक्ता को इस्तगासे के गवाहों से जिरह करने का पूर्ण अधिकार है।

उसे अपनी सफाई के लिये गवाह पेश करने का भी हक़ होगा। जब तक अभियोक्ता का दोष साबित नहीं हो जाता तब तक उसे निर्दोष समझा जायगा। उसके दोषी होने अथवा न होने का निर्णय शहादतों के आधार पर होगा।

अभियुक्त शपथ नहीं लेता—भारत की अदालतों में प्रचलित नियमों के अनुसार फौजी अदालत में भी एक अभियुक्त शपथ ग्रहण पूर्वक गवाही नहीं दे सकता। अतएव उससे जिरह भी नहीं की जा सकती। लेकिन अपनी सफाई के लिये उसे लिखित अथवा मौखिक बयान देने का पूर्ण अधिकार है। इस्तगासे व सफाई पक्ष दोनों की शहादतें समाप्त होने के बाद दोनों पक्षों की ओर से अन्तिम भाषण होते हैं। अभियुक्त की ओर से सबसे अन्त में भाषण होता है, बशर्ते कि उसने सचाइयों को साबित करने के लिये गवाह तलब न किये हों। इसके बाद जज एडवोकेट संक्षेप में अपना कथन पेश कर देते हैं।

नतीजों पर विचार—(फौजी कानून रूल ५२) इसके बाद अदालत की कार्यवाही समाप्त हो जाती है और अब तक के नतीजों पर विचार किया जाता है। नतीजा दर्ज कर लिया जाता है; घोषित नहीं, फिर चाहे वह नतीजा एक अथवा समस्त अभियोगों में निर्दोष होने के सम्बन्ध में ही क्यों न हो। इसके बाद अदालत फिर बैठती है और यदि नतीजा यह हो कि

अभियुक्त दोषी है तो अदालत अभियुक्त के अब तक के चाल-चलन के सम्बन्ध में शहादत लेती है। फिर अभियुक्त अथवा उसके वकील अदालत में अपील कर सकते हैं कि सज़ा कम कर दी जाय।

सज़ा—अन्त में अदालत के बन्द कमरे में सज़ा सुना दी जाती है।

अदालत में मत—(फौजी कानून रूल ७३) अदालत में मत मौखिक लिये जाते हैं। सबसे छोटा सदस्य सबसे पहिले और बड़ा सदस्य सबसे अन्त में मत देता है।

अन्तिम निर्णय बहुमत से—नतीजे व सज़ा के सम्बन्ध में अदालत के निर्णय बहुमत से होंगे। यदि मत समान—समान हों तो इसका लाभ अभियुक्त को होता है।

मौत की सज़ा—तब तक नहीं दी जा सकती, जब तक कि अदालत के दो तिहाई सदस्य उसके पक्ष में न हों। इसका अभिप्राय यह है कि यदि किसी फौजी अदालत में सात सदस्य हैं तो कम से कम पाँच सदस्यों के मत मौत की सज़ा के पक्ष में आने चाहिये। इस तरह अल्पसंख्यक तीन सदस्य ४ बहुसंख्यक सदस्यों के निर्णय को रद्द कर सकते हैं।

क्षमा की सिफ़ारिश—(फौजी क़ानून रूल ५५) अभियुक्त पर फर्द जुर्म लगाने वाला अथवा सज़ा देने वाली अदालत

क्षमा करने की सिफ़ारिश पर विचार कर सकती है। क्षमा करने को सिफ़ारिश करने अथवा न करने के सम्बन्ध में अदालत के सदस्यों के जितने वोट हों उन्हें कार्यवाही में दर्ज किया जायगा।

सजा की पुष्टि—अदालतका निर्णय अथवा उसके द्वारा दी गयी सज़ा तब तक कानूनी नहीं होगी, जब तक कि उसकी पुष्टि नहीं हो जाती। अदालत के संयोजक अफसर को पुष्टि करने का अधिकार होता है लेकिन भारत के प्रधान सेनापति जैसे उच्च अफसर पर पुष्टि करने का मामला छोड़ा जा सकता है। पुष्टि की सूचना अभियुक्त को दे दी जाती है। यदि उस पर फर्द जुर्म लगा दिया जाय तो उसे अपनी दरख्वास्त आगे पेश करने का पूरा अधिकार है।

भारत सरकार को दरख्वास्त—यदि अभियुक्त कमीशन-शुदा अफसर होगा तो उसे अपनी दरख्वास्त भारत सरकार अर्थात् वायसराय के पास भेजनी होगी। उन्हें ही दी गयी सज़ा को कम करने, बदलने अथवा अभियुक्त को क्षमा करने का अधिकार है।

आज़ाद सेना कैसे बनी ?

आठ दिसम्बर १९४१ दक्षिण पूर्व एशिया के इतिहास में विशेष महत्व रखता है। इसी दिन जापान ने पर्लहारबर, मलाया और डच ईस्ट इण्डीज़ पर एक साथ आक्रमण कर दिया था। जापानके इस आक्रमण को रोकने की चर्चा बहुत दिनों से चल रही थी। अमरीका, ब्रिटेन, चीन और डच सरकारों ने सम्मिलित रूप से ए. बी. सी. डी. मोर्चे का निर्माण किया था। इस मोर्चे के प्रधान सेनापति सर राबर्ट ब्रूक पोफम थे जिन्होंने बारम्बार विश्वको यह विश्वास दिलाया था कि उनका मोर्चा अभेद्य है। यदि जापानी भूल कर भी आक्रमण करेंगे तो एक ही दो सप्ताह में उनके दांत खट्टे कर दिये जायगे। किन्तु विश्व को यह देख कर चकित रह जाना पड़ा कि जापानी आक्रमणकारियों के सम्मुख यह मोर्चा कुछ भी

नेताजी सिगापर में सहयोगियों का परामर्श दे रह है।

पूर्व एशिया के भारतीयों को संगठित होने के लिये मेजर फुजीवारा की अपील

चमत्कार न दिखा सका और आक्रमण के प्राय: २ मास बाद ही अर्थात् १९४२ की १५ फरवरी को ब्रिटिश साम्राज्य का अजेय दुर्ग सिंगापुर जापानियों के हाथ आ गया। सिंगापुर पर आक्रमण के समय वहाँ १५००० ब्रिटिश, १३ हजार आस्ट्रेलियन और ३२ हजार भारतीय सेना थी। यह सब मलाया के ५० लाख निवासियों समेत जापानियों के अधिकार में आ गयी। मलाया में भारतीयों की संख्या लगभग ३ लाख थी। १७ फरवरी को जापानी सेना के प्रमुख केन्द्र से मेजर फुजीवारा ने सिंगापुर के प्रमुख भारतीयों को बुलाया। उन्होंने उपस्थित जनता को यह बतलाया कि इङ्गलैंड की सैनिक शक्ति को घातक प्रहार लग चुका है। भारतीयों के लिये अपने देश की स्वतंत्रता प्राप्त करने का यह सुनहरा अवसर है और जापान सब प्रकारसे उनकी सहायता के लिये प्रस्तुत हैं। उन्होंने फिर कहा—जापान, मलायाके भारतीयों को चाहे वे ब्रिटिश साम्राज्य के नागरिक हैं; फिर भी अपना मित्र मानता है, किन्तु शर्त यह है कि उन्हें ब्रिटिश नागरिकता का त्याग करना पड़ेगा। फुजीवारा ने सुझाया, यदि भारतीय अपने स्वाधीनता संघ स्थापित कर लें तो वे उसे सब प्रकार की सुविधा देने के लिये प्रस्तुत हैं। भारतीयों ने फुजीवारा की बातों पर पूरा विश्वास नहीं किया क्योंकि उन्हें अभी तक ब्रिटिशों के लौट आने का भय बना था। फिर भी इन लोगों ने फुजीवारा के सुझाव पर विचार कर उत्तर देने का

निश्चय किया और कहा कि मलाया के सेन्ट्रल इण्डियन एसोशियेशन के सभापति श्री एन० राघवन को परामर्श के लिये आमन्त्रित किया जाय। इसी बीच सिंगापुर के भारतीयों को टोकियो से श्री रासबिहारी बोस का निमन्त्रण मिला।

मार्च की २८ से ३० तारीख तक टोकियो में जापान, चीन मलाया और थाईलैंड के भारतीयों का सम्मेलन श्री० रास बिहारी बोस की अध्यक्षता में हुआ। इस कांफ्रेन्स में विमान द्वारा जाने वाले भारतीयों को दुर्घटना का शिकार होना पड़ा जिससें प्रसिद्ध स्वामी सत्यानन्दपुरी का देहावसान हो गया। आप स्वाधीनता आन्दोलन के अच्छे कर्मी थे। इस विमान दुर्घटना का जो समाचार रायटर ने उस समय भारत और विदेशों में भेजा था उसमें देश गौरव श्री सुभाषचन्द्र बोस के निधन की बात कही गयी थी। भारत में इस समाचार से सर्वत्र शोक छा गया था। महात्मा गांधी तथा पण्डित मालवीय ने शोक सहानभूति सूचक तार सुभाष बाबू की माता जी के नाम भेजे थे। वास्तव में यह समाचार मिथ्या था क्योंकि उस समय सुभाष बाबू जापान से बहुत दूर बर्लिन में बैठे हुए थे। बाद में रायटर ने भी इस समाचार का खण्डन किया था। टोकियो सम्मेलन में इण्डपेन्डेन्स लीग या भारतीय स्वतन्त्रता संघ के निर्माण का और उस का उद्देश भारत के लिये विदेशियों के प्रभुत्व, हस्तक्षेप तथा नियन्त्रण से रहित पूर्ण

स्वाधीनता निश्चित किया गया था। आज जिस आजाद हिन्द फौज या स्वतन्त्र भारत सेना का नाम देश विदेश सर्वत्र गूञ्ज रहा है उसके निर्माणका निश्चय भी इसी सम्मेलन में हुआ था। इस कांफ्रेन्स में यह भी निश्चय किया गया कि उसी वर्ष के जून में थाईलैंड की राजधानी बैंकाक में पूर्व एशिया के समस्त भारतीयों की जो प्राय: ३० लाख हैं; प्रतिनिधि सभा बुलायी जाय। इस निश्चय के अनुसार जून की १४ से २३ तारीख तक पूर्व एशिया के भारतीयों की सभा बैंकाक में हुई। इस कांफ्रेन्स में जावा, सुमात्रा, इन्दुचीन, बोर्नियो, मंचुको, हाङ्गकाङ्ग, बर्मा, मलाया और जापान से पूरे १०० प्रतिनिधि सम्मिलित हुए थे। कान्फ्रेन्स ने इण्डियन इण्डिपेन्डेन्स लीग या भारतीय स्वतन्त्रता संघ को सरकारी तौर पर स्वीकृत किया और भारतीय स्वाधीनता का साधन एकता, विश्वास और बलिदान माना गया जिसकी व्याख्या इस प्रकार की गयी :—

एकता—समस्त भारतीयों का एक संस्था के अन्तर्गत संगठन।

विश्वास—भारतीय स्वतन्त्रताकी तुरन्त प्राप्ति पर विश्वास।

बलिदान—स्वतन्त्रता के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये आत्म बलिदान।

इस कान्फ्रेन्स ने यह भी निर्णय किया कि भारत एक और अखण्ड है। अतएव हमारा प्रत्येक काम राष्ट्रीय स्वरूप का होना चाहिये। साम्प्रदायिक या धार्मिक आधार पर कोई भी कार्य हानिकर है। संघ का कार्यक्रम इण्डियन नेशनल कांग्रेस के नियमों के आधार पर रहेगा। भारत का भावी शासन विधान स्वतंत्र रूपसे चुने हुए भारतीय प्रतिनिधियों द्वारा बनाया जायगा। कॉन्फ्रेन्स ने संघ के अन्तर्गत आजाद हिन्द फौज के संगठन का निश्चय किया और मांग की कि स्वाधीन भारत की स्वाधीन राष्ट्रीय सेना को जापानी सेना की बराबरी का अधिकार और दर्जा दिया जाय। यह भी खुलासा किया गया कि इस फौज का उपयोग केवल भारत में रहने वाले विदेशियों के विरुद्ध और भारतीय राष्ट्रीय स्वाधीनता की प्राप्ति और रक्षा के लिये ही होगा। किसी भी दूसरे उद्देश से इसका प्रयोग नहीं किया जायगा। संघ की युद्ध परिषद् मे ५ व्यक्ति थे जिनमे दो आजाद हिन्द फौज के प्रतिनिधि थे। श्री रासबिहारी बोस सर्व प्रथम सभापति और श्री एन० राघवन, के० पी० के० मेनन, कैप्टन मोहन सिंह और कर्नल जी० के० गिलानी सदस्य चुने गये। कॉन्फ्रेन्स ने जापान सरकार से यह मांग की कि वह भारत की पूर्ण स्वाधीनता स्वीकार करे और उसपर विदेशियों का राजनैतिक, सैनिक और आर्थिक प्रभाव, नियन्त्रण और हस्तक्षेप न रहे। सम्मेलन ने भारतीय कांग्रेस के तिरंगे झण्डेको अपना झण्डा स्वीकार किया

और अनुरोध किया कि श्री सुभाषचन्द्र बोस को पूर्व एशियामें आने और नेतृत्व करने की सुविधायें दी जायं।

इस सम्मेलन के बाद जहाँ संघ के सदस्यो की संख्या केवल मलाया मे १ लाख २० हजार हो गयी,—वहाँ संघ की युद्ध परिषद् ने ५६ हजार युद्ध कैदियो मे ५० हजार कैदी आजाद फौज मे भरती किये। इसी बीच जापान के हिकारी किकन जो जापानी सेना का औरों से सम्बन्ध जोड़ने का विभाग है; और स्वाधीनता संघके बीच खटपट पैदा हो गयी क्योंकि किकन भारतीय आन्दोलन का उपयोग जापान के लाभ के लिये करना चाहता था। यह संघर्ष यहाँ तक बढ़ा कि कर्नलगिलानी और कैप्टन मोहन सिंह ब्रिटिशो के गुप्तचर होने के सन्देह मे पकड लिये गये। इसका भारतीयों पर बहुत बुरा प्रभाव पडा और जापानियों का जो जहाज आजाद हिन्द फौज को बर्मा ले जाने के लिये सिंगापुर आया था उसे खाली लौटना पडा। यदि जापानियो की वह चेष्टा सफल हो गयी होती तो १६४२ के दिसम्बर मे ही चटगाव और बङ्गाल के दूसरे नगरों पर आक्रमण प्रारम्भ हो गया होता। १६४२ के दिसम्बर मे जो कलकत्ते पर विमान आक्रमण हुआ था उससे स्पष्ट हो जाता है कि जापानी उसी समय बङ्गाल पर आक्रमण के लिये तुले हुए थे। परन्तु जहाज को खाली लौटा कर भारतीय संघने उनके प्रयत्नको विफल

बना दिया। इसी बीच रासविहारी घोस टोकियो में जनरल तोजो से मिले। जिसका परिणाम यह हुआ कि जापानी सेना और स्वाधीनता संघ का सम्बन्ध पहले की तरह सुधर गया। इसी समय; सिंगापुर में यह समाचार फैला कि शीघ्र ही सुभाष बाबू यूरप से इस आन्दोलन का नेतृत्व करने आ रहे हैं। संघ की ओर से थाइलैंड की राजधानी बैंकाक में "आजाद हिन्द" रेडियो की स्थापना की गयी। स्वाधीनता संघ और आजाद हिन्द फौज की गतिविधि पर इस रेडियो स्टेशन से महत्व पूर्ण ब्राडकास्ट हुआ करता था। इस प्रकार ईस्ट एशिया के भारतीयों में जब एक नयी उमङ्ग और एक नयी लहर फैली हुई थी उसी समय अर्थात् १९४३ की २० जून को श्री सुभाष बोस टोकियो पहुँच गये। उनके साथ मिस्टर हसन नामक मुसलिम नवयुवक भी था। टोकियो में श्री सुभाष बाबू का प्रचण्ड स्वागत हुआ। श्री सुभाष बाबू ने प्रेस को दिये गये एक वक्तव्य में कहा—"गत महायुद्धमें ब्रिटिशों ने भारतीयों को धोखा दिया था। उसी समय देश वासियों ने निश्चय किया था कि फिर कभी इस प्रकार के धोखे में नहीं पड़ेंगे। गत २० वर्षों से जिस अवसर की हम लोग प्रतीक्षा में थे वह आ गया है। यह समय भारतीय स्वतन्त्रताका समय है। हम जानते हैं कि भारतको ऐसा सुयोग आगामी १०० वर्षों में नहीं मिलेगा। अतएव हमें अपना सब कुछ देकर भारतके लिये स्वतन्त्रता प्राप्त करना है और अपनी

शक्ति से ही उसे सुरक्षित रखना है। शत्रु की तलवारका जवाब हमें तलवार से ही देना है और यह तभी सम्भव है जब भारतीय जनता का हृदय त्यागसे प्रज्वलित होगा। अतः हम लोगों को अपनी सम्पूर्ण शक्ति और उत्साह से भारतके भीतर और बाहर भी भारतीय स्वाधीनता का युद्ध जारी रखना चाहिये। हमें ब्रिटिश साम्राज्यवाद के ध्वंस होने तक यह संग्राम चलाना है और इस साम्राज्यवाद के विध्वंस पर ही भारत एक स्वतन्त्र राष्ट्र के रूप में प्रकट होगा। इस संग्राम में न पीछे लौटने की कोई जगह है और न ढिलाई करने की। हमें तब तक आगे और आगे बढ़ते रहना है जब तक विजय प्राप्त न हो जाय और स्वतन्त्रता जीत न ली जाय।"

१९४३ की २ जुलाई को श्री सुभाष बाबू सिंगापुर पधारे। उनका यहां पर जबर्दस्त स्वागत किया गया। मानव सागर की तरंगें चारों ओर लहरा रही थीं जिनमें मलाया निवासी भारतीय, चीनी और जापानी नर-नारी बालक और वृद्ध भारी संख्या में उपस्थित थे। उनके स्वागत के लिये जो सभा हुई थी; उसमें फूल-मालाओं से सुसज्जित महात्मा गांधी जी का बहुत बड़ा चित्र रखा हुआ था। चारों ओर तिरंगे झण्डे फहरा रहे थे। सुभाष बाबू ने यह खुलासा कर दिया कि हम केवल ब्रिटिश साम्राज्यवाद के ही विरुद्ध नहीं लड़ रहे हैं; अपितु हमें जापानी साम्राज्यवाद और स्वदेशी पञ्चम कालम वालों से भी सावधान

रहना है। ३ जुलाईको सुभाष बाबू ने आजाद हिन्द फौज के नेताओं और स्वाधीन भारत संघ के कर्मियों से जो हांगकांग, वर्मा और बोरनियो से आये थे, परामर्श किया। इसके बाद एक दिन विराट सम्मेलन हुआ जिसमें श्री सुभाष बाबू ने भारत की प्राथमिक स्वाधीन सरकार स्थापित करने की घोषणा की। इसका पूरा विवरण आगे के पृष्ठों में दिया गया है। इसी बीच सिंगापुर टाउन हाल के सामने आजाद हिन्द फौज का प्रदर्शन हुआ था। एक प्रत्यक्ष दर्शी का कहना है कि जो उत्साह और प्रसन्नता उस समय वहाँ के भारतीयों में दिखाई पड़ रही थी वह अपूर्व थी। नेता जी (सुभाष बाबू) के आगमन का यह प्रभाव हुआ कि भारतीय क्षुद्र ईर्षा-द्वेष और आपसी लागडांट को छोड़कर एक हो गये। यहीं पर भाषण देते हुए नेता जी ने **दिल्ली चलो** का नारा लगाया था। फिर उन्होंने कहा था—भारत सब प्रकार से स्वाधीनता के लिये प्रस्तुत है किन्तु उसके पास हथियार बन्द सेना की कमी है। जार्ज वाशिङ्गटन अमरीका की स्वाधीनता के लिये लड़े और विजयी हुवे, क्योंकि उनके पास सशस्त्र सेना थी। गेरीबाल्डी इटालीको स्वाधीन बना सके क्योंकि उनके पास सशस्त्र स्वयं सेवकों का दल था। आज इण्डियन नेशनल आर्मी या आज़ाद हिन्द फौज में सम्मिलित होकर आपको वैसा ही अपूर्व अवसर मिल रहा है। आपको प्रत्येक अवस्थामें राष्ट्रके लिये सब-

सिंगापुर टाउन हाल के सम्मुख आज़ाद हिन्द फौज की विराट् रेली
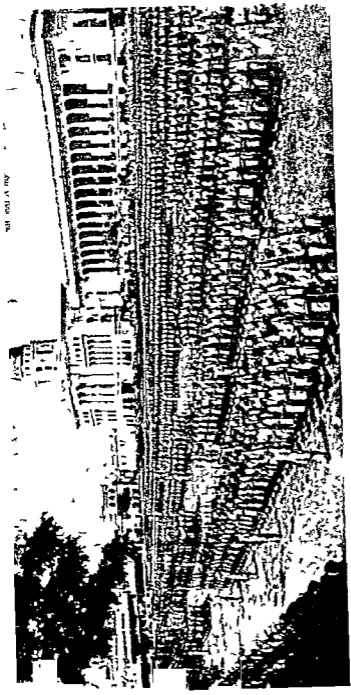
जापान के प्रीमियर और युद्ध मन्त्री जनरल तोजो
नेताजी के साथ आज़ाद हिन्द फौज
की सलामी ले रहे हैं।

प्रकार के बलिदान के हेतु प्रस्तुत रहना चाहिये। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि अन्धेरे और उजाले, शोक और आनन्द कष्ट सहन और विजय सभी अवस्थाओंमें मैं आपके साथ रहूंगा। मैं आपको भूख-प्यास, मुसीबत और मृत्यु के सिवा और कोई वस्तु नहीं दे सकता। हमें इस बात की चिन्ता नहीं कि स्वाधीन भारत को देखने के लिये हममें से कौन जीवित रहेगा। हमारे लिये तो यही बहुत है कि भारत स्वाधीन होगा और हम अपना सर्वस्व उसे स्वाधीन बनाने में बलिदान कर देंगे। इसके

जापान के प्रीमियर और युद्ध मन्त्री जनरल तोजो
नेताजी के साथ आज़ाद हिन्द फौज
की सलामी ले रहे हैं।

प्रकार के बलिदान के हेतु प्रस्तुत रहना चाहिये। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि अन्धेरे और उजाले, शोक और आनन्द कष्ट सहन और विजय सभी अवस्थाओंमें मैं आपके साथ रहूंगा। मैं आपको भूख-प्यास, मुसीबत और मृत्यु के सिवा और कोई वस्तु नहीं दे सकता। हमें इस बात की चिन्ता नहीं कि स्वाधीन भारत को देखने के लिये हममें से कौन जीवित रहेगा। हमारे लिये तो यही बहुत है कि भारत स्वाधीन होगा और हम अपना सर्वस्व उसे स्वाधीन बनाने में बलिदान कर देंगे। इसके

एक विराट सभाका आयोजन किया गया। सभाके २ घण्टे पहले ही हाल ठसाठस भर गया था और इसमें सम्मिलित होने के लिये १०-१० और १२-१२ मील चलकर स्त्रियां आई थीं। नेता जीने झाँसी की रानी रेजीमेण्ट और रेडक्राम यूनिट के लिये शस्त्रास्त्रों की मांग की। इस सभा में एक गुजराती महिला ने अपने सब जवाहरात, अँगूठियां, हार और चूड़ियां दे दी थीं जिन्हें बाद को स्त्रियोंके कार्य के लिये स्वाधीन भारत संघ के महिला विभागको समर्पित कर दिया गया। नेताजी ने बताया कि महात्मा गान्धी ने सन् १९२१ से जो आन्दोलन देश की स्वाधीनता के लिये चलाये हैं उन सब में हमारी महिलाओं ने महत्वपूर्ण भाग लिया है। उन्होंने न केवल जलूस निकालने और पिकेटिंग करने में महत्वपूर्ण कार्य्य किया है बल्कि ब्रिटिश पुलिस के अमानुषी लाठी प्रहार सहने और जेल जाने में भी वे पीछे नहीं रहीं। स्वाधीनता के लिये गुप्त रूप से जो क्रान्तिकारी आन्दोलन भारत मे चलाये गये उनमे भी हमारी बहनों ने पूर्ण सहयोग दिया। इतिहास से भी यही सिद्ध है। सन् १८५७ मे भारतकी स्वतन्त्रता का जो प्रथम युद्ध हुआ था; उसमे झाँसी की वीर रानी ने क्या नहीं किया? यही वह रानी थी जिसने नङ्गी तलवार लेकर और घोड़े पर बैठ कर अपनी फौज का नेतृत्व किया था। हमारे दुर्भाग्यसे वह युद्धमें काम आई। वे विफल हो गई अर्थात् भारत विफल हो

गया परन्तु १८५७ में इस महान रानीने जो कार्य प्रारम्भ किया था हमें उसे जारी रखना और पूरा करना है। इसलिये स्वाधीनताके इस अन्तिम संग्राम में हम एक नहीं हजारों लाखों झांसी की रानियां चाहते हैं। आप कितनी बन्दूकें उठायेंगी और कितनी गोलियां छोड़ेंगी यह बात उतनी बड़ी नहीं है। सबसे मुख्य बात तो यह है कि आपके वीरता पूर्ण कार्य्यों का नैतिक प्रभाव है। इन्स-पेक्टरों की शिक्षा के लिये सिंगापुर और पेनाङ्ग में दो आजाद स्कूल खोले गये जहां नारियों को ट्रेनिङ्ग दी जाती थी। डाक्टर कुमारी लक्ष्मी स्वामी नाथन झांसी की रानी रेजीमेण्टकी अध्यक्षा बनाई गईं। इस रेजीमेन्ट की नारियां लम्बा पाजामा, खाकी कमीज, टोपी और रबड़ के जूते पहनती थीं।

नेताजी के पास सम्पूर्ण मलाया से भर्ती होने के लिये आवे-दन आ रहे थे। उन्होंने यह नियम बना दिया था कि सेनामें अपनी इच्छा से ही लोग भरती किये जायं। उनपर किसी प्रकार का दबाव न डाला जाय। सुदूर स्थानोंसे धन और वस्तुओंके रूपमें नेताजी के पास उपहार आ रहे थे। १५ अगस्तको सिङ्गापुर के फरेर पार्क में उनका भाषण सुनने के लिये जो सभा हुई थी उसमें ३० हजार से भी अधिक व्यक्ति उपस्थित हुये थे। जिसमें बड़ी संख्यामें मुसलमानों की थी यहीं पर उन्होंने यह घोषित किया था कि फौज का बड़ा हिस्सा यहां से बर्मा भेजा जायगा और वहां से भारत।

यहाँ पर नेताजी ने फौजका नेतृत्व स्वीकार किया। और इस प्रकार का आदेश जारी करते हुये कहा—"मेरे लिये यह अवसर आनन्द और अभिमान का है। किसी भी भारतवासी के लिये भारत को स्वाधीन बनाने वाली सेना का सेनापति होने की अपेक्षा कोई दूसरा बड़ा मान नहीं हो सकता। मैं अपने को अपने ३८ करोड़ देशवासियोंका सेवक मानता हूं। मैं निश्चय कर चुका हूं कि अपने कर्त्तव्य को इस प्रकार पूरा करूंगा कि जिससे ३८ करोड़ भारतीयोंके स्वार्थ सुरक्षित रहें और प्रत्येक भारतवासी मुझ पर पूरा विश्वास रख सके। शुद्ध राष्ट्रीयता और न्याय के आधार पर ही भारतको स्वाधीन बनाने वाली सेना का निर्माण हो सकता है। आज़ाद हिन्द फौज को आगामी युद्ध में बड़ा काम करना है। जब हम खड़े होंगे, आज़ाद हिन्द फौज पहाड़ी चट्टान की तरह खड़ी होगी। और जब हम कूच करेंगे तब आज़ाद हिन्द फौज स्टीम रोलर की तरह कूच करती होगी। हमारा कार्य्य सरल नहीं है। युद्ध लम्बा और कठोर होगा। परन्तु अपने लक्ष्यकी महत्ता पर हमें अखण्ड विश्वास है। ३८ करोड़ मनुष्यों को जो समूची मानव जाति का पंचमांश है स्वाधीन होने का अधिकार है और वे अब स्वाधीनता का मूल्य चुकाने के लिये प्रस्तुत हैं। इसलिये संसारमें अब कोई ऐसी शक्ति नहीं है जो हमको हमारे जन्म सिद्ध अधिकार स्वाधीनतासे वंचित रख सके। साथियो, अब हमारा कार्य्य

प्रारम्भ हो चुका है । दिल्ली चलो के नारेके साथ आओ हमलोग तब तक युद्ध जारी रक्खें जब तक नयी दिल्ली के वायसराय भवन पर हमारा राष्ट्रीय झंडा फहराने न लगे और आजाद हिन्द फौज भारतकी राजधानी दिल्लीके पुराने लाल किलेके अन्दर अपनी विजय की परेट न कर सकें। आजाद हिन्द फौज मे भरती होने वाले सदस्य को निम्न प्रतिज्ञा-पत्र पर हस्ताक्षर करना पड़ता था :—

"मैं स्वेच्छासे आजाद हिन्द फौज मे अपना नाम लिखवा रहा हूं। मैं हृदय से अपने आपको भारत की भेंट करता हूं और प्रतिज्ञा करता हूं कि मैं अपना जीवन भारतकी स्वतन्त्रता के लिये अर्पण कर दूंगा। मौत के खतरे से भी मुझे क्यों न खेलना पड़े, भारत की सेवा तथा भारतीय स्वातन्त्र्य-आन्दोलन में तन-मन से शरीक होने में मैं कुछ भी उठा न रखूंगा और और इससे मैं किसी व्यक्तिगत लाभकी भी आकांक्षा नहीं रखूंगा। मैं प्रत्येक भारतीय को जाति व धर्म से ऊपर अपना भाई-बहन समझूंगा।" आजाद सेनाके अफसर पद के अनुसार विभिन्न प्रकार के बिल्ले लगाते थे। अफसर और सैनिक अपनी छाती पर बांई ओर तिरंगे झण्डे का बैज लगाते थे. उनकी टोपियों पर आजाद हिन्द फौज का पीतल का बैज रहता था, बैज पर भारत का मानचित्र और इत्तफाक, इत्तिमाद और कुरबानी ये तीन शब्द खुदे होते थे। आजाद हिन्द सेनाके सैनिकोंकी दृढ़ता और समरलिप्सा अत्यन्त प्रबल कही जाती है। यहाँ पर "कदम-कदम

बढ़ाये जा" सैनिक गीत सम्मिलित कंठ से गाया गया था और "यह जिंदगी है कौम की तू कौम पे लुटाये जा" का संकल्प लिया गया था। पूरा गीत इस प्रकार है :—

कदम कदम बढ़ाये जा,
खुशी के गीत गाये जा;
ये जिंदगी है कौम की,
तू कौम पर लुटाये जा।
तू शेरे हिंद आगे बढ़,
मरने से फिर भी तू न डर,
आसमान तक उठाके सर,
जोशे - वतन बढ़ाये जा।

तेरी हिम्मत बढ़ती रहे,
खुदा तेरी सुनता रहे,
जो सामने तेरे चढ़े,
तू खाक में मिलाये जा।
चलो दिल्ली पुकार के,
कौमी निशां सम्भाल के,
लाल किले पे गाड़ के,
लहराये जा लहराये जा!

आज़ाद हिन्द सरकार

आज़ाद हिन्द सेना के सम्बन्ध में अपने पाठकों को संक्षेप में हम बता चुके हैं। अब जिस स्वतन्त्र भारत की सरकार के अन्तर्गत यह काम कर रही थी; उसका कुछ परिचय देना आवश्यक है। १९४३ के अक्तूबरमें इण्डिपेंडेण्ट लीग ने एक विराट सम्मेलनका आयोजन किया। नेताजी ने लगभग डेढ़ घण्टे तक भाषण कर आजाद हिन्द की अस्थाई सरकार के निर्माण का महत्व बतलाया। यहीं पर उन्होंने परमेश्वर के नाम पर सब लोगों से भारत भक्ति की शपथ ली और कहा "मैं सुभाषचन्द्र बोस भारत और ३८ करोड़ भारतवासियों को स्वतन्त्र करने की शपथ लेता हूं। और अपनी अन्तिम श्वास तक स्वतन्त्रता के इस पुनीत संग्राम को चलाता रहूंगा। मैं सदैव भारत का सेवक बना रहूंगा और अपने ३८

करोड़ भारतीय भाई बहनों की भलाई में लगा रहूंगा।" इस सभामें आजाद हिन्द फौज के सदस्य, भारतीय नागरिक और कुछ जापानी अफसर शामिल थे। थाइलैण्ड, जावा, सुमात्रा, हिन्द चीन, हाँगकाँग और मलाया जैसे पूर्वी एशियायी देशों के भारतीय प्रतिनिधि भी इसमें उपस्थित थे। उक्त बैठक में श्री सुभाषचन्द्र बसु द्वारा नियुक्त मन्त्रियों ने स्वतन्त्र भारत सरकार के प्रति ईमानदार रहने की शपथ ग्रहण की। प्रतिनिधि शपथ ग्रहणमें सम्मिलित नहीं हुए परन्तु उन्होंने अस्थायी सरकार की घोषणाका प्रसन्नता पूर्वक स्वागत किया। इस बैठकमें लगभग ५००० व्यक्ति उपस्थित थे तदुपरान्त निम्नलिखित घोषणा पढ़ी गयी :—

अस्थायी सरकार की घोषणा—घोषणामें भारतीय नेताओं और सरकार के बीच हुए संघर्ष की चर्चा करते हुए कहा गया है कि "हमारा दुर्भाग्य है कि हमारे पूर्वजों ने आरम्भ में यह बात महसूस नहीं की कि अंग्रेज सारे भारत के लिए भारी खतरा हैं और इस लिए उन्होंने उनसे संयुक्त होकर मोर्चा नहीं लिया।" घोषणा में भारत के राजनीतिक आन्दोलन की ओर विशेषतः कांग्रेस के जन्म तथा कार्य की चर्चा करते हुए कहा गया है कि 'कांग्रेस ने १६३७ से १६३६ तक ८ प्रान्तोमें अपने मन्त्रिमण्डलों द्वारा यह बात प्रमाणित कर दी है कि हम अपना शासन कार्य स्वयं ही बड़े मजे से चला सकते हैं।' फिर बताया गया है कि भारत की स्वतन्त्रताके लिए कैसा कार्य चलाया गया है।

आजाद हिन्द सरकार

अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति तथा युद्ध की गति की चर्चा करते हुए उसमें कहा गया कि अब स्वतन्त्रता का ऊषाकाल आ रहा है अतः भारतीयों का कर्तव्य है कि वे अपनी अस्थायी सरकार संघटित कर लें और उसके द्वारा अपनी स्वतन्त्रता का अन्तिम युद्ध चलायें। भारत के नेता जेलों में बन्द हैं अतः भारतीय स्वातन्त्र्य लीग का यह कर्तव्य है कि वह देश और विदेश सभी भारतीयों की सहायता से आजाद हिन्द की अस्थायी सरकार की नियुक्ति का तथा अपनी आजाद हिन्द फौज द्वारा भारतका अन्तिम स्वातन्त्र्य-संग्राम चलाने का कार्य अपने हाथ मे ले।'

'आजाद हिन्द की अस्थायी सरकार की स्थापना के उपरान्त हम अपनी पूरी जिम्मेदारीके साथ अपने कर्तव्य में प्रवृत्त होते हैं। ईश्वर से हम प्रार्थना करते हैं कि वह हमें अपनी मातृ भूमि का उद्धार करनेमें सफलता प्रदान करे। हम अपने देश की स्वतंत्रता तथा उन्नति के लिए अपने प्राण अर्पण करते हैं। अस्थायी सरकार कर्तव्य होगा कि वह स्वातन्त्र्य-संग्राम चलाये तथा अंग्रेजों और उनके मित्रों को भारत से निकाल बाहर करे। तदुपरान्त अस्थायी सरकारका कर्तव्य होगा कि यह आजाद हिन्द की स्थायी सरकार की स्थापना करे जिसे जनता का पूरा समर्थन प्राप्त हो। ऐसी स्थायी सरकार स्थापित न होने तक यह अस्थायी सरकार ही भारत वासियोंके नाम देशका शासन कार्य चलायेगी।

अस्थायी सरकार को प्रत्येक भारतीय का समर्थन प्राप्त करनेका अधिकार है और वह इसका दावा करती है। वह प्रत्येक नागरिकको धार्मिक स्वतन्त्रता, समान अधिकार और समान अवसर प्रदान करने की गारण्टी देती है। वह देश की सारी जनता की समृद्धि के लिए प्रत्येक सम्भव उपाय करने का वचन देती है। ईश्वर के तथा उन पिछली पीढ़ियों के, जिन्होंने सारे भारत को एक राष्ट्र रूप में गठित किया है तथा उन वीरों के नाम पर जिनकी वीरता और आत्मबलिदान हमारे लिए आदर्श कार्य कर रहा है जनताको उचित है कि वह हमारे झण्डे तले एकत्र हो भारतीय स्वतन्त्रता के लिए अंग्रेजों और उनके सभी मित्रों पर अन्तिम आक्रमण करे और अपना संग्राम उस समय तक जारी रखे जब तक शत्रु भारत भूमि से पूर्णतः निकाल बाहर न किया जाय और भारत पुनः स्वतन्त्र न हो जाय।"

घोषणा पत्र पर अस्थायी सरकार के इन सभी सदस्यों के हस्ताक्षर हैं—

सुभाषचन्द्र वसु (राज्य के प्रधान, मन्त्री तथा युद्ध और पर राष्ट्र विभाग के मन्त्री)।

कप्तान श्रीमती लक्ष्मी (महिला संघटन)।

एस० ए० ऐयर (प्रचारक और प्रकाशन)।

लेफ्टिनेण्ट कर्नल आइ० ए० सी० चटर्जी (अर्थ)।

आज़ाद हिन्द सरकार

लेफ्टिनेण्ट कर्नल अजीज अहमद, लेफ्टिनेण्ट कर्नल गुलजार सिंह, लेफ्टिनेण्ट कर्नल जे० के० भोंसले, लेफ्टिनेण्ट कर्नल आइ० एम० एस० भगत, लेफ्टिनेण्ट कर्नल एम० जेड० केनी, लेफ्टिनेण्ट कर्नल ए० डी० लोकनाथन्, लेफ्टिनेण्ट कर्नल ईसान कादिर, लेफ्टिनेण्ट कर्नल शाहनवाज (सेनाके प्रतिनिधि) ।

ए० एम० सहाय मन्त्री (मन्त्री का पद) ।

रासबिहारी बसु (प्रधान परामर्शदाता) करीमगनी, दीनानाथ दास, डी० एम० खां, ए० यलप्पा, जे० थिवी, सरदार ईश्वर सिंह (परामर्शदाता) ।

ए० एन० सरकार (कानूनी परामर्शदाता) ।

अस्थायी सरकार की गजट—सरकारी नियुक्तियोंके सम्बन्ध में सूचना अस्थायी सरकार द्वारा प्रकाशित गजट में रहती थी। सेनामें नियुक्ति की सूचना 'आजाद हिन्द फौज गजट' में प्रकाशित होती थी। आज़ाद हिन्द फौज और जापानी दोनों सेनाएं दो मित्र सेनाओं की तरह कार्य करती थीं।

आज़ाद हिन्द दल—श्री कादिर आजाद हिन्द दलके नेता थे। इस दलका उद्देश्य उन क्षेत्रों पर शासन करना था जिनपर आजाद हिन्द फौज का कब्जा हो जाता था। इसमें नागरिक अधिकारी थे, जिन्हें सिंगापुर और रंगूनमें मुल्की शासनकी शिक्षा

मिली थी। लेफ्टिनेण्ट कर्नल चटर्जी आज़ाद हिन्द सरकार द्वारा अधिकृत प्रदेशों के गवर्नर बनाये गये थे।

सुभाष बाबू ने यहां स्पष्ट कर दिया कि यदि स्वाधीन भारत की सरकार भारत के अन्दर बनती और यह सरकार स्वतन्त्रता का अन्तिम संग्राम छेड़ती तो बहुत ही अच्छा होता, परन्तु इस समय भारत की जैसी अवस्था है और जिस प्रकार यहां के सभी प्रमुख नेता जेलों में हैं। इस समय भारत की सीमा के अन्दर इस प्रकार की सरकार को बनाने की आशा व्यर्थ है। परन्तु इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है कि ज्यों ही हमारी सेना भारतकी सीमा में घुसेगी और भारतीय भूमि पर राष्ट्रीय पताका फहरायेगी त्योंही भारत मे वास्तविक क्रान्ति प्रारम्भ हो जायगी। ऐसी क्रान्ति जो भारत मे ब्रिटिश शासन का अन्त कर देगी। राष्ट्रीय सेना के संगठन ने पूर्वी एशिया के भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन को वास्तविकता और गम्भीरता प्रदान की है। यदि यह सेना संगठित न हुई होती तो पूर्वी एशिया में स्वाधीनता संघ केवल प्रचार का यन्त्र बना रहता। राष्ट्रीय सेना के निर्माण के साथ साथ यह सम्भव और आवश्यक है कि स्वाधीन भारत की अस्थायी सरकार का निर्माण किया जाय। इसका निर्माण कर एक ओर जहां हम भारतीय परिस्थिति का सामना कर रहे हैं वहां दूसरी ओर इतिहास के पद-चिह्नों का भी अनुसरण कर

रहे हैं। १६१६ में आइरिश लोगों ने अपनी प्राथमिक स्वाधीन सरकार बनाई थी। चेकोंने गत महायुद्ध में यही किया था—तुर्कों ने मुस्तफा कमाल के नेतृत्व में अनाटोलिया में अपनी प्राथमिक सरकार बनाई थी। प्राथमिक सरकार प्रत्येक भारतीय को धार्मिक स्वतन्त्रता और प्रत्येक नागरिक को समान अधिकार तथा सुविधा देनेका वचन देती है। कांग्रेस में सहस्त्रों भारतीयों ने सम्मिलित कंठ से गाया—

शुभ सुख चैन की वर्षा बरसे, भारत भाग है जागा।
पञ्जाब सिन्ध गुजरात मराठा, द्राविड उत्कल बंगा॥
चञ्चल सागर विन्ध्य हिमालय नीला जमना गंगा।
तेरे नित गुन गाये।
तुझ से जीवन पाये॥
सब तन पाये आशा,
सूरज बनकर जगमें चमके भारत नाम सुभागा॥
जय हो! जय हो! जय हो! जय हो!
जय हो! जय हो! जय हो! जय हो!
सबके दिल में प्रीत बसाये तेरी मीठी बानी।
हर सूबे के रहने वाले हर मजहब के प्रानी॥

सब भेद व फर्क मिटा के।
सब गोद में तेरी आके।
गूंथेंगे प्रेम की माला।
सूरज बनके जगमें चमके भारत नाम सुभागा।
जय हो! जय हो! जय हो! जय हो!
जय हो! जय हो! जय हो! जय हो!
सुबह सबेरे पंछि पखेरू तेरे ही गुन गाये।
बास भरी भर पूर हवाएं जीवन में ऋतु लायें।
सब मिलकर हिन्द पुकारे।
जय आजाद हिन्द के नारे।
प्यारा देश हमारा।
सूरज बनके जग में चमके भारत नाम सुभागा।
जय हो। जय हो। जय हो। जय हो।
जय हो। जय हो। जय हो। जय हो।
भारत नाम सुभागा।

अक्तूबर की २३ तारीख को जापान सरकार ने आजाद सरकार को स्वीकार कर प्रतिज्ञा की कि प्रत्येक सम्भव सहयोग और समर्थन आज़ाद हिन्द सरकार को भारत की पूर्ण स्वाधीनता

के युद्ध में दिया जायगा। इसके तीन दिन बाद जर्मन सरकार के वैदेशिक मन्त्री रिबन ट्राप ने सरकारी तार द्वारा सूचित किया कि जर्मन सरकार हाल में ही स्थापित स्वाधीन भारत की प्राथमिक सरकार को स्वीकार करती है। इसी प्रकार स्वतन्त्र बर्मा, स्वतन्त्र फिलीपाइन्स, क्रोटिया, इटली चीन और मंचुको ने भी इस सरकार को स्वीकार कर लिया। आयरलैंड के प्रजातन्त्रियों ने नेताजी के पास बधाई का सन्देश भेजा। उससे वे अत्यधिक प्रसन्न हुए। नवम्बर के प्रथम सप्ताह में बृहत्तर पूर्व एशिया सम्मेलन में (जो टोकियो में हुआ था) जनरल टोजो ने जापान सरकार की ओर से घोषणा की; अण्डमन और निकोबार द्वीप समूह आज़ाद हिन्द सरकार को दिये जाते हैं।

अण्डमान और निकोबार टापुओं के मिलने पर नेता जी ने हर्ष प्रकट करते हुए एक प्रेस भेंटमें कहा,—भारतीयों के लिये अण्डमन की वापसी पहला स्थान है जो ब्रिटिश जुये से स्वतन्त्र किया गया है। इस इलाके पर अधिकार कर आजाद हिन्द सरकार वास्तव में राष्ट्रीय स्वरूप की बन गई है। ब्रिटिशों ने इन स्थानों को राजनैतिक कैदियों के कारागार रूप में बना रखा था जहाँ ब्रिटिश सरकारको पदच्युत करनेके अपराधमें उन्हें आजीवन कालेपानी की सजा मिलती थी। सैंकड़ों की संख्या में वे वहाँ रखे जाते थे। पेरिस के वस्तिले जेल की भांति जिसे

सब भेद व फर्क मिटा के।
सब गोद में तेरी आके।
गूंधेंगे प्रेम की माला।
सूरज चमके जगमें चमके भारत नाम सुभागा।
जय हो! जय हो! जय हो! जय हो!
जय हो!' जय हो! जय हो! जय हो!
सुबह सवेरे पंछि पखेरू तेरे ही गुन गायें।
बास भरी भर पूर हवाएं जीवन में ऋतु लायें।
सब मिलकर हिन्द पुकारे।
जय आजाद हिन्द के नारे।
प्यारा देश हमारा।
सूरज चमके जग में चमके भारत नाम सुभागा।
जय हो। जय हो। जय हो। जय हो।
जय हो। जय हो। जय हो। जय हो।
भारत नाम सुभागा।

अक्तूबर की २३ तारीख को जापान सरकार ने आजाद सरकार को स्वीकार कर प्रतिज्ञा की कि प्रत्येक सम्भव सहयोग और समर्थन आजाद हिन्द सरकार को भारत की पूर्ण स्वाधीनता

के युद्ध में दिया जायगा। इसके तीन दिन बाद जर्मन सरकार के वैदेशिक मन्त्री रिबन ट्राप ने सरकारी तार द्वारा सूचित किया कि जर्मन सरकार हाल में ही स्थापित स्वाधीन भारत की प्राथमिक सरकार को स्वीकार करती है। इसी प्रकार स्वतन्त्र बर्मा, स्वतन्त्र फिलीपाइन्स, क्रोटिया, इटली चीन और मंचुको ने भी इस सरकार को स्वीकार कर लिया। आयरलैंड के प्रजातन्त्रियों ने नेताजी के पास बधाई का सन्देश भेजा। उससे वे अत्यधिक प्रसन्न हुए। नवम्बर के प्रथम सप्ताह में बृहत्तर पूर्व एशिया सम्मेलन में (जो टोकियो में हुआ था) जनरल टोजो ने जापान सरकार की ओर से घोषणा की; अण्डमन और निकोबार द्वीप समूह आज़ाद हिन्द सरकार को दिये जाते हैं।

सब भेद व फर्क मिटा के।
सब गोद में तेरी आके।
गूंधेंगे प्रेम की माला।
सूरज बनके जगमें चमके भारत नाम सुभागा।
जय हो। जय हो। जय हो। जय हो।
जय हो। जय हो। जय हो। जय हो।
सुबह सवेरे पंछि पखेरू तेरे ही गुन गायें।
बास भरी भर पूर हवाएं जीवन में ऋतु लायें।
सब मिलकर हिन्द पुकारे।
जय आजाद हिन्द के नारे।
प्यारा देश हमारा।
सूरज बनके जग में चमके भारत नाम सुभागा।
जय हो। जय हो। जय हो। जय हो।
जय हो। जय हो। जय हो। जय हो।
भारत नाम सुभागा।

अक्तूबर की २३ तारीख को जापान सरकार सरकार को स्वीकार कर प्रतिज्ञा की कि प्रत्येक और समर्थन आज़ाद हिन्द सरकार को भारत की

फ़ांस की क्रान्ति में पहले मुक्त किया गया था और राज बन्दियों को छोड़ा गया था, अण्डमन भी जहां हमारे देश भक्तों को बड़ी बड़ी कठिनाइयां झेलनी पड़ी हैं पहले छुड़ाया गया है। धीरे धीरे भारतके सभी इलाके स्वतन्त्र बनाये जायेंगे परन्तु पहले को पहला महत्व मिलता हो है हमने अण्डमन का नाम "शहीद" और निकोबार को "स्वराज्य" अमर शहीदों की स्मृति में रखा है। आजाद हिन्द सरकार की ओर से पूर्ण स्वराज्य नामक दैनिक और जय हिन्द नामक पत्र प्रकाशित किये जाते थे।

सेना सम्बन्धी आदेश

भारतीय स्वतन्त्रता संघ के कार्य्य मे हिन्दू, मुसलमान ईसाई, यहूदी सभी सम्प्रदायों के लोग थे परन्तु उनमे किसी प्रकार का भेद भाव नहीं था। भोजन के समय शाकाहारी और मांसाहारी दोनों ही साथ साथ एक पंक्तिमें बैठते थे। शाकाहारियों को पहले भोजन परोस जाता था। इसके बाद जो मांस चाहते थे उन्हें दिया जाता था। प्रारम्भमें यह एक बहुत बड़ा प्रश्न था परन्तु बारम्बार सभाओं द्वारा प्रचार और देश भक्ति पर जोर देकर जन साधारण को इस प्रकार शिक्षित किया गया कि लोगों को कोई आपत्ति नहीं रही। कर्नल चटर्जी और श्री रासबिहारी बोस ने इस दिशा में विशेप प्रयत्न किया था।

* * *

दिल्ली चलनेकी तैयारी

आजाद हिन्द सेना और आजाद हिन्द सरकारका विवरण हमारे पाठक ऊपरकी पंक्तियोंमें पढ़ चुके हैं। अब हमें यह देखना है कि आगेकी घटनाओंपर दोनोंका क्या प्रभाव पड़ा और नेताजीने दिल्ली चलो का जो नारा लगाया था उसका क्या परिणाम निकला। भिन्न भिन्न देशोंकी स्वतन्त्र सरकारों द्वारा स्वीकृत होनेके पश्चात् आजाद हिन्द सरकारकी ओरसे अक्टूबरके अन्तिम सप्ताहमें ब्रिटेन और अमरीकाके विरुद्ध मन्त्रिमण्डलकी सर्वसम्मतिसे नेताजीने युद्ध घोषित कर दिया। यह घोषणा पाडंगकी सार्वजनिक रैलीमें नेताजीने की थी। यहां पचास हज़ारसे भी अधिक जनता उपस्थित थी। यहीं फौज ने नेताजी को सलामी दी थी और दिल्ली चलो का नारा दुहराया था। यहीं पर नेताजी ने लोगों

से यह खुलासा पूछा था कि यदि कोई भाई सेनाको छोड़ना चाहता हो तो अभी छोड़ सकता है। परन्तु एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं निकला जो बाहर जाना चाहता हो। नेताजीने घोषित किया कि आजाद हिन्द फौज जब लड़ाई छेड़ेगी तब अपनी ही सरकारके नेतृत्वमें छेड़ेगी और जब यह भारतकी सीमामें प्रविष्ट होगी तब स्वतन्त्र किये हुए इलाकोंका शासन अपने आप आजाद हिन्द सरकारके हाथमें आ जायगा। भारत की स्वाधीनता भारतीयोंके प्रयत्न और बलिदान तथा हमारी सेना के ही प्रयत्नोंसे आयेगी। इसके बाद नेताजीने विश्वके समाचार पत्र प्रतिनिधियोंको दिये गये वक्तव्यमें बतलाया कि राष्ट्रीय भारत एक लम्बे अरसेसे ब्रिटेनके विरुद्ध युद्धरत है। फिर भी चूंकि स्वतन्त्र भारतकी सरकार पहले पहल बनी है; अतः हमारा रुख खुलासा करनेके लिये यह आवश्यक है कि ब्रिटेन और अमरीका के विरुद्ध इस प्रकारकी घोषणा की जाय। यह युद्ध घोषणा केवल प्रचारके लिये नहीं है। *अपने कार्यों द्वारा हम सिद्ध करेंगे* कि हम जो कहते हैं उसे पूरा भी करते हैं। नेताजीकी इस घोषणा से सर्वत्र उत्साह छा गया था। अब सैनिक नर और नारी छावनियोंमें रहते थे। प्रतिदिन ड्रिल, परेड, भाषण और सैनिक शिक्षा का कार्य चालू था। सबके सब शिक्षक भारतीय थे। जापानी एक भी नहीं था। यह तै हुआ था कि जापान आजाद सेनाको अस्त्र-शस्त्र और युद्ध-सामग्रीको सप्लाई करेगा और आजाद सर-

कार उसके दाम चुकायेगी। कोई चीज उधार नहीं ली जाती थी।' स्वाधीन किये हुए भारतीय इलाकों पर शासन करनेके लिये शासक निर्माण करनेके हेतु एक स्कूल खुला हुआ था। विशेष रूप से सुशिक्षित लोग ही इसमें भर्ती किये जाते थे। इसमें टेकनिकल और शासन सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त करनेवाले अच्छी संख्यामें थे। इसका नाम "आजाद हिन्द दल" था। दिसम्बरके प्रथम सप्ताहमें फौज का कुछ हिस्सा उत्तरकी ओर कूच करता हुआ रंगून पहुंचा। मलाया इस फौजका मुख्य केन्द्र था। यहां सेनाके लिये प्रत्येक भारतीयको शिक्षादी जाती थी। मलायाके कुछ स्थानोंके ६६ प्रतिशत निवासी स्वतन्त्रता संघके प्रतिनिधि बन गये थे। प्रत्येक स्थानमें हिन्दुस्तानी प्रचारके लिये स्कूल खोले गये थे। इधरके निवासियोंमें बड़ी संख्या तामिल लोगोंकी है उनके लिये हिन्दुस्तानी शिक्षाके साथ तामिल शिक्षाका भी प्रबन्ध किया गया था। सुभाष बाबूके इस प्रकार बढ़ते हुए प्रभावसे और सर्वथा राष्ट्रीय आधारपर बनी हुई फौजसे जापानी साम्राज्यवादी प्रसन्न नहीं थे। वे तो नेताजी और इस आन्दोलनको अपनी कठपुतली बनाना चाहते थे। पर जब इसमें उन्हें सफलता न मिली तब फौजकी अधिक भर्तीमें वे बाधा डालने लगे। अबतक फौजकी संख्या ४० हजार हो चुकी थी। जापानियोंने यह कहकर कि अब वे और अधिक अस्त्र-शस्त्र और युद्धका सामान नहीं दे सकेंगे। सेनाकी और भरतीको रोक

दिया। नेताजीने एक बालक सेनाका भी निर्माण किया था। रंगूनमें आजाद हिन्द नामक एक बैंक ५० लाख डालरके मूलधन से स्थापित हुआ। बर्मासे ८॥ करोड़ रुपये एकत्र किये गये। जापानी सिक्कोंकी अपेक्षा इस बैंकके नोटोंका व्यापारी समाज और जनसाधारणमें अधिक मान था। इसकी तीन शाखाएं भिन्न भिन्न स्थानोंमें और भी खोली गयी थीं। जो ब्रिटिशोंके पुनः बर्मा अधिकार करने तक काम करती रहीं। रंगूनके कुछ प्रमुख व्यवसायियोंने सरकार और फ़ौजके खर्चके लिये २० लाख से अधिक डालर संग्रह करके दिया था। मलाया, बर्मा, थाइलैण्ड जावा, सुमात्रा और बोरनियोंमें फौजकी ट्रेनिंगके लिये सैकड़ों केन्द्र खोले गये थे। थाइलैण्डके एक ट्रेनिंग केन्द्रमें एक सहस्र व्यक्ति एक साथ शिक्षा पा रहे थे। एक प्रत्यक्ष दर्शीका कथन है कि मैंने फौजी शिक्षाके एक केन्द्रको देखा—जहां लगभग ७०० रंगरूट ट्रेनिंग पा रहे थे। यह कल्पना करना कठिन है कि भारतीय क्लर्क और व्यापारी—जिनके पूर्वजोंने गत १०० वर्षोंमें बन्दूक को हाथ तक नहीं लगाया था, सैनिक शिक्षामें इस प्रकार योग्य सिद्ध होंगे। वास्तवमें उत्साह सबसे बड़ी शक्ति है। सितम्बरके अन्तिम सप्ताहमें नेताजीके साथ कुछ लोग रंगूनमें भारतके अन्तिम मुगल बादशाह बहादुरशाहकी समाधिपर श्रद्धा प्रकट करने गये थे। नेताजीने सम्राटके प्रति बड़ी गम्भीर श्रद्धा प्रकट

की और उनकी बनायी हुई एक कविताका मर्म सबको समझाया। कविता यह है:—

गाजियों में बू रहेगी जब तलक ईमान की।
तब तो लण्डन तक चलेगी तेग हिन्दुस्तान की॥

अफसरोंकी ट्रेनिंगके लिये सिंगापुर और रंगूनमें दो केन्द्र थे। आजाद हिन्द दलकी ट्रेनिंगके लिये पुनर्निर्माण विभागके अन्तर्गत सिंगापुर और रंगूनमें केन्द्र खोले गये थे। फौजके प्रयत्न से भारतमें स्वतन्त्र होनेवाले इलाकोंका शासन करनेके उद्देश्यसे यहा शिक्षा दी जाती थी। कर्नल चटर्जी आजाद हिन्द सरकार द्वारा स्वतन्त्र बनाये हुए इलाकोंके पहले गवर्नर और श्री लोकनाथन शहीद द्वीपके चीफ कमिश्नर नियुक्त किये गये।

ऊपरकी पंक्तियोंमें झांसीकी रानी रेजीमेण्टके सम्बन्धमें चर्चा की गयी है। अक्टूबरके अन्तिम सप्ताहमें इस रेजीमेण्टका उद्घाटन नेताजीके हाथों सम्पन्न हुआ। यह दिवस झासीकी रानीका जन्म दिवस था। इस अवसरपर जब नेताजी राष्ट्रीय झण्डा फहरा रहे थे, रेजीमेण्टकी महिलायें कन्धों पर बन्दूकें लिये बड़े ध्यानसे चित्रवत खड़ी थीं। नेताजीने बहनोंको सम्बोधित करते हुए कहा—"इस कैम्पके उद्घाटनसे हमारे इस पूर्व एशियाके इतिहासमें एक नया अध्याय प्रारम्भ हुआ है। भारतका अतीत महान और गौरवयुक्त रहा है। भारत झांसीकी रानी जैसी महिमामयी पुत्री कैसे उत्पन्न कर सकता था यदि उसकी परम्परा गौरवमय न होती। पूर्व भारतमें जैसे मैत्रेया जैसी नारियां मिलती हैं

वैसे ही हम महाराष्ट्रमें अहिल्या बाई, बंगालमें रानी भवानी, और दिल्लीमें रजिया बेगम जैसे उत्साहवर्द्धक उदाहरण पाते हैं। झांसी की रानी की चर्चा करते समय हमें यह याद रखना होगा कि उस समय उनकी अवस्था केवल २० वर्षकी थी। आप सहजमें ही कल्पना कर सकती हैं कि २० वर्ष की एक बालिका के लिये घोड़े पर चढ़ने और मत्र म भूमि में तलवार चलाने का क्या अर्थ है। आप आसानी से समझ सकती हैं कि उनमें कितना साहस और उत्साह था। उनके विरुद्ध लड़ने वाले इंगलिश सेनापति ने कहा था कि विद्रोहियों में वे सब से श्रेष्ठ वीर थीं। पहले उन्होंने झांसी के दुर्ग से युद्ध किया और जब किला घिर गया तब उन्होंने कालपी से लडाई की। इस युद्ध भूमि से हटने के बाद उन्होंने तातिया टोपी के साथ सन्धि कर ली और ग्वालियर के किले पर अधिकार कर लिया। इस दुर्ग को अपना केन्द्र बनाकर उन्होंने संग्राम जारी रखा और यहां आखिरी समर में युद्ध करते हुये वे स्वर्गवासिनी हुईं। दुर्भाग्यवश झांसी की रानी पराजित हुईं पर यह पराजय उनकी नहीं भारतकी पराजय थी। वे गुजर गईं, पर उनकी आत्मा अमर है। भारत फिर झांसी की रानीको उत्पन्न करेगा और विजय की ओर अग्रसर होगा।'

मलाया, थाइलैंड और बर्माके भिन्न भिन्न स्थानोंमें भर्त्तीके लिये कई केन्द्र खोले गये थे जिसमें केवल मलायासे १ सहस्र महिलाएं भरती हुईं थीं। इनको नर्सिंग (धात्री शिक्षा) और युद्ध कौशल की भी शिक्षा दी जाती थी। —x—

आज़ादी का युद्ध

दिसम्बर के अन्तिम सप्ताहमें नेताजी शहीद टापूमें पधारे और पोर्ट ब्लेयरमें तिरंगा झण्डा फहराया जहां कि भारतीय क्रान्तिकारियोंको बडी बडी विपत्तियाँ और कठिनाइयां सहनी पडी थीं। जनवरीके प्रथम सप्ताहमें फ़ौजका अग्रवर्ती सदर मुकाम रंगून पहुंचाया गया जिससे वह युद्ध क्षेत्रके अधिक निकट रहे। इसका एक कारण यह भी था कि जापानी सेनापति बर्मासे भारतपर शीघ्र ही होनेवाले आक्रमणमें इस फौजको सम्मिलित करनेके लिये विशेष इच्छुक नहीं थे। उनका यह विचार था कि पहले उनकी सेना इम्फाल ले ले और तब आजाद सेना उसमें योगदान करने जाय। नेताजीको यह बात बहुत बुरी लगी, और उन्होंने दृढतासे कहा कि आजाद सेना भारत प्रवेशके युद्धमें अवश्य ही आगे रहेगी। फरवरीके पहले

सप्ताहमें अर्थात् ४ फरवरी १६४४ को भारतीय स्वतन्त्रता की लड़ाई छिड़ गयी। जापानियोंने अपनी शक्तिभरआजादसेना द्वारा, जिसकी संख्या युद्ध भूमि में २० हजारसे कम नहीं थी; एक ही मोर्चेपर पूरी ताकत लगाने में बाधा डाली, फिर भी १८ मार्चको आजाद फौज भारतीय सीमाको पारकर भीतर दूरतक घुस गयी। कहते हैं कि आजाद सेनाके प्रधान सेनापति कैप्टेन शाहनवाज ने भारत भूमि—मनीपुर में सर्वप्रथम तिरंगा झण्डा फहराया था। सीमा पारकर आज़ाद सैनिकोंने मातृभूमिको साष्टांग नमस्कार किया और भारतकी मिट्टीका चुम्बन किया। वह दृश्य बहुत ही प्रभावोत्पादक रहा होगा; जब सैनिकोंने मातृभूमिकी मिट्टीको हाथमें ले यह शपथ ली होगी कि वे युद्धसे पग पीछे नहीं हटायेंगे और भारतको स्वतंत्र कियेबिना विश्राम नहीं करेंगे। फौज ने टामू, कोहिमा, पालेल और टिड्डिम तथा मोर्चेके दूसरे स्थानोंपर घोर संग्राम किया और अधिकार कर लिया। साथ ही मनीपुरकी राजधानी इम्फाल घेर लिया गया। विचार यह था कि वर्षा वहीं बितायी जायगी। परन्तु ठीक समय पर जापानियोंने विमानोंकी सहायता रोक दी अतः इस सेनाको मनीपुरसे लौटना पड़ा। यह पीछे हट विमानोंकी कमी, खाद्य और सप्लाई तथा अस्त्रोंके अभाव के कारण थी। परन्तु एक बात निश्चित रूपसे सिद्ध हो गयी कि उचित साधन मिलनेपर भारतीय सैनिक अपने शत्रुओं

-को परास्त कर बाहर निकाल सकते हैं। यहांके पहले ही युद्ध में ब्रिटिश जैसी सुशिक्षित एवं सुसज्जित सेनाको मुंहकी खानी पड़ी थी। साहस, मजबूती, युद्ध कौशलमें भारतीय सैनिक, जिनमें मजदूर, क्लर्क और व्यापारी अधिक थे,—अद्वितीय सिद्ध हुए। कर्तव्य निष्ठा और वीरताके कितने ही सुन्दर उदाहरण उन्होंने छोड़े हैं। फटे पुराने कपड़े पहने और अध पेट सिपाहियोंने गोला बारूदकी कमी और हवाई सहायतासे रहित होकर भी पूर्ण रूपसे सुसज्जित ब्रिटिश सेनाको पहली ही लड़ाइयोंमें पछाड़ दिया था। कहा जाता है कि आजाद हिन्द सेना हाथाहाथी युद्धमें अजेय थी। आराकानकी पहाडियां और इम्फाल तथा पालेलकी लड़ाइयोंमें इनकी युद्ध शक्ति देखकर विदेशी सेनापति चकित रह जाते थे। आजाद सैनिक और भारतीय तथा ब्रिटिश सैनिकोंमें जहां सामना हो रहा था वहा की कुछ घटनाएं बहुत ही रोचक हैं।

गुलामीके घी से आजादी की घास अच्छी !

इम्फाल की युद्ध-भूमि में एक ओर ब्रिटिश सरकार की हुकूमत थी तो दूसरी ओर आजाद हिन्द फौज की। दोनों सेनाओंके बीच अमराईका एक वृक्ष था। उस पर आजाद हिन्द फौज का एक तख्ता लटक रहा था, जिस पर लिखा था— "हमारे साथ आओ और आजादी के लिए लड़ो" इसके उत्तर में दूसरे सैनिकों ने उसी तख्ते पर लिखा—"तुम लोग जापान

के गुलाम हो। तुम लोग रोटी के लिए मरते हो। तुम नमक हराम हो। अगर तुम इधर आ जाओ तो तुमको सब तरह का खाना मिलेगा।"

आजाद हिन्द फौज ने इसका उत्तर इस प्रकार दिया— गुलामी के घी और आटे से आजादी की घास अच्छी है। हम लोग जापान के टुकड़ खोर नहीं हैं। हम तो नेता जी के हुक्म से लड़ते हैं।" और इसके बाद ही आज़ाद हिन्द सैनिकों ने निम्न लिखित गीत गाया :—

सिरपर तिरंगा झण्डा जलवा दिखा रहा है—

कौमी तिरंगे झण्डे ऊँचे रहो जहाँ में,
हो तेरी सर बुलंदी ज्यों चांद आसमां में॥

तू मान है हमारा, तू शान है हमारी।
तू जीतका निशा हो, तू जान है हमारी॥

हरइक वसरकी लव पै जारी है ये दुवाएं।
कौमी तिरंगा झण्डा हम शौकसे उड़ाएं॥

आकाश औ जमींपर हो तेरा बोलबाला।
झुक जाय तेरे आगे हर ताज तख्तवाला॥

हर कौमको नजरमें तू हो निशां अमनका
हो ऐसे [मुअस्सर सारा तेरा जहाँ हो।

'मुश्ताक बे-नवाबी' खुश होके गा रहा है,
सिरपर तिरंगा झण्डा जलवा दिखा रहा है।
कौमी तिरंगे झण्डे ऊँचे रहो जहाँ में॥

'कहते हैं कि इस गीत के बाद ब्रिटिश सेना के भारतीय सिपाही दूसरे मोर्चे पर हटा दिये गये। दूसरी घटना इम्फालके पास की है। पलेल के हवाई अड्डे के बहुत समीप आजाद हिन्द सैनिक तथा जापानी सैनिक पहुंच चुके थे। विचार यह था कि रात में विद्युत आक्रमण कर इस पर अधिकार किया जायगा। इस समय आजाद सैनिकों के पास राशन की कमी थी। वे जंगली कंद-मूल, फल और फूलों पर निर्वाह कर रहे थे। और इसके साथ साथ उनको कुछ चावल भी दिये जाते थे। हवल्दार नवाब खां ने दिल्ली के कोर्ट मार्शल के समक्ष गवाही देते हुए २८ नवम्बर को स्वीकार किया कि "यों तो राशन में चावल, चीनी, नमक और तेल सम्मिलित था। किन्तु मोर्चे पर राशनमें अधिकसे अधिक १० से १२ आउंस तक चावल मिलता था; किन्तु निश्चित कुछ भी नहीं था। कभी कभी तो राशन मिलता ही न था और तब सैनिक पास पड़ोस के जङ्गलों में चले जाते थे और केला तथा जो भी खाने योग्य फल मिलता था खाते थे।' फौज के कमाण्डर ने इस अवस्था में जापानी सेनापति से अनुरोध किया कि वे फौज के एक वक्त के भोजन के लिये जापानी फौजी भण्डारसे चावल दिला दें। जापानी सेनापति ने नम्रता से उत्तर दिया है कि इधर भी चावल की कमी है। किन्तु आज रात हम जहां चल रहे हैं वहां पर्याप्त चावल हैं। आजाद फौज का सेनापति इस उत्तर से कुछ खिन्न हुआ,

पर उसने प्रतिज्ञा की कि रात होने के पहले ही वह अपने सिपाहियों के लिये आहार अवश्य लायेगा। इसके बाद उसने अपने सैनिकों को एकत्र कर कहा कि अपने पास खाद्य की कमी है। जापानियों से थोड़े भी चावल नहीं मिल सकते। यदि आप लोगों की सम्मति हो तो हम इसी समय हवाई अड्डे पर आक्रमण कर दें और इन जापानियों को दिखा दें कि हिन्दुस्तानी सिपाही भूखे रहकर भी युद्ध कर सकते हैं। "जय हिन्द" के घोष के साथ सिपाही हवाई अड्डे पर टूट पड़े। यह आक्रमण इतना प्रचण्ड और आशातीत था कि ब्रिटिश सिपाहियों को अपनी शक्ति के संग्रह करने का भी मौका न मिला और हवाई अड्डा आजाद सैनिकों के हाथ में आ गया।

झांसी की रानी रेजीमेण्ट घायलों की मरहम पट्टी और सेवा सुश्रूषा का प्रबन्ध करती थी। परन्तु इतने से ही इस दल की नारियों का हृदय संतुष्ट नहीं हुआ। उन्होंने सुभाष बाबू से युद्ध क्षेत्रमें जा कर लड़ने की आज्ञा मांगी। इस आवेदन पत्र पर उन लोगोंने अपने अपने रक्तसे हस्ताक्षर किये थे। जिन्होंने रक्त से हस्ताक्षर किये थे उनमें २ महाराष्ट्र ब्राह्मण, २ बंगाली ब्राह्मण तथा २ गुजराती वैश्य परिवार की बालिकायें थीं। इन्हें बाद को युद्ध क्षेत्रमें जाकर लड़नेकी आज्ञा मिली थी और इन्होंने वास्तव में युद्ध क्षेत्र में अपना जौहर दिखाया भी था।

इस दल की नारियों ने केवल छिप कर बन्दूकों से ही युद्ध नहीं किया अपितु नङ्गी संगीनों से भी खुलकर लड़ाई की थी।

झांसीकी रानी रेजीमेन्ट तथा बालक सेनाकी चर्चा करते हुए नागपुरके श्री गोविन्दराव किर्डेने—आप आजाद सेनाके मदर मुकाममें काम कर चुके हैं, एक प्रेस वक्तव्यमें हालमें ही कहा है कि बाल सेनाके आत्मघातीदल बर्माके युद्धमें मित्रोंके टैंकों के नीचे अपनी पीठ पर माइन (सुरंग) बांध कर लेट जाते थे और टैंकोंको उड़ा देते थे। झांसीकी रानी रेजीमेन्टकी सदस्याओं ने मौल्मीनके निकट मित्र-सेनासे १६ घण्टे तक संग्राम किया था और आघात सहन किये थे। मित्र सेनाके पास जहां भारी हथियार और विस्फोटक थे, वहां महिलाओंने केवल राइफलों और बंदूकोंसे युद्ध किया था और मित्र सैनिकोंका अग्रगमन रोका था। यद्यपि अन्तमें उन्हें हटना पड़ा, किन्तु इस युद्धसे उभयपक्ष में उनका यश छा गया और यह सिद्ध हो गया कि रेजीमेन्ट केवल दिखाऊ सेना नहीं थी।

आराकान युद्ध में आजाद हिन्द फौज ने जो वीरता प्रदर्शित की थी उसके कारण कई योद्धा "सरदारे जंग" और "वीरे हिन्द" तथा "तमगाए शत्रुनाश" के पदक से विभूषित किये गये। कई नारियों को "सेवके हिन्द" के पदक दिये गये। परन्तु इतना सब कुछ होने पर भी आजाद सेना को विफलता

क्यों मिली, इस पर स्वयं नेता जी ने प्रकाश डाला है जो जय हिन्द पुस्तक से यहां दिया जाता है :—

"हमने बहुत देर में लड़ाई छेड़ी। वर्षा ऋतु हमारे प्रतिकूल थी। सड़कें पानी से भरी हुई थीं; और प्रवाह के विरुद्ध नदियां पार करनी पड़ती थीं। इसके विपरीत शत्रु के पास प्रथम श्रेणी की सड़कें थीं। हमारे सामने एक ही मौका था कि वर्षा के पहले इम्फाल ले लिया जाय परन्तु हवाई सहायता की कमी से ऐसा न हो सका। यदि फरवरी के स्थान पर यह संग्राम जनवरी में छेड़ा गया होता तो हमें सफलता मिलती। वर्षा के पहले या तो हमारी सेना ने शत्रु को रोका या आगे कदम बढ़ाया। आराकान के मोर्चे और हाका क्षेत्र में हमने शत्रु को रोका और कालादान, टिड्डिम, पलेल और कोहिमा में हम आगे बढ़े और यह सब तब हुआ जब हमारे शत्रु संख्या में अधिक थे और उनका युद्ध का सामान तथा राशन भी उत्तम था। वर्षा आते ही हमें इम्फाल पर अपना आम हमला रोकना पड़ा। यान्त्रिक सेना की सहायता से इसी समय शत्रु ने कोहिमा और इम्फाल ले लिया। हमारे सामने अब दो ही उपाय थे। हम या तो विष्णुपुर और पलेल मोर्चे में डटे रहें और शत्रु को आगे बढ़ने न दें अथवा पीछे के सुविधा पूर्ण स्थानोंमें हट जायें। हमारे पास आवागमनके साधनकी कमी थी और कठिन स्थानमें लड़ाई करनेका ढङ्ग दोष पूर्ण था। हमारे

पास प्रथम श्रेणी के प्रचार कार्य्य की कमी थी। लाउड स्पीकर भी हमें नहीं मिल सके।" अगस्त के तीसरे सप्ताह में सिपहसालार नेता जी ने वर्षा काल भर के लिये आक्रमण मूलक कार्य्य बन्द करने की आज्ञा दी। इस युद्ध ने निम्नलिखित ब्रिगेड लड़े थे :—

सुभाप-गांधी ब्रिगेड—एक डिवीजन में चार ब्रिगेड रहते थे। इम्फाल व आराकान मोर्चेमें लड़नेवाले प्रथम डिवीजनमें निम्न चार ब्रिगेड थे— *सभाप ब्रिगेड*—इसके कमाण्डर कर्नल शाहनवाज थे। इनमें कुल ३३०० सैनिक थे। सैनिकोंमें अधिकांश संख्या पठानों, सिखों व सिविल लोगोंकी थी। *आजाद ब्रिगेड*—इसके कमाण्डर कर्नल गुलमारा सिंह थे। इसमें २८०० सैनिक थे। *गांधी ब्रिगेड*—इसके कमाण्टर कर्नल इनायत क्यानी थे। इसके सैनिकोकी संख्या २८०० थी। *नेहरू ब्रिगेड*—इसके कमाण्डर कर्नल गुरुबख्शसिंह ढिल्लन थे। इसमें ३००० सैनिक थे। एक विश्वस्त गैर सरकारी सूत्रसे विदित हुआ है कि आजाद फौजके लगभग ३५०० व्यक्ति हताहत हुए।

क्यों मिली, इस पर स्वयं नेता जी ने प्रकाश डाला है जो जय हिन्द पुस्तक से यहां दिया जाता है :—

"हमने बहुत देर में लड़ाई छेड़ी। वर्षा ऋतु हमारे प्रतिकूल थी। सड़कें पानी से भरी हुई थीं, और प्रवाह के विरुद्ध नदियां पार करनी पड़ती थीं। इसके विपरीत शत्रु के पास प्रथम श्रेणी की सड़कें थीं। हमारे सामने एक ही मौका था कि वर्षा के पहले इम्फाल ले लिया जाय परन्तु हवाई सहायता की कमी से ऐसा न हो सका। यदि फरवरी के स्थान पर यह संग्राम जनवरी में छेड़ा गया होता तो हमें सफलता मिलती। वर्षा के पहले या तो हमारी सेना ने शत्रु को रोका या आगे कदम बढ़ाया। आराकान के मोर्चे और हाका क्षेत्र में हमने शत्रु को रोका और कालादान, टिड्डिम, पलेल और कोहिमा में हम आगे बढ़े और यह सब तब हुआ जब हमारे शत्रु संख्या में अधिक थे और उनका युद्ध का सामान तथा राशन भी उत्तम था। वर्षा आते ही हमें इम्फाल पर अपना आम हमला रोकना पड़ा। यान्त्रिक सेना की सहायता से इसी समय शत्रु ने कोहिमा और इम्फाल ले लिया। हमारे सामने अब दो ही उपाय थे। हम या तो विष्णुपुर और पलेल मोर्चे में डटे रहें और शत्रु को आगे बढ़ने न दें अथवा पीछे के सुविधा पूर्ण स्थानों में हट जाय। हमारे पास आवागमन के साधनों की कमी थी और कठिन स्थानमें लड़ाई करनेका ढङ्ग दोष पूर्ण था। हमारे

आराकान मोर्चेमें नेता जी

नेताजी का परिचय

आजाद सैनिक श्री सुभाष बाबू को नेताजी कहते हैं। इस सेनाके संगठनसे लेकर युद्ध करने तक का संक्षिप्त वर्णन पहले के पृष्ठों में दिया जा चुका है। उस पर और कुछ कहने के पूर्व नेता जी तथा उनके सहायक नेताओं का भी परिचय जान लेना अच्छा रहेगा। निम्नलिखित पंक्तियाँ सुभाष बाबू के उस भाषणके आधार पर हैं जिसे उन्होंने अपना परिचय देते हुए आजाद हिन्द रेडियो से दिया था। यह बम्बई के फ्री प्रेस जर्नलमें प्रकाशित भी हो चुका है। भाषण इस भाँति है :—

"सबसे पहले मैं आपसे अपने बारे में कुछ कहूंगा। मैं चाहता हूं कि आप सब लोग यह जान लें कि मैं क्या हूं और मेरा व्यक्तिगत जीवन क्या है। विश्व-विद्यालय की शिक्षा के बाद १९२१ मैंने राजनैतिक दुनियाँ मे प्रवेश, किया। उस

आराकान मोर्चेमें नेता जी

नेताजी का परिचय

आजाद सैनिक श्री सुभाष बाबू को नेताजी कहते हैं। इस सेनाके संगठनसे लेकर युद्ध करने तक का संक्षिप्त वर्णन पहले के पृष्ठों में दिया जा चुका है। उस पर और कुछ कहने के पूर्व नेता जी तथा उनके सहायक नेताओं का भी परिचय जान लेना अच्छा रहेगा। निम्नलिखित पंक्तियाँ सुभाष बाबू के उस भाषणके आधार पर हैं जिसे उन्होंने अपना परिचय देते हुए आजाद हिन्द रेडियो से दिया था। यह बम्बई के फ्री प्रेस जर्नलमें प्रकाशित भी हो चुका है। भाषण इस भाँति है :—

"सबसे पहले मैं आपसे अपने बारे में कुछ कहूंगा। मैं चाहता हूं कि आप सब लोग यह जान लें कि मैं क्या हूं और मेरा व्यक्तिगत जीवन क्या है। विश्व-विद्यालय की शिक्षा के बाद १९२१ मैंने राजनैतिक दुनियां में प्रवेश किया। उस

आजाद सेनाका
चिह्न

आजाद सेनाकी
मुद्रा (सील)

आजाद सेनाका
बैज

आजाद सैनिकका लक्ष्यवेध

समय सब से मुख्य सवाल यह था—"गत महायुद्ध में भारतीयों ने क्या किया, उसका परिणाम क्या हुआ, भविष्य के लिये हमें कौन सा अनुभव मिला और हमने कौन सा पाठ सीखा ?" भारत और इङ्गलैण्ड में हमें यह अनुभव हुआ कि हमारे नेताओं की नीति गलत थी। किन्तु कार्य करने के लिए हम अपने नेताओं पर ही अवलम्बित थे। हम तरुण और विद्यार्थी वर्ग सम्पूर्ण रूप से निराश हो गये। एक यही खयाल हमारे मन में था—"जो गलती हमारे नेताओं ने पिछले महायुद्धमें की वह अब दुहरायी न जाय।" हमने अनुभव किया कि यदि भविष्यमें हमलोगोंको अवसर दिया गया तो वह गलती हम नहीं करेंगे।

लड़ाईके बाद का यूरोप—एक बड़ा सवाल और भी था। यूरोपमें लड़ाईके बाद सन् १९१८-१९ के वर्षोंमें बहुत परिवर्तन हुए। नयी सल्तनतें बन रही थीं। चेक जातिके लोग आस्ट्रो-हंगेरियन साम्राज्यसे अलग हो गये। एक दूसरी जाति—पोल जाति—ने अपनी सरकार अलग बना ली। जब मैं यूरोप गया, वहां मुझे दो-तीन भारतीय नेताओंसे मिलनेका अवसर आया। उन लोगोंने मुझे सलाह दी कि यदि मैं अपनी जन्मभूमिके लिये कुछ करना चाहता हूं तो मुझे युद्धका इतिहास पढ़ना चाहिये। ब्रिटेनके विरुद्ध अपनी लड़ाईमें तत्कालीन इतिहासके अनुभवोंको उपयोगमें लाना चाहिये। हम लोगोंने सीखना और

आजाद सेनाका
चिह्न

आजाद सेनाकी
मुद्रा (सील)

आजाद सेनाका
बैज

आजाद सैनिकका लक्ष्यवेध

समय सब से मुख्य सवाल यह था—"गत महायुद्ध में भारतीयों ने क्या किया, उसका परिणाम क्या हुआ, भविष्य के लिये हमें कौन सा अनुभव मिला और हमने कौन सा पाठ सीखा?" भारत और इङ्गलैण्ड में हमे यह अनुभव हुआ कि हमारे नेताओं की नीति गलत थी। किन्तु कार्य करने के लिए हम अपने नेताओं पर ही अवलम्बित थे। हम तरुण और विद्यार्थी वर्ग सम्पूर्ण रूप से निराश हो गये। एक यही खयाल हमारे मन मे था—"जो गलती हमारे नेताओं ने पिछले महायुद्धमें की वह अब दुहरायी न जाय।" हमने अनुभव किया कि यदि भविष्यमें हमलोगोंको अवसर दिया गया तो वह गलती हम नहीं करेंगे।

लड़ाईके बाद का यूरोप—एक बड़ा सवाल और भी था। यूरोपमें लड़ाईके बाद सन् १९१८-१९ के वर्षोंमे बहुत परिवर्तन हुए। नयी सल्तनतें बन रही थीं। चेक जातिके लोग आस्ट्रो-हंगेरियन साम्राज्यसे अलग हो गये। एक दूसरी जाति—पोल जाति—ने अपनी सरकार अलग बना ली। जब मैं यूरोप गया, वहां मुझे दो-तीन भारतीय नेताओंसे मिलनेका अवसर आया। उन लोगोने मुझे सलाह दी कि यदि मैं अपनी जन्मभूमिके लिये कुछ करना चाहता हूं तो मुझे युद्धका इतिहास पढ़ना चाहिये। ब्रिटेनके विरुद्ध अपनी लड़ाईमें तत्कालीन इतिहासके अनुभवोंको उपयोगमें लाना चाहिये। हम लोगोंने सीखना और

समझना शुरू किया। हमने यह जाना कि कुछ चेक नेता किस प्रकार प्रचार कार्यके लिये तथा आस्ट्रिया हंगेरीके दुश्मनों से सहायता प्राप्त करनेके लिये बाहर गये। उन्होंने फ्रांस और ब्रिटेनके साथ सहयोग किया और इन दोनों सरकारोंने चेक नेताओंकी मदद दी, और युद्धके बाद स्वतन्त्र सरकारकी स्थापना का उनका हक भी स्वीकार कर लिया। ब्रिटेन और फ्रांसने उनके प्रयत्नों में हर तरहकी सहायता देनेका आश्वासन दिया। उन्होंने उचित लगनसे अपने कार्य प्रारम्भ कर दिये। अपने देशके बाहरके समस्त चेकोंको उन्होंने संगठित बनाया। आस्ट्रो-हंगेरियन सेनाके चेक जातिके सैनिक, जो शत्रुओंके हाथों बन्दी हुए, उन्होंने भी चेक नेशनल आर्मी (चेक राष्ट्रीय सेना) को अपनी सेवाएं स्वेच्छासे प्रदान कीं। इस सेनामें २० हजार सिपाही थे। ब्रिटेन और फ्रांससे मिलकर यह सेना आस्ट्रिया हंगेरी और जर्मनीसे लड़ी। पोल जातिके लोगोंने भी ३० हजार की सेना संगठित की और उन्होंने युद्धमें भाग लिया। यह उनका सौभाग्य था कि जर्मनी और उसके साथी राष्ट्र हार गये, और युद्धके बाद वे (पोल और चेक जातिके लोग) अपनी सरकार कायम कर सके।

"यही राहके पथिक—कोई कारण नहीं कि हम उसी रास्तेपर क्यों न चलें और अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियोंका इतिहास पढ़कर, सम्पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त करनेके लिये ब्रिटेनके शत्रुओंके

कंधेसे कंधा मिलाकर युद्ध क्यों न करें। आयरलैण्डके लोगोंने भी युद्धसे लाभ उठाया था। सीन-फीन पार्टीकी ३००० सेना थी। देश भरमें उनकी सेनाकी संख्या १० हजार थी। उनकी योजना में कुछ त्रुटि रह गयी जिससे डब्लिनमें जो विद्रोह उन्होंने उठाया, वह गांवोंमें फैल न सका। किसी प्रकार ८ दिन तक उन्होंने डब्लिन नगरपर अधिकार रखा। यह विद्रोह ईस्टरके दिनों में शुरू हुआ। अतएव उसका नाम ईस्टर विद्रोह पड़ा। सन् १९१६ में वह विद्रोह सफल नहीं हुआ। युद्धके बाद तत्काल सन् १९१९ में यह फिर भड़का। विद्रोहियोंके पास केवल ५ हजार सैनिक थे। इस बार परिमाण भिन्न हुआ। युद्ध समाप्त हो गया था। इन्हें दबाने के लिये इंगलैण्डसे सेना लायी जा सकती थी। तथापि केवल पांच हजार सनिकों की यह सेना अपनी लड़ाई चलाती रही। अन्तमें ब्रिटिश जातिको घुटने टेकने पड़े।

असहयोग—गत महायुद्ध के इतिहास के अध्ययन से प्राप्त अनुभवों के आधार पर सन् १९२१ में हमने भारत में कार्य प्रारम्भ किया था। उस समय महात्मा गांधी ने असहयोग आन्दोलन छेड़ दिया था। खिलाफत कमेटी भी कांग्रेस के साथ मिलकर काम कर रही थी। असहयोग आन्दोलन में हम लोगों ने भी भाग लिया। अंग्रेजों के भयानक दमन के मुकाबले में, राष्ट्र की इज्जत बचाने और अपनी लड़ाई चलाने का

कोई दूसरा जरिया न देखकर हम लोग सन् १९२१ में महात्मा गांधी के अधीन कांग्रेस में शामिल हो गये। हिन्दू और मुसलमान मिल गये थे। किन्तु हम लोग निश्चित रूप से जानते थे कि भद्र अवज्ञा आन्दोलन से भारत को पूर्ण स्वतन्त्रता नहीं मिल सकती। इस आन्दोलन से जनता में राजनैतिक जागृति पैदा हुई। इस आन्दोलन ने जनता को सशस्त्र संघर्षके लिये तैयार कर दिया। यह मेरा व्यक्तिगत मत नहीं, बल्कि उन अनेक तरुणों का मत है जो सन् १९२१ में महात्मा गाधी से प्रभावित हुए। कुछ तरुण जरूर ऐसे थे जिनका विश्वास अहिंसा में था; किन्तु उनमें से अधिकाश हिंसा के जबर्दस्त समर्थक थे।

हिटलर से मुलाकात—सन् १९३३ में मैं यूरोप गया। वहां १९३५ तक ठहरा। यूरोप जाने का मेरा उद्देश्य यह अध्ययन करना था कि वहां अब कौन सी घटना घटने वाली है। यूरोप में रहते हुए मैं बर्लिन गया। वहां के कुछ सरकारी कर्मचारियों से परिचय प्राप्त किया और फ्युहरर हिटलर से मुलाकात की। मैंने उनसे यह साफ-साफ पूछा कि वे कब युद्ध ठानने जा रहे हैं। उन्हो ने उत्तर दिया कि वे ब्रिटेन से बिलकुल नहीं लड़ना चाहते। उन्हें आशा थी कि ब्रिटेन द्वारा उनकी मांगें पूरी कर दी जायंगी। वे ब्रिटेन से सुलह करने के पक्ष में थे। किसी कदर उन्होंने भारत की स्वतन्त्रता

के साथ अपनी सहानुभूति प्रगट की। यह सब कुछ कहने का अर्थ यह है कि जब मैं यूरोप से लौटा तब आगे होने वाली घटनाओं का विश्वास लिये लौटा। जर्मनी मे जो दल सत्तारूढ हुआ, वह सदा लडाई के पक्ष मे था। मैं स्पष्ट समझ गया कि ब्रिटेन जर्मनों की मांगे पूरी नहीं करेगा, और ज्यों ही ब्रिटेन देख लेगा कि जर्मनो की शक्ति थोडी और बढ गई है त्यों ही वह नाजियो से युद्ध छेड देगा। सन् १९३८ मे जब मैं यूरोप गया तब मैंने कुछ परिवर्त्तन देखे। जर्मनी समझने लग गया था कि ब्रिटेन उसकी सम्पूर्ण मांगों की पूर्ति कभी नहीं करेगा। सन् १९३८ के सितम्बर मे, जर्मनो ने सुडटन जर्मनों का मामला पेश किया। ब्रिटिश प्रधान मन्त्री श्री० चेम्बर लेन हर हिटलर से सुलह करने म्युनिख दौडे। एक समय था, जब अन्तर्राष्ट्रीय महत्व की समस्त चर्चाएं लन्दन मे हुआ करती थीं। जब मने ब्रिटिश प्रधान मन्त्री को अपना डेरा छोड कर जर्मनी भागते देखा तब यह जाना कि ब्रिटेन कमजोर होता जा रहा है और जर्मनी मजबूत।

युद्ध तब कुछ उचित है —तब मैंने यह प्रचार करना शुरू कर दिया कि यूरोप मे युद्ध अवश्यम्भावी है। भारतीयो का कर्त्तव्य है कि वे सावधान रहें तथा ब्रिटेनको अपनी मांग मजूर करने को विवश करें। और यदि ब्रिटेन

अस्वीकार करे तो भारत लड़नेकी तैयारी करे। मैं जनतामें होनेवाली अपने प्रचारकी प्रतिक्रियाओंको देख रहा था। मैं जानता था कि मुझे जनताका सम्पूर्ण समर्थन प्राप्त है। किन्तु हमारे नेता दूसरी तरह सोच रहे थे—खासकर महात्मा गांधी। उनकी नीति ठहरने और परिणाम देखनेकी थी। तथापि हम तरुण इनकी इस नीतिसे विचलित नहीं हुए। हमने दूने वग से अपना प्रयत्न और प्रचार प्रारम्भ कर दिया। हमलोग भारत की जनतासे कह रहे थे कि निकट भविष्यमें जो स्वर्ण अवसर उसके हाथ आयगा; उससे वह पूरा लाभ उठावे।

त्रिपुरी कांग्रेस—मार्च १९३९ में भारत की राष्ट्रीय महासभा कांग्रेसका अधिवेशन त्रिपुरीमें हुआ। मैंने ६ महीने में भारतको सम्पूर्ण स्वतन्त्रता देने और सरकारको इसकी अन्तिम सूचना देनेका प्रस्ताव पेश किया और कहा कि यदि हमारी यह माग उस अवधिके भीतर पूरी नहीं की जाय तो हमें जो भी शक्ति अपने पास है उसे लेकर ब्रिटेनसे युद्ध करने के लिये जनताको तैयार करना चाहिये। ये बातें सूचना के रूपमें कही गयी थीं और अगले छः महीनोंमें युद्ध छिड़ जाने की पूरी जानकारी और अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितिकी गम्भीरता को अच्छी तरह ध्यानमें रखते हुए यह प्रस्ताव रखा गया था।

ब्रिटेनको मजबूर किया जाय—जब सन १९३९ के सितम्बरमें यूरोपमें युद्ध छिड़ गया तब जनता समझने लगी कि

मार्चमें जो कुछ मैंने कहा था वह सही था। उस समय हमारा यह कर्त्तव्य था कि अपनी तमाम शक्तियोंको एकत्रित करके, ब्रिटेनको अपनी मांगोंको मंजूर करनेको हम विवश करें और यदि इसमें सफलता न मिले तो हम अपनी मांगोंकी पूर्त्तिके लिये लड़ाई छेड़ दें। किन्तु हमारे नेताओंके विचार और कार्य इससे भिन्न थे। उनकी यह धारणा थी कि युद्ध कालमें ब्रिटेन कमजोर पड़ जायगा, और भारतसे सहायता पानेके लिये वह हमसे समझौता कर लेगा। मैंने, इस धारणाकी असंभाव्यता दिखानेकी कोशिश की, और कहा कि लड़ाई के समय चाहे ब्रिटेनकी जो भी कमजोरी हो, वह भारतमें अपनी शक्ति घटने नहीं देगा। ज्यों-ज्यों वह कमजोर पड़ता जायगा, त्यों-त्यों भारतपर उसकी पकड़ सख्त होती जायगी। भारतके बिना वह युद्धको सफलतासे चला ले जानेमें समर्थ नहीं होगा। और ज्यों-ज्यों कमजोर होता जायगा, त्यों-त्यों वह देशके साधनोंका शोषण करता जायगा।

मार्च १९४० में जब कांग्रेसका अधिवेशन जारी था, हमने कदम आगे बढ़ानेकी उम्मीद की। किन्तु गांधीजी अपने पथपर अड़े रहे। वे अब भी प्रतीक्षा करने और परिणाम देखनेकी इच्छा रखते थे। हम अपने मनको इस रूपमें तैयार करने लगे कि चाहे जो हो, हमें अपना आन्दोलन जारी कर देना चाहिये। देशभरमें युद्ध-विरोधी आन्दोलन प्रारम्भ हो गया। आन्दोलन

गहरा होता गया। बहुत लोग जेल गये। इसी बीच मुझे खबर मिली कि चूंकि सरकार कुछ नहीं कर रही है अतएव नवम्बर महीनेमें महात्मा गांधी स्वयं सत्याग्रह आन्दोलन शुरू करेंगे। मैंने सुखकी सांस ली। मैं सोचने लगा—अब तमाम दुनिया जान जायगी कि भारत अपनी स्वतन्त्रताके लिये लड़ रहा है। सब राष्ट्र यह सोचेंगे कि भारत स्वाधीन होने योग्य है। हमें निश्चित रूपसे संसार की सहानुभूति प्राप्त होगी। किन्तु मैंने सोचा कि केवल सत्याग्रहके रास्तेसे हम स्वाधीनता नहीं ले सकेंगे। सत्याग्रहसे सरकारपर दबाव जरूर पड़ेगा और उससे युद्धोद्योगमें बाधा पड़ेगी; किन्तु इतनेसे ही सरकार हमारी मांगों पर ध्यान नहीं देगी। यह मेरा खयाल था। हमलोग विचार कर रहे थे कि करना क्या चाहिये? कौन सा नया ढङ्ग ग्रहण करना चाहिये? बमों और रिवाल्वरोंसे, नौजवान, जो थोड़ा-बहुत कर सकते थे, वह कर रहे थे। हमलोग इन क्रान्तिकारियों के सम्पर्कमें आये। मैं इनकी शक्तिको जानता था। ये लोग ऊँची भावनाओंवाले सच्चे क्रान्तिकारी थे। किन्तु इनकी शक्ति और इनके त्याग हमारी मातृभूमिको पूर्ण स्वाधीन करनेके लिये पर्याप्त नहीं थे।

इतिहास की शिक्षा—तब हमने पुनः इतिहास के पन्ने टटोलने शुरू किये। हमें उनमें अनेक उदाहरण और यथार्थ

पाठ मिले। एक उदाहरण अमरीका का हमारे सामने था। मैंने यह जाना—और इसी निष्कर्ष पर पहुंचा भी—कि बिना किसी बाहरी सहायता के, भारत की क्रान्ति सफल नहीं होगी। संयुक्त राज्य (अमरीका) ने फ्रांस से बहुत बड़ी सहायता प्राप्त की थी। दुनिया के इतिहास में, किसी देश के लिये, अपनी स्वतन्त्रता हासिल करने के लिये, विश्व के अन्य राष्ट्रों की सहायता लेना, कोई नई बात नहीं थी। भारतमें जो सम्वाद मिलते थे वे तोड़ मरोड़ और अधिकतर प्रचारात्मक ढङ्ग के हुआ करते थे। यह करना ब्रिटेनके लिये स्वाभाविक था। भारत में रहकर बाहर की दुनिया की वस्तु स्थिति समझ लेना सम्भव नहीं था। युद्ध का परिणाम क्या होगा, उसकी समाप्ति किस रूपमें होगी; और अन्त में जीत किस की होगी? विदेशों में निवास करने वाले भारतीयों के क्या विचार हैं, भारत की स्वतन्त्रता की लड़ाई के बारे में वे किस विचार-प्रणाली से सोचते हैं, भारतीय स्वतन्त्रता के युद्ध मे किस प्रकार उनकी सहायता प्राप्त की जाय, और क्या यह सम्भव है कि वे ब्रिटेन के शत्रुओं से कुछ ठोस सहायता प्राप्त कर सकें? इन्हीं प्रश्नों ने हमें यह सोचने को बाध्य किया कि हममें से किसी एक को भारत से जाना चाहिये। मैंने कुछ लोगों को विदेशों में भेजने की बात सोची। यह काम बहुत कठिन था। हम लोगों की गति-विधि की भांति इस कार्य पर भी प्रतिबन्ध लगे

हुए थे। मैंने यह सोचा कि किसी ऐसे आदमीको भारत छोड़ना चाहिये जिसे अंग्रेज लोग सचमुच कुछ समझते हों, और भारतीय जनता भी जिसकी बातें ध्यान देकर सुन सकती हो। अन्त में मैंने स्वयं भारत से बाहर जाने का निश्चय किया।

अनशन—मैं उस समय जेल में था। जेल से बाहर निकलना कठिन था। जेल से खिसक पड़ने से ब्रिटिश खुफिया पुलिस के देखते हुए भारत छोड़ना मेरे लिये कठिन हो जाता। अन्त में मैंने भूख हड़ताल करने की ठानी। यह निर्णय मैंने अपने दिल को इस बात के लिये मजबूत बना कर किया कि या तो मर जाऊंगा या जेल से बाहर निकल जाऊंगा। जब मेरा यह निर्णय सरकार को बताया गया, तब अफसरी हलकों में एक हलचल मच गयी, क्यों कि वे जेल में मेरी मौत देखना नहीं चाहते थे। जेल सुपरिन्टेण्डन्ट आये और उन्होंने मुझसे भूख हड़ताल न करने को प्रार्थना की। उन्होंने यह तर्क दिया कि यदि सब कैदी भूख हड़ताल करने लग जायं तो बादशाह की सरकार की गति रुद्ध हो जायगी। उन्होंने कहा कि यदि मैं जेलमें मर गया तो इस घटना के लिये मैं ही जिम्मेवार रहूंगा। ६ दिन तक मेरी भूख हड़ताल जारी रही। उन्होंने मुझे जबर्दस्ती खिलाना चाहा किन्तु मैं यतीन्द्रनाथ दासकी भांति मर जानेपर दृढ़ सङ्कल्प था। सात दिन बाद गवर्नमेण्ट हाउस में एक गुप्-

बैठक हुई। यतः मेरे स्वास्थ्य के विषय मे डाक्टरो रिपोर्ट गम्भीर थी अतः वे कुछ करना चाहते थे। एक महीने वाद पुनः गिरफ्तार कर लेने का विचार करके उन्होंने मुझे जेल से रिहा कर दिया। मुझे ठीक समय यह सूचना मिल गयी। इसी बीच मे मेरे भाग निकलने की कुछ व्यवस्था हो गयी और मैं भारत से विदा हो गया।

अपनी जन्म भूमि को छोडने के बाद मुझे अनेक अनुभव हुए। मै दोनो पक्षों के रेडियो-सम्वाद सुना करता था। जर्मन अधिकारियों द्वारा मुझे यह अधिकार मिल गया कि मैं दुश्मनो का रेडियो सम्वाद सुनूं। यूरोप के समस्त मोरचो और किन्ने-वन्दियों को देखने का मौका भी मुझे मिल गया। अव सवाल यह था कि ऐसी स्थिति मे भारत के लिये क्या किया जाय? तीन उपाय थे.— (१) युद्ध से अलग और तटस्थ स्थितिमे रहना (२) ब्रिटेन के पास जा कर स्वतन्त्रता की भीख माँगना, और (३) ब्रिटेन के शत्रुओं के साथ मिल कर युद्ध मे भाग लेना और स्वतन्त्रता प्राप्त करने की योग्यता प्राप्त करना। ब्रिटेन के शत्रुओ से मिल कर युद्ध करना और ब्रिटिश साम्राज्यके विनाश मे भाग लेना ही मुझे ठीक रास्ता मालूम हुआ। भारत की भीतरी अवस्था बहुत चिन्ता जनक थी। भारत मे जो शक्तिया

ब्रिटेन के खिलाफ युद्ध कर रही थीं उनका समर्थन करना और उन्हें प्रोत्साहन देना हमारा कर्तव्य था। भारत की समस्त जनता ब्रिटिश सरकार के खिलाफ थी।" बर्लिन से ही पूर्व एशिया के भारतीयों के आह्वान पर सुभाष बाबू १९४३ की जुलाई में पहले टोकियो फिर वहाँ से सिंगापुर आये थे।

पहले के पृष्ठोंमें पाठक देख चुके हैं कि पूर्व एशिया में सुभाष बाबूके नेतृत्वमें भारतीय स्वाधीनताके लिये सैनिक और नागरिक उभय प्रकारका कितना बड़ा संगठन किया गया था। आगे अब यह बतलानेका प्रयत्न किया जायगा कि सुभाष बाबू ब्रिटिश पहरे से निकलकर विदेशोंमें किस प्रकार पहुचे।

भारत के बाहर कैसे निकले ?

र्व परिच्छेद में श्री सुभाष बाबू ने भारत से निकल कर बर्लिन पहुंचने की चर्चा की है; किन्तु वे यहां से निकले कैसे और जर्मनी में उनका किस प्रकार स्वागत हुआ इत्यादि बातों पर उन्होने इस भाषणमें कुछ भी नहीं कहा। अतः इस सम्बन्ध मे समाचार पत्रों में जो कुछ प्रकाशित हुआ है; रोचक होने के कारण उसका सार-भाग यहां दिया जाता है :—

श्री सुभाषचन्द्र बोस २६ जनवरी सन् १९४१ में भारतसे एकाएक ब्रिटिश साम्राज्यशाहीकी आंखोंमें धूल झोंककर कैसे विदेश चले गये यह जाननेके लिये भारत सदैव उत्सुक रहा है। बिल्कुल सही बातका पता तो लगाना कठिन है; परन्तु सुनी हुई बातोंके आधारपर जो संकलन किया गया है उसे हम अपने पाठकोंकी जानकारीके लिये देते है। बिलकुल सही बातोंका

पता तो यदि कभी सुभाष बाबूका आत्मचरित निकलेगा तभी चलेगा। सबसे पहले देशवासियोंको ता० २६ जनवरी सन् ४१ का उनके गायब होनेका समाचार मिला। इसके पहले इतना ही प्रकाशित हुआ था कि वे (सुभाष बाबू) बीमार हैं और एकान्त में रहते हैं। उनसे कोई मिल नहीं पाता और उनका भोजन भी दरवाजोंके सूराखसे ही अन्दर रख दिया जाता है। इसके पहले उन्होंने अलीपुर जेलमें ही अपनी दाढ़ी बढ़ा ली थी। वे शक्तिके साधक थे, और जब कभी उनपर आपत्ति आती थी या कोई नया कार्य प्रारम्भ करते थे तो वे जगद् जननी माता दुर्गाकी अर्चना अवश्य करते थे। जेलसे जब सरकारने छोड़ दिया तो उन्होंने फिर माताकी अर्चना प्रारम्भ कर दी।

जेलसे छोड़ देनेपर भी सरकारने उनके घरपर कड़ा पहरा बिठला दिया था और वे एक प्रकारसे अपने मकानमें ही नजरबन्द कर दिये गये थे। कहा जाता है कि एक दिन एक पठान का रूप धारण कर उन्होंने कभी लारी पर, कभी पैदल, कभी बैलगाड़ी पर, कभी रेल पर पेशावर से भारत की सीमा पार की और काबुल पहुंचे। उन्होंने अपने गले में पट्टी बांध ली थी और अपनेको बीमार बताकर यह कह दिया था कि वे बोल नहीं सकते हैं उनके काफिलेमें दो-तीन सौ पठान हथियारोंसे सुसज्जित सम्मिलित थे और वे इस बातके लिये पूरी तरह

से तैयार थे कि यदि आवश्यक हों तो वे प्राणोंकी बाजी लगाकर भी सुभाष बाबूको सरकारी सीमाके पार पहुंचा देंगे। इस तरह वे काबुल पहुंचे।

भारत सरकारका इस आशयका तार जिस समय काबुल पहुंचा कि एक भारतीय क्रान्तिकारी सीमा पार करनेकी चेष्टा कर रहा है, उसे गिरफ्तार कर लिया जावे, उस समय सुभाष बाबू वहीं पर एक होटल में थे। एक भारतीय सी० आई० डी० अफसर ने उन्हें पकड़ा भी पर उन्होंने अपने पास जो कुछ भी था उसे देकर अपना पिंड छुड़ाया, और वहीं पर एक भारतीय के गृहमें शरण ली। वहीं से वे जर्मन दूतावाससे अपने को बर्लिन पहुंचाने की बातचीत चलाते रहे।

जर्मनी वाले उन्हें जल्दी से जल्दी बुलाना चाहते थे, किन्तु दिक्कत यह थी कि रूस सुभाष बाबू को अपनी सीमा पार करवा देने के लिये तैयार न था। अन्त मे काबुल में जर्मन वालों ने एक चाल चली। एक जर्मन यात्री के नाम पास पोर्ट लेकर उसे रोककर उसकी जगह श्री सुभाषचन्द्र बोस को एक जर्मन वायुयान द्वारा बर्लिन भेजा गया। यह भी कहा गया है कि रास्ते में उन्होंने रूसमें स्टालिन से भेंट की और उनसे भारतीय स्वतन्त्रता के आन्दोलन मे सहायता करने को कहा जिसे स्टालिन ने अस्वीकार कर दिया।

कहा जाता है कि बरलिन वे मार्चके प्रथम सप्ताहमें पहुंचे— फिर तो बर्लिन और इटली से उनके भाषण रेडियो पर होते रहे। बाद में सरकार को सभी बातों का पता लग गया और कहा जाता है कि जिसकी गाड़ी पर सुभाष बाबू ने सीमा पार की थी वह गिरफ्तार कर लिया गया और जिस हिन्दुस्तानी मित्र के यहाँ काबुल मे होटल से भागकर उन्होंने शरण ली थी वह भारतीय भी गिरफ्तार कर लिया गया, और अब तक जेलमे है। नीचे लिखी पंक्तियों से पाठकों को ज्ञात हो जायगा कि जर्मनी मे सुभाष बाबू का कैसा स्वागत हुआ था :—

जर्मनी में सुभाष बाबू

बर्लिन की एक सुसज्जित होटल मे एक अमरीकी पत्रकार ने सुभाष बाबू से भेंट की थी। उसने पहले सुभाष को फोन किया, वे उस समय युद्ध समिति से बातें करने में व्यस्त थे। अतः तीन दिनके बाद पत्रकार को उनसे मिलने का अवसर मिला। और उस भेंट का विवरण उसने इस प्रकार अपने पत्र को भेजा था :—

"मैं सुभाषचन्द्र बोस से मिलने गया। मिलने के पहले मुझे जर्मन अंगरक्षकों के सामने घड़ी घड़ी मुसीबतों का सामना करना पड़ा। बहुत कड़ी जाँच के बाद मुझे जाने दिया गया। वहाँ जाते ही मैं आश्चर्य मे पड़ गया। ऐसा मालूम होता था

कि कोई ग्रीक देवता हिन्दुस्तानी पोशाक पहन कर भूल से बीसवीं सदी में आ गया है। वोस हंसे और मुस्कराते हुये उन्होंने मेरा स्वागत किया। ऐसी मीठी हंसी और ऐसा निश्छल स्वागत मैंने अपने जीवन में कभी नहीं पाया था।

"बहुत दिन हुये लास एंजेल्स के एक हिन्दुस्तानी अध्यापक के यहां मैंने बुद्ध की प्रस्तर मूर्त्ति देखी थी। मुझे न जाने क्यों मालूम हुआ कि मैं बुद्ध के सामने बैठा हूं। उन्होंने हाथ मिलाया। मुझे अनुभव हुआ जैसे मेरी अंगुलियों की नसों में हजारों साल पुरानी रहस्यमी हिन्दुस्तानी संस्कृति का जादू बिजली की तरह भरता जा रहा है।

मुझे ईर्ष्या होती है कि मैं एक हिन्दुस्तानी क्यों न हुआ ?बोस ऐसा नेता पाकर मुझे सब कुछ मिल गया होता।"

बर्लिन और हैम्वर्गके बीचमें एक छोटेसे सैनिक पड़ाव में हिटलरने सुभापको आमन्त्रित किया। जब सुभाप हिटलरके पास गये तो हिटलरने खड़े होकर कहा—"मैं योर एक्सीलेन्सी (तत्र भवान) का स्वागत करता हूं।" और उसी दिन शामको सरकारके परराष्ट्र विभागने सुभाप को "फ्यूहरर आफ इण्डिया" अर्थात् भारत नेता की पदवी दी। बर्लिनके पत्रोंमें सुभापके पूरे चित्र तथा उनकी और हिटलर की भेंटका पूरा विवरण छपा।

कई पत्रोंने उनका जीवन-वृत्त छापा और दो पत्रोंने भारत की स्वतन्त्रताके लिये पृथक् प्रयत्न करने पर सुभाष को बधाई दी।

तीसरे दिन वे हैम्बर्ग गये। यद्यपि उनके आगमनका समाचार बहुत ही गुप्त रखा गया था, किन्तु फिर भी न जाने कैसे लोगोंको मालूम हो ही गया। उनकी स्पेशल ट्रेन पहुंचने के पहले ही. प्लेटफार्म पूरी तरहसे भर गया था। ट्रेन रुकते ही हैम्बर्गके मेयरने आगे बढ़कर दरवाजा खोला और उनको एक ताजा गुलदस्ता भेंट किया।

बाहर कार खड़ी थी। स्टार्म ट्रूपर्स का एक पूरा जत्था उनकी रक्षाके लिये आया था। जब वे मोटरपर बैठे तो नाज़ी पार्टी के मन्त्रीने आकर कहा—'क्या आप हमारी पार्टी की सभामें भाषण देंगे ?" सुभाषने क्षणभर सोचा और उसके बाद वह बोले—"नहीं, मैं किसी भी दल विशेषकी ओरसे भाषण नहीं दे सकता। फिर भी मुझे जर्मन जनताके सामने भारत की समस्या रखनी है। किन्तु आपकी पार्टीकी सभामें मैं आने में असमर्थ हूं।"

दूसरे दिन हैम्बर्ग कारपोरेशनकी ओरसे सुभाषका स्वागत किया गया। सारा हैम्बर्ग उमड़ आया था। कारखानें, दूकानें, सड़कें और बन्दरगाहोंमें बिलकुल सन्नाटा हो गया था। सड़कों पर स्वस्तिक और चर्खावाले तिरंगे झण्डे एक साथ लगे हुए

थे। मंच पर एक बडा सा ईगल (जर्मनोके झंडे का चिह्न) था और उसके ऊपर तिरंगे झड लगे थे। लाउड स्पीकरों पर भी स्वस्तिक और तिरंगे बने थे। कुछ स्टार्म ट्रूपर्सके स्वयंसेवकोंने टोपियों पर तिरंगे बैज लगा रखे थे। सभा प्रारम्भ होनेके पहले जर्मनीका राष्ट्रीय गान और 'वन्देमातरम्' गाया गया। इसके बाद मेयर ने कहा कि वर्षों पहले सुभाषको देखा था। तब वे केवल सुभाष थे। आज ये "फ्युहरर आफ इण्डिया" हैं।

सुभाषने उठकर इसका प्रतिवाद किया। मीठे स्वरोंमें उन्होंने कहा—"वर्षों पहले नहीं वरन जन्मसे, वियेना ही में नहीं वरन हर जगह हर क्षण मे केवल आजादीकी लड़ाईका एक सिपाही रहा हूं—और वही अब भी हूं—न उससे कम न उससे ज्यादा।"

दूसरे दिन सुभाष वहांसे एक युद्ध विशेपज्ञके साथ मोर्चा देखने चले गये। यहां भी श्री सुभाष बाबूने आजाद हिन्द सरकार और सेनाका निर्माण किया था। हर हिटलर स्वयं उक्त दोनोंके प्रमुख केन्द्रका निरीक्षण करने गये थे। भाषण भी दिया था।

ऊपर कहा जा चुका है कि सुभाष बाबूने पूर्वी एशियाके ढंग पर जर्मनीमें पहले ही आजाद हिंद सेनाका संगठन किया था। लिबिया तथा दूसरे स्थानोंपर जो भारतीय सैनिक जर्मनों द्वारा गिरफ्तार

किये गये थे।—वे इसमें शामिल थे। जर्मनीके ब्रेसटेन नामक नगर में इनका सदर मुकाम था। इसमें १२००० सैनिकोंके ८ बटालियन थे। श्री सुभाष बाबू के साथ हिटलरने इसका निरीक्षण कर नमस्कार ग्रहण किया था। सुभाष बाबू सादी नागरिक-पोशाकमें थे। सिरपर काली टोपी सोहती थी। हिटलरने आजाद सैनिकों और जर्मन सिपाहियोंकी सम्मिलित रेलीमें लगभग १२ मिनट तक भाषण देते हुए कहा:—"जर्मन सिपाहियो और स्वाधीन भारतीयो, मैं स्वतन्त्र भारतीय सरकार के अस्थायी प्रधान हिज़ एक्सलेन्सी हर सुभाषचन्द्र बोस का स्वागत करता हूं। वे यहां उन स्वाधीन भारतीयोंका नेतृत्व करने आये हैं, जो अपने देशका प्यार करते और उसे स्वतन्त्र बनाना चाहते हैं। उन्हें सलाह या आज्ञा देना मेरे लिये उचित नहीं होगा; क्योंकि अब वे एक स्वाधीन सरकारके सैनिक हैं। जर्मन सैनिको और नागरिको; आपको एक बात याद रखना है। आपके फ्युहरर (अर्थात् मुझ हिटलर) पर ८ करोड़ जर्मनोंको हित चिन्ता समर्पित है जब कि हर बोसने ४० करोड़ भारतीयोंकी हित-रक्षाकी शपथ ली है। अतः आप अपने फ्युहररको भांति ही इस नयी सरकार और इसके प्रधानके प्रति पूरा सम्मान प्रकट करें और सहयोग दें।" फील्ड मार्शल रोमेलने भी एक बार आजाद हिन्द फौज का निरीक्षण किया था। रोमेलने कहा—मैं इन सिपाहियों में

हिन्दू मुसलमानको अलग-अलग नहीं पहचान सकता। वास्तव मे इनका भोजन, पोशाक, भाषा और आकृति समान थी।" पूर्व एशियाके भारतीयो के अनुरोध पर यहीं से एक सबमेरिनमे बैठकर सुभाष बाबू टोकियो और वहासे सिंगापुर गये थे। कहते हैं कि इस यात्रामे १ मास लगा था।

गत ११ नवम्बर को करांचीसे ओरियन्ट प्रेस द्वारा यह संवाद प्रकाशित हुआ है कि जर्मनोके साथ सहयोग करनेवाली इस सेनाका विचार पृथक् कोर्ट मार्शल द्वारा होगा। ये सैनिक शीघ्र ही विमानो द्वारा यूरोपसे भारत लाये जायेंगे।

नेताजी का जादू

पूर्व एशिया के सभी श्रेणी के नरनारी अपने नेताजी का कैसा सम्मान करते थे, और उनका जनता पर कितना प्रभाव था—निम्नलिखित पंक्तियों से इस पर अच्छा प्रकाश पड़ता है। नेताजीका जन्म दिन है। सिङ्गापुर की हिन्दोस्तानी बस्तियों में उल्लास फूटा पड़ रहा था। प्रभात की परेड से लौटकर आजाद हिन्द सेना के सैनिकों ने अपनी पत्नियों से बताया "आज मध्याह्न में नेताजी का तुलादान होगा।" तुलादान होगा! तिरंगे फूलों के तराजू में एक पलड़े पर सुभाष और दूसरी ओर चांदी, सोना, हीरों का ढेर। तरुणियां अपने ही इस दीवाने भाई की शोभाशाली मूर्त्तिकी कल्पनासे पुलकित हो गईं, वृद्धाएं अपनी इस बलिदानी सन्तान की सुषमा के विचार से ही गद्गद हो गईं—

"और इस अतुल धन राशि का होगा क्या ?" एक युवती ने आश्चर्य से पूछा।

"होगा क्या ? इस सम्पत्ति का कण कण आज़ादी के मन्दिर की सीढ़ियों पर बिखेर दिया जायगा। इसका ज़र्रा ज़र्रा माता के चरणोंपर समर्पित कर दिया जायगा।" सैनिक ने उत्तर दिया। उसकी पत्नी की एक सखी, जापानी महिला, आश्चर्य से बोली "अच्छा! हिन्दोस्तानी ऐसा भी करते हैं। आश्चर्य का देश है भारत! हमारे सम्राट का तुलादान होता है तो उसकी सारी सम्पत्ति राज कोष में चली जाती है।" "नेताजी ने अपना व्यक्तित्व रक्खा ही कहाँ है ? उनका देश ही उनका व्यक्तित्व है, देवी!" सैनिक ने उत्तर दिया।

"हां भारत में ऐसा ही होता रहा है।" जापानी महिला बोली—"मैंने इतिहास में पढ़ा था, देखो वह कौन सा राजकुमार था जो अतुल सम्पत्ति; युवती पत्नी को ठुकरा कर मानवता के कल्याण के लिये चल पड़ा था—देखो . उसका नाम .....हां बुद्ध-गौतम बुद्ध।" उसने आदर से सर झुकाते हुये कहा। भारत की परम्परा ही ऐसी रही है।

तुलादानके लिये प्रभातसे ही युवतियां व्यस्त थीं। मन्त्र-मुग्ध अभिचार संचालित पुतलियों की भांति वे रेशम के रूमालों में अपने शरीर के स्वर्णाभूषणों को समेट रहीं थीं, देश के चरणों में अर्पित करने के लिये।

मध्याह्न होते ही अपने आभूषणों को लेकर तरुणियां, वृद्धायें बालिकायें उस ओर चल दीं जैसे किसी देवता के मन्दिर की ओर सैकड़ों उपासिकाएं पूजा भेंट ले जा रही हों। तुलादान प्रारम्भ हो गया। मलाया में एक बंगाली डाक्टर के परिवार की किशोरियों ने शंख बजाये और एक वृद्धा गुजराती महिला ने आकर तराजू पर अपने जीवन भर की संचित सम्पत्ति सोने की ५ ईंटें रख दीं। और उसके बाद एक एक कर सोने के भार से पलड़ा भरने लगा। आभूषण, सोनेकी मूर्तियां, फूलदान, सिक्के, किसी वस्तुकी कमी न थी। जीवनके दस बारह वसन्त ही की पुलक का अनुभव करने वाली कुमारियां, प्रणय की लज्जा में लपटी हुई वधुएं, श्वेत केश वाली, स्वर्ग की छाया में पलने वाली जर्जर वृद्धाएं सभी स्वतन्त्रता की वेदी पर अपनी भेंट चढ़ा रही थीं। पलड़ा भर गया था, मगर वजन अभी पूरा न हुआ था। तुला का दण्ड अभी समतल न हुआ था। शंख बज रहे थे और बाहर जनता "जय हिन्द" "इन्कलाब ज़िंदाबाद" 'नेताजी चिरजीवी हों' के नारे लगा रही थी। "अभी और स्वर्ण की आवश्यकता है!" पास खड़े हुये एक सैनिक ने कहा!

आस-पास खड़ी हुई स्त्रियों ने अपने कानों के कुण्डल और हाथों की अंगूठियां उतार कर चढ़ानी प्रारम्भ कीं। पास खड़ी हुई एक महिला ने अपनी कलाई की सुनहरी रिस्टवाच पलड़े पर

-री। मगर पलड़ा अब भी न झुका—इतने में एक कोने से कुछ सिसकियां सुनाई पड़ीं। कमाण्डर लक्ष्मी बाई और उनकी दो सहायिकायें एक तरुणी को थामे हुये इधर ला रही थीं। वह सिसक रही थी—उसका जूड़ा खुल गया था, आँखें इन्दीवर पुष्प की भाँति लाल थीं और सूज गई थीं।

सुभाष ने प्रश्न दृष्टि से लक्ष्मी की ओर देखा। "कल समाचार आया है कि इस बहन का पति मोर्चे पर शहीद हो गया!" सुभाष ने टोपी उतार ली—स्त्री आई। रोते हुये उसने सुभाष को नमस्कार किया और उसके बाद सिन्दूर से पुता हुआ अपना सौभाग्य चिन्ह शीशफूल पलड़े पर रख दिया। सभी के नेत्रों में अश्रु डबडबा आये। सुभाष ने कहा—"देवता तुम्हारे पदरज के लिये लालायित होंगे, बहन!"।

स्वर्ण अब भी पूरा नहीं पड़ा था—इतने में एक जर्जर वृद्धा सीने से एक चित्र चिपकाये हुये आई और खड़ी हो गई। उसने चित्र उतार कर नीचे रख दिया। एक उभरता हुआ तरुण चेहरे पर फूलों की कोमलता, आखों में सपनों का जाल, गर्दन में हिमालय का अभिमान।

"यह मेरे एकलौते बेटे का चित्र है नेता जी" वृद्धा ने रुंधे हुये गले से कहा—"युद्ध के पहिले ही सिंगापुर में अंग्रेजों ने इसे फांसी पर चढ़ा दिया था। काश कि विधाता ने मेरी कोख

में दूसरा भी फूल दिया होता तो मैं माँ के चरणों में चढ़ा देती।" वृद्धा ने चित्र पटक दिया। शीशा चूर चूर हो गया—फोटो निकाल कर हाथ में ले लिया, स्वर्ग-फ्रेम पलड़े पर चढ़ा दिया। तुला समतल हो गई। सुभाष काँपकर खड़े हो गये।

"कौन कहता है भारत आज़ाद नहीं होगा? पुत्रहीना माँ का वरदान व्यर्थ नहीं जा सकता।" सुभाषने झुककर वृद्धाके पैर छूते हुए कहा—तुलादान पूरा हो गया था। एक दूसरी घटना इस प्रकार है:—

'नेताजी' की मालाका मूल्य—'सर्वस्व'

आजाद हिन्द फौज वाले सुभाष बोसको 'नेताजी' पुकारते थे। उनके भाषण सुननेका उन्हें काफी शौक था। सभामें आने पर उनके गलेमें फूलोंका हार डाला जाता था। लेकिन इस हारको सभामें ही नीलाम कर दिया जाता था। एक हार की नीलामीमें एक लाख, दो लाख, तीन लाख, पाँच और सात लाख की बोलियां दे दी गयीं। एक पंजाबी बेचैन था। वह बोली दे रहा था। मगर बोलियां उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही थीं। उससे रहा न गया। वह बोल उठा—'मेरी सारी धन सम्पत्ति'। उस हारको उस युवकने झपटकर ले लिया। उसे उसने अपनी आँखों और सिरपर चढ़ाया और छातीसे लगा लिया। अगले दिन उसने अपना सर्वस्व आजाद हिन्द फौजको अर्पित कर दिया। और स्वयं भी सेना में भर्ती हो गया।

धन कैसे आता था ?

धन और उपहार नेताजीके पास सिंगापुरमें निरन्तर पहुंच रहे थे; फिर भी वे इससे सन्तुष्ट नहीं थे। उन्होंने इसके लिये सम्पन्न भारतीय व्यापारियोंके पास विशेष अपील की और कहा इन स्वयंसेवकोंको देखो, जो आजाद हिन्द फौजमें भरती हुए हैं और आवश्यक ट्रेनिंग प्राप्त कर रहे हैं। वे नहीं जानते कि उनमें कितने स्वाधीन भारतको देखनेके लिये जीवित रहेंगे। वे तो एक ही विचारसे प्रेरित हो रहे हैं कि देशके लिये उन्हें अपने रक्तका आखिरी बून्द बहाना है। वे तो स्वतन्त्र भारतमें पहुंचने या उसी प्रयत्नमें मार्गमें मर जानेके लिये प्रस्तुत हो रहे हैं। जब आजाद हिन्द सेना या तो विजय या मृत्युके लिये तैयार हो रही है। उस समय कुछ धनिक भाई मुझसे पूछते हैं कि हम उनकी कुल सम्पत्तिका १० या १५ कितना प्रतिशत चाहते हैं। मैं फीसदी पूछनेवालोंसे जानना चाहता हूं कि क्या मैं अपने सिपाहियोंसे यह कहूं कि युद्धमें अपना १० प्रतिशत रक्तदान करना, बाकी बचा लेना। गरीब स्वेच्छासे और उत्साह के साथ अपना सर्वस्व देनेके लिये आगे आ रहे हैं। साधारण श्रणीके भारतवासी जैसे जमादार, धोबी, नाई, छोटे दूकानदार और ग्वाले अपने सर्वस्वके साथ आगे बढ़ रहे हैं। उनमें बहुतेरे अपना सर्वस्व देनेके बाद सिपाहियोंमें भरती भी हो रहे

हैं। बहुतसे गरीब अपना नगद पैसा देनेके बाद सेविंग बैंक की किताबें भी दे रहे हैं जिनमें, इनकी जीवनभर की कमाई संचित है। क्या मलायाके धनी भारतीयोंमें ऐसे लोग नहीं हैं जो इसी उत्साहसे आगे आयें और कहें यह हमारी बैंककी किताब है। भारतीय स्वाधीनताके प्रयत्नमें इसका प्रयोग किया जाय। मलाया से मैं १० करोड़ रुपये चाहता हूं। मलाया मे भारतीयों की जो सम्पत्ति है मेरी मांग उसका १० वां हिस्सा है।"

सभाके अन्तमें जब धन संग्रह किया जाने लगा तब देखा गया ७० लाख डालर उसी समय एकत्र हो गये। आगे के चौबीस घण्टेमें जो संग्रह हुआ वह सब मिलकर १ करोड़ २० लाख डालर हुआ। १६४३ के अन्त तक ७७२७६८७ डालर एकत्र हुए थे। सिंगापुर का नम्बर सबसे ऊंचा रहा, जहां २६ लाख ६४ हजार डालर एकत्र हुए थे। इसमें उपहारमें मिले हुए जवाहरात और चांदीकी वस्तुएं सम्मिलित नहीं हैं। इसका मूल्य भी ८८ हजार डालर अंकित किया गया है। आजाद हिन्द फौज के कर्नल का वेतन २५० रुपया प्रतिमास और मेजरको १८५ रुपया फौजियोंका वेतन आजाद हिन्द सरकार देती थी परन्तु इसके सैनिक क्रान्तिकारी ढंग पर बहुत थोड़े मे निर्वाह करते और बची हुई प्रत्येक पाई इण्डिपेन्डेन्ट लीगके फण्डमें दे देते थे।

आजाद बैंक कैसे बनी ?

एक मुस्लिम व्यापारी ने नेताजी को स्वातन्त्र्य युद्ध के लिये नगद, आभूषण और जायदाद कुल १ करोड़ का दान दिया था। उस भाईको नेताजी ने सेवक-ई-हिन्द का पदक प्रदान किया। ऐसा पदक पाने वालों में यह प्रथम था। १९४४ के अप्रैल में नेशनल बैंक आफ आजाद हिन्द का निर्माण हुआ। रंगून में इसका मुख्य केन्द्र था। वहा के एक प्रमुख व्यापारी से बात चीत करते हुये नेताजी ने कहा कि बैंक के बिना कोई सरकार चल नहीं सकती। इम्फाल हाथ में आते ही हम अपने नोट जारी करेंगे। और उस समय इस बैंक का मूल्य बहुत बढ़ा होगा। व्यापारी ने पूछा कि आप कितने रुपये से इसका प्रारम्भ करेंगे ? नेताजी ने ५० लाख मूलधन बताया। व्यापारी ने मुस्करा कर कहा कि नेताजी, आप सिर्फ इतना ही चाहते हैं ? लीजिये, तीस लाख देना तो मैं अभी स्वीकार कर रहा हूं और शेष बीस लाख एक सप्ताह में पहुंचा देने की प्रतिज्ञा करता हूं। इसके बाद बैंक खुल गया और कारबार होने लग गया। पचास लाख के शेयर जारी किये गये थे जिनमें पचीस लाख विक्रीत मूलधन था। बर्मा में प्रचलित रजिस्ट्री कानून के अनुसार यह रजिस्टर्ड कराया गया था। जनता ने इसका इतना स्वागत और इसकी साख इतनी बढ़ गई कि तीन स्थानोंमें इसकी शाखाएं

खुल गईं और पांच स्थानों में खोलने की मांग थी। मई १९४५ तक इसका कार्य्य होता रहा। रंगून के पतन के बाद भी आजाद बैंक जारी रहा। ब्रिटिश सेनापति ने इसका जारी रखना पहलेतो स्वीकार किया था। किन्तु १६ मई १९४५ को बैंकपर सरकारी अधिकार हो गया। इस समय भी बैंक के पास ३५ लाख रुपये थे। बैंक के पास वुकों समेत यह सब धन सरकार ने जब्त कर लिया। आजाद सरकार के सभी विभागों का खर्च यहीं से चलता था और सिपाहियों के वेतन की आखिरी पाई तक चुका दी गई थी। इसी प्रकार नेताजी के विस्तृत प्रभाव के अनेकों उदाहरण पाये जाते हैं। हम पहले ही कह चुके हैं कि नेताजी के कारण ही पूर्व एशिया के भारतीय जापानी अत्याचारों से बचे रहे। अब सुभाष बाबू के सम्बन्धमें कुछ अधिक कहने के पूर्व उचित है कि उनके सहकारियों का परिचय दिया जाय।

झाँसी की रानी रेजीमेन्ट की अध्यक्षा
कैप्टन डा० लक्ष्मी स्वामिनाथन्

स्वाधीनता युद्ध के सेनानी

दिल्ली के उस ऐतिहासिक लाल किले में जिसमें आज से २२६ वर्ष पूर्व गैब्रियल हैमिल्टन नामक एक स्काटिश डाक्टर आया था और जिसने शाहंशाह फर्रुखशियर को ठीक उसकी शादी के मौके पर इलाज कर चङ्गा कर दिया था। इसके इनाम में हुगली नदी के तटपर उसे एक कारखाना खोलने की आज्ञा और ३२ सूबों की मन्सबदारी मिल गयी। इसके बाद किस प्रकार अंग्रेज भारत में आए वह इतिहास का प्रत्येक विद्यार्थी जानता है। १८५७ के गदर का इतिहास भी लाल किलेका एक रक्तरञ्जित पृष्ठ है। सितम्बर १८५८ में ४० दिनके मुकदमे के बाद हिन्दुस्तान के बादशाह बहादुरशाह को आजीवन कारावास का दण्ड मिला। वे रंगून निर्वासित कर दिये गये जहां नवम्बर १८६२ में उनकी मृत्यु हो गयी। उनपर

सम्राट (ब्रिटिश सम्राट) के विरुद्ध युद्ध करने, बगावत करने और यूरोपियनों की हत्या करने का अभियोग लगाया गया था। इस घटना को हुए ८७ वर्ष हो गये। आज फिर उसी लाल किले की खूनी दीवारों के भीतर भारत के तीन सपूतों पर वही अपराध लगाकर मुकदमा चलाया जा रहा है। आज सारे भारत का ध्यान दिल्ली की ओर है, क्योंकि इन तीनों के रूपमें समस्त भारत पर ब्रिटिश अदालत में मुकदमा चल रहा है। भारत की तीन मुख्य कौमें-हिन्द मुसलिम और सिक्ख का प्रतिनिधित्व कप्तान सहगल, कप्तान शाहनवाज और लेफ्टिनेन्ट गुरुबख्श सिंह ढिल्लन आज दिल्ली के लाल किलेमें कर रहे हैं।

कप्तान शाहनवाज

कप्तान शाहनवाज का विशाल डील-डौल, गौर वर्ण, बड़ी-बड़ी मूछें और मस्ताना स्वभाव सबका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करता है। उनकी फोटो देखकर बरबस मुंहसे निकल जाता है कि सचमुच वे कप्तान होने के योग्य हैं। उनका व्यक्तित्व प्रभावोत्पादक है।

रावलपिंडी के एक उच्च परिवार में २४ जनवरी १९१४ को आपका जन्म हुआ था। आपका खानदान सम्राट की सरकार में अपनी अमूल्य सैनिक सेवाओं के लिए प्रतिष्ठित है। आपने भी वंशकी परम्परानुसार देहरादून के सैनिक विद्यालय में शिक्षा

ग्रहण की थीं। १९३६ में आपने स्थायी कमीशन प्राप्त किया था। फरवरी १९३७ में आप चौदवहीं पंजाब रेजिमेण्ट में नियुक्त कर दिये गये। यह रेजिमेण्ट ब्रिटेन के लिए मलाया और सिङ्गापुर में लड़ी थी परन्तु १५ फरवरी १९४२ में जब सिङ्गापुर का पतन हुआ तो अंग्रेज भारतीयों को वहीं उनके भाग्य पर छोड़कर भाग आये थे। भारतीय अफसर और सैनिक जापानियों द्वारा युद्ध वन्दी बना लिए गये। १७ फरवरी को ही जापानियों ने बहुत से भारतीय सैनिकों को छोड़ दिया और कहा कि यदि वे भारत की स्वतन्त्रता के लिए सैन्य संघटन करना चाहें तो उन्हें आजादी है। कप्तान कियानी और कप्तान मोहनसिंह के नेतृत्व में एक सैन्य संघटन किया गया—जिसका वास्तविक रूप २ सितम्बर १९४२ को बना। कप्तान शाहनवाज सा निसन युद्धवन्दी शिविर के अध्यक्ष थे। आपने अपने साथी अफसरोंको कप्तान मोहनसिंहका आजादीका सन्देश सुनाया और आज़ाद हिन्द फौज के संघटन में सक्रिय सहयोग प्रदान किया। परन्तु कप्तान मोहनसिंह और जापानियों में अधिक देर तक बनी नहीं-फलस्वरूप वे गिरफ्तार कर लिए गये और भारतीयों का सैन्य-संघटन समाप्त प्राय हो गया। बाद को श्री रासविहारी बोस तथा अन्य प्रवासी भारतीयों के सहयोग से जनवरी १९४३ में दोबारा सैन्य-संघटन प्रारम्भ हुआ। कप्तान शाहनवाज ने पोर्ट डिक्सन, पोर्ट खोटेनहम आदि स्थानोंमें अपने साथी अफ--

-सरोंको समझा कर और उन्हें आज़ाद हिन्द फौजका उद्देश्य बतलाकर सैन्य संघटन किया था। मई १९४३ में एक सैनिक ब्यूरो बना जिसके आप अध्यक्ष बनाये गये। जून १९४३ में श्री सुभाषचन्द्र बसु ने आज़ाद हिन्द फौजका नए सिरे से संघटन किया और उसे यह नाम दिया। अक्तूबर १९४३ को सिङ्गापुर में स्वतन्त्र भारतीय राष्ट्रीय सरकार की स्थापना हुई जिसमें कप्तान शाहनवाज भी मन्त्री थे। कप्तान शाहनवाज का व्यवहार अपने सहयोगियों के साथ बहुत अच्छा था और वे अपने देशवासियोंके कष्टसे दुखी होते थे और हर प्रकार से उसे दूर करने की चेष्टा करते थे। उनकी डायरी से पता चलता है कि जापानी आज़ाद हिन्द फौज के सिपाहियों के लिए पूरा राशन तक नहीं देते थे—शाहनवाज इससे बहुत दुखी हुए और उन्होंने लिखा पढ़ी कर सैनिकों के लिए खाने का इन्तजाम किया।

कप्तान शाहनवाज अत्यन्त धीर और स्थिर बुद्धि से काम करते हैं। इसका इसीसे स्पष्ट पता लग जाता है कि जब ४ मई १९४५ को जापानी अराकान के मोरचे परसे भाग खड़े हुए और आजाद हिन्द सेना ब्रिटिश सेना से चारों ओर घिर गयी तो भी कप्तान शाहनवाज बिना भोजन पानी तथा युद्ध-सामग्री के लड़ते रहे। २१ फरवरी १९४५ को आप पोपा से अग्रिम मोरचे के लिए रवाना हो गये। २२ फरवरी को कोक पेंडांग में पहुंच कर आप लेफ्टिनेन्ट ढिल्लन और कप्तान् सहगल से मिले।

आपने दोनों सेना नायकों को नये आदेश दिये। मई १६४५ में आसाम और आराकान में मोरचे पर जापानी सेना आजाद हिन्द फौज को धोखा देकर भाग गयी। आजाद हिन्द फौज चारों ओर से घिर गयी। कप्तान शाहनवाज कई दिनों तक जंगलों में अन्न जल विहीन घूमते रहे—उनके चारों ओर गोलियों की बौछारें होती थीं। अन्त में १७ मई १६४५ को शाम को ६ बजे सीतानिनजिक्स नामक गांव में आप गिरफ्तार कर लिये गये—और पेगू जेल में भेज दिये गये—बाद में आप दिल्ली लाये गये जहा अब आप पर सम्राट के विरुद्ध युद्ध घोषणा करने के अपराध में मुकदमा चल रहा है। कप्तान शाहनवाज सुभाष ब्रिगेड के, जो छापा मार सैनिकों का संघटन था, कमाण्डर थे। यह ब्रिगेड इम्फालके मैदान में लड़ी थी। एक समय कप्तान शाहनवाज खां को इम्फाल के युद्ध में स्वयं अपने भाई के विरुद्ध लड़ना पडा था। इस समय शाहनवाज खां केपरिवार के ६२ सदस्य ब्रिटिश भारतीय सेना में हैं।

कप्तान सहगल

अमर शहीद भगत सिंह की स्मृति करानेवाला कप्तान सहगल का चेहरा अभी नौजवानी के तेज से चमक रहा है। आप अपने दोनो साथियों से छोटे हैं। आपकी अवस्था केवल २८ वर्ष की है। आप लाहौर हाई कोर्ट के भूतपूर्व जज अच्छराम के सुपुत्र हैं।

देहरादून के सैनिक विद्यालय में शिक्षा प्राप्तकर आप १० बलूच रेजिमेण्टमें फरवरी १९४० में नियुक्त किये गये। आप बहुत हँसमुख और जिन्दा दिल हैं। लेकिन देशभक्ति आपमें कूट कूट कर भरी है। अपने साथियोंको हिम्मत हारते देखकर आप गुस्सेसे उबल पड़ते थे और कठोर अनुशासनसे काम लेते थे। लेकिन उसी तरह बहादुरीका जौहर दिखानेवालोंको आप नेताजी सुभाषसे सिफारिश करते थे और उन्हें बहादुरी का मेडल दिलवाते थे। दूरावदीके मोर्चेपर जब लेफ्टिनेण्ट ढिल्लन की कमान कमजोर पड़ती दिखायी दी तो आपने फौरन यथा-शक्ति उनकी मदद की। बर्मा-आसामके युद्ध क्षेत्रमें आप पोपोआ पहाड़ीकी रक्षामें लगे थे और उसकी तबतक रक्षा करते रहे जबतक लेफ्टिनेण्ट ढिल्लन निरापद नहीं हो गये। आप २८ अप्रैल १९४५ को गिरफ्तार किये गये थे।

स्वतन्त्र भारत सरकारमें आप युद्ध मन्त्रीके पदपर थे। आप पर कामाडुक-पेंडाग और पोपा के क्षेत्रमें सम्राटके विरुद्ध युद्ध करने तथा चार व्यक्तियों को मृत्युदण्डकी आज्ञा देनेका अपराध लगाया गया है। ६ नवम्बर को लाल किलेके मुकदमे में उस समय करुणोत्पादक दृश्य उपस्थित हो गया था जब भैया-दूज के दिवस कप्तान सहगल की बहनने भाई के ललाट पर रोरी का तिलक लगाया था।

कप्तान ढिल्लन

आजादीके इस दीवाने ने सिख होते हुए भी केश नहीं रखे। शायद वे भी उस दिनकी स्मृतिमें भेंट चढ़ा दिये गये हैं जब हम सबका प्यारा भारत स्वतन्त्र होगा। लेफ्टिनेन्ट ढिल्लनकी अवस्था ३० वर्ष की है। ४ अप्रैल १६१५ को लाहौर जिलेके अलगों नामक स्थानमें आपका जन्म हुआ था। आप केवल कुशल सैनिक ही नहीं गम्भीर विचारक भी हैं। अपने भविष्यकी जरा भी चिन्ता इस 'जय हिन्द' सेनाके वीरको नहीं—यह मस्त पड़ा लाल किलेमें आज भी यही सोच रहा है कि क्यों और किस कारणसे वे लोग असफल हो गये। इसमें निराशाकी भावना नहीं, विचारोंका संघर्ष है।

आपने भी देहरादूनके सेनिक विद्यालयमें शिक्षा प्राप्त कर अप्रैल १६४० में स्थायी कमीशन प्राप्त किया था। कप्तान शाहनवाजकी तरह आप भी प्रारम्भसे ही आजाद हिन्द फौज के संघटनमें दिलचस्पी लेते रहे हैं। तार्यािग और जितरामें अपने साथी युद्ध-वन्दियोंके वीच आपने अपने पवित्र उद्देश्यका बहुत प्रचार किया। आप अच्छे संगठनकर्त्ता हैं परन्तु आपको अनुशासन इतना प्रिय है कि विश्वासघाती और कायर सैनिकोंसे आप बहुत कठोरतासे पेश आते थे। बहादुर सैनिकों को आप पुरस्कार देते थे। आपकी कमानमें ही इरावदीके कठिन मोर्चेकी

रक्षाका भार था। आप अपना कर्तव्य पूरा करने और भारत स्वतन्त्र देखनेके लिये इतने लालायित थे कि असफल हो जाने पर आपको बहुत धक्का लगा। आपने असफलताकी सारी जिम्मेदारी अपने सिर लेकर नेताजीको दुःख भरा पत्र लिखा--कि शब्द नहीं, केवल आंसू ही मेरे हृदयकी व्यथाको प्रकट कर सकते हैं। ये शब्द आपका परिचय स्वयं देते हैं। लेफ्टिनेण्ट ढिल्लन आजाद हिन्द फौजके नेहरू ब्रिगेडके कमाण्डर थे।

आप विवाहित हैं। आपकी पत्नी भी इस समय लालकिलेमें पतिका मुकदमा सुनने आयी हुई हैं। लेफ्टिनेण्ट ढिल्लनपर सम्राटके विरुद्ध युद्धके अतिरिक्त चार व्यक्तियोंकी हत्याका अभियोग भी लगाया गया है।

आज सारा भारत इन राष्ट्रवीरोंपर मुकदमा चलानेके कारण दु:खी और क्षुब्ध है और संतप्त हृदयसे उस दिनकी प्रतीक्षामें है कि जब कप्तान शाहनवाज, कप्तान सहगल और लेफ्टिनेण्ट ढिल्लन सम्मान सहित रिहा होकर फिर देशवासियोंके बीच आयेंगे।

डा० लक्ष्मी स्वामीनाथन

झाँसीकी प्रसिद्ध रानी लक्ष्मी बाई १८५७ में अंग्रेजोंके राज्य को समाप्त कर झांसीपर अपना स्वतन्त्र राज्य स्थापित करनेके लिये लड़ीं। उन्होंने सफलता और असफलताके विविध दृश्य देखे-परन्तु

स्वाधीनता युद्ध के सेनानी

भारतके पुरुषों और स्त्रियोंके दिलोंमें अपनी वीरताकी कहानियाँ अमर कर गयीं। पठित और अपठित सभी श्रेणीके भारतीयों में उनके लिये आदरका भाव बढ़ता ही जा रहा है। उनकी कथाओं से लोगोंको चेतना मिलती है। वे भी स्वतन्त्रताके लिये उनके अनुसरणकी भावना बनाते हैं। श्रीयुत सुभाषचन्द्र वसुने इस स्वाभाविक मनोवृत्तिका लाभ उठाकर रानी लक्ष्मीके नामपर आजाद हिन्द फौजका एक स्त्री रेजीमेन्ट बना डाला। सौभाग्यसे जलते हुए अंगारेके समान अपने विचारोंसे साथियोंकी टोलीको भट्टी के समान तेजस्वी बनाकर आजादीके लिये दीवाना बनानेवाली डा० लक्ष्मी स्वामीनाथन श्री नेताजीको मिल गयीं।

आपके नेतृत्वमें रानी झांसी रेजीमेन्ट दलका संगठन हुआ था। यह दल १९४५ के अप्रेल तक काम करता रहा। आपके दलकी स्त्रिया, सभी प्रकारके आधनिक अस्त्र-शस्त्रोंका चलाना सीख चुकी थीं। वे युद्ध-क्षेत्रमे लड़नेके लिये तैयार थीं, और लड़ी भी थीं। जिसकी रिपोर्ट पिछले पृष्ठोंमें पाठक पढ़ भी चुके हैं। रंगून पर ब्रिटिश अधिकार के बाद अप्रैलमें यह दल तोड़ दिया गया और अधिकांश स्त्रियां रंगूनसे चली गयीं।

आप भी टागूके जापानी अस्पतालसे पकड़कर रंगून जेलमें रखी गयीं। परन्तु आपके कारण जेलमें और जेलके बाहर भारतीय सैनिकोंमें भयंकर अशान्ति फैलने लग गयी। अधिकारी वर्ग

तंग आ गये थे और सैनिक विद्रोहकी आशंकासे डर गये थे—इसके बाद फिर आपको छोड़ दिया गया।

१६४५ की २१ अक्टूबरको आजाद हिन्द सरकारकी स्थापना का दिन था। आपने एक मित्रके घर जाकर थोड़ेसे लोगोंके सामने भाषण दिया। बस आग भड़क उठी। ५ हजार भारतीय इकट्ठे हो गये और फिर आपने खुले मैदानमें भाषण दिया। आपने कहा कि आजाद हिन्द फौज जिस उद्देश्यके लिये बनी थी—हम उसे अभी तक पूरा नहीं कर पाये हैं। अतः स्वतन्त्रताका हमारा प्रयत्न चालू रहेगा। इस भाषणपर आपको फिर बोलनेसे मना किया गया—पर आपने इस आज्ञा को माननेसे अस्वीकार किया। यह वह स्वरूप है डा० लक्ष्मी स्वामिनाथनका जो ब्रिटिश साम्राज्य को कायम रखनेकी चिन्तावालों को भयानक प्रतीत होता है। आप हमेशा बातचीत में मित्रोंमें प्रचार करती रहती हैं। आप उस दिनकी प्रतीक्षा कर रही हैं जब आजादीका कार्य पूरा हो जायेगा। आप चाहे उनसे सहमत हों या न हों किन्तु वह इस खुले विद्रोहसे ही भारत स्वतंत्र होगा—ऐसा मानती हैं। आप हमेशा भारतकी स्वतन्त्रता के लिये उत्साह और साहसके साथ प्रयत्न करनेके लिये लोगोंको तैयार करती रहती हैं। आपकी भावना और प्रयत्नका बहुत गहरा असर पड़ता है। आपके समान वीर, धीर और निडर स्त्री मैंने नहीं देखी—

ऐसा एक ब्रिटिश सैनिक अफसरने कहा था। आपकी ईमानदारी और सत्यनिष्ठाकी सभी ब्रिटिश अफसरोंपर छाप है।

आप आजाद हिन्द सरकारके मन्त्रिमण्डलमें भी थीं। आपको समाज-सुधार और चिकित्साका विभाग मिला था। आपका वक्तव्य आजाद हिन्द फौजके लिये सच्चा और ठीक माना जा रहा है। आपने बताया कि "आजाद हिन्द सरकारने टैक्स लगाकर धन नहीं एकत्रित किया था। न जापानियोंसे सहायता ली थी। सिपाहियोंमें किसी प्रकारका भेदभाव न था। खाना-पीना भी सबका एक साथ होता था। एक ही साथ पकता था और सब खाते थे। हिन्दू और मुसलमानमें भी कोई भेद न था। अब एकता और संगठनके सूत्रमें बर्मा और भारतको मिलानेका प्रयत्न कर रही हूं। सरकारी भारत सेनाके आनेसे भारतीय और बर्मी कोसों दूर होते जा रहे हैं। आजाद हिन्द फौजने दोनों देशोंको एक कर दिया था। हम दोनोंको अपनी कठिनाइयोंमें एक साथ रहनेकी आशा थी।" उनके कमरेमें महात्मा गांधीका चित्र टंगा रहता है। साथ ही दूसरा चित्र कवीन्द्र रवीन्द्रका रहता है। इस स्त्री में नेतृत्वके लिये महान और आवश्यक गुणों का समुद्र लहरा रहा है। जिसकी मांग आजके भारतके संघर्षमें अत्यन्त उत्सुकता से हो रही है। परन्तु खेद है—ब्रिटिश साम्राज्यकी रक्षाके विचारसे बने रक्षा कानूनके अनुसार आपको बर्माके शान स्टेटके कोलावामें पकड़कर रखा गया है।

कुछ आपका ऐतिहासिक परिचय भी दिया जा रहा है—

(१) अक्टूबर १९४३ मे श्री सुभाषने रानी झांसी रेजीमेन्ट का संघटन किया। आप उसकी कप्तान नियुक्त की गयीं।

(२) आप १९३७ मे मद्रास विश्वविद्यालयसे डाक्टरीकी डिग्री प्राप्तकर १९४० मे सिंगापुर चली गयीं। वहाँ प्रैक्टिस कर रही थीं। १९४२ मे वहाँ जापानका अधिकार हो गया। आप मद्रास की प्रसिद्ध कांग्रेस कर्मी श्रीमती अम्मा स्वामी नाथन की एम० एल० ए० (केन्द्रीय) पुत्री हैं।

(३) आपके परिवारमे उनकी माता, दो भाई और एक बहिन हैं। ये लोग भारतमें ही हैं। आपका पत्र व्यवहार परिवारवालोंसे बराबर होता रहता है। आप स्वयं भारत आने के लिये तड़प रही हैं।

(४) एक ब्रिटिश अफसरने प्रश्न किया था कि—यदि मैं मोर्चेपर मिलता ता आप क्या करतीं ?

"मैं गोली मार देती।"

यह आपका शानदार उत्तर भारतमें विख्यात हो चुका है।

आपमे वीरता, ध्येय निष्ठा, सचाई और कर्मशीलता आदि अमूल्य गुण हैं जिनके कारण भारतमे आपके लिये अमूल्य स्थान है। प्रभु, आपको हमारे साथ स्वतन्त्रताकी प्राप्तिमे सफल करें। आजाद हिन्द फौजका सुगन्धमय पुष्प विचित्र है। जो स्वयं बगीचा लगाता है और हजारों पुष्पों को विकसित करनेका सामर्थ्य रखता है।

राजा महेन्द्र प्रताप

भारतके सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारी राजा महेन्द्र प्रतापका जन्म संयुक्तप्रान्तके मुरसान स्थानमें १८८६ में हुआ था। आप मुरसानके राजा बहादुर घनश्यामके सुपुत्र हैं। आपको हाथीराज राज्यके राजा हरनारायण सिंहने गोद ले लिया था। १० वर्षकी अवस्थामें आपके पिताका देहान्त हो गया था अतः आपके पिता का राज्य कोर्ट आव-वार्ड्सके अधीन हो गया। आपने अलीगढ़ कालेजमें उच्च शिक्षा प्राप्तकी थी। एक अंग्रेज प्रोफेसरके व्यवहारके विरुद्ध कालेजमें हड़ताल हुई। महेन्द्र प्रताप उसके नेता थे। हड़तालकी समाप्तिपर फिर आप कालेज नहीं गये।

१६ वर्षकी अवस्थामें महेन्द्र प्रतापने जिन्दके राजाकी छोटी बहनसे विवाह किया और १८ वर्षकी अवस्थामें आप पत्नी सहित यूरोप-यात्राको चले गये। यूरोपमें आप अनेक शिक्षा-संस्थाओंका निरीक्षण करते रहे और लौटनेपर वृन्दावनमें अपनी पत्नीके नामपर प्रेम महाविद्यालयकी स्थापना की। आपने इस विद्यालयको पाँचगाँव, १० लाख रुपये और वृन्दावनका अपना महल दे दिया। १९१२ में यूरोपकी द्वितीय-यात्रासे लौटनेपर आप इसी विद्यालय द्वारा राष्ट्रीय जागृतिके उद्देश्यसे रचनात्मक कार्य करने लगे।

१९१४ में प्रथम महायुद्धके प्रारम्भमें आप फिर यूरोप चले गये और वहाँ विदेशी शक्तियोंकी सहायतासे भारतकी स्वाधीनताकी

चेष्टामें रत हुए। जर्मन सम्राट् कैसरका पत्र लेकर आप तुर्कीको राह इण्डो जर्मन मिशन का नेतृत्व करते हुए अफगानिस्तान आये और अमीर अब्दुर्रहमान से बातचीत कर फिर जर्मनी चले गये। कैसरने अमीरको भारत पर आक्रमण करने की सलाह देते हुए अपनी पूर्ण सहायताका आश्वासन दिया था। उसी समयसे आप ब्रिटेन द्वारा बागी करार दिये गये और भारत का दरवाजा आपके लिये बन्द कर दिया गया।

अफगानिस्तानके अमीर अमानुल्ला आपके अभिन्न मित्र थे। आपने अफगानी नागरिकता प्राप्त कर ली और विभिन्न देशोंमें अफगानिस्तानके प्रतिनिधिके रूपमें घूमते रहे। बरलिनसे आपने 'वर्ल्ड फेडरेशन' नामक अंग्रेजी पत्रिकाका सम्पादन भी किया था।

बहुत वर्षों तक आप अज्ञात वासमें रहे। मास्को और काबुलमें आपके होनेकी अफवाह सुनी जाती थी परन्तु बादमें आप जापान चले गये। वहाँ भी ब्रिटिश राजदूतने जब आपको परेशान किया, तब आपने कहा कि आप (राजा महेन्द्रप्रताप) ब्रिटिश नहीं वरन अफगान नागरिक हैं। आपने होनोलूलू में आर्यन सेनाकी स्थापना की और भारतकी स्वतन्त्रता तथा विश्वकी समानता और एकताके लिये लगातार प्रचार करते रहे।

जापानकी पराजयके बाद जेनरल मैकआर्थरने आपकी गिरफ्तारीका आदेश दिया। १५ सितम्बरको जापानी अधिका-

रियोंने राजा महेन्द्र प्रतापको अमेरिकनोंके सुपुर्द कर दिया। इस समय यह ज्ञात नहीं है कि आप कहां और किस स्थितिमें हैं।

स्वर्गीय श्री रासविहारी बोस

भारतीय स्वाधीनता लीगके अध्यक्ष तथा बाद में श्री सुभाषचन्द्र बोसकी आजाद हिन्द सरकारके सर्वोच्च सलाहकार श्री रासविहारी बोसकी मृत्यु महायुद्धके बीचमें ही जुलाई १९४४ में टोकयोमें हुई।

सुदूरपूर्वमें भारतीय स्वातन्त्र्य आन्दोलनके आप अग्रणी थे और सच पूछा जाय तो रासविहारीही आन्दोलनके जन्मदाता थे। १९१२में भारतकी नयी राजधानी दिल्लीमें लार्ड हार्डिंगके जलूस पर श्री रासविहारी बोस तथा उनके साथियोंने (रौलट कमेटी की रिपोर्टके अनुसार) बम फेंका था। आपके साथी श्री अवध विहारीलाल और मास्टर अमीरचन्दको दिल्ली षड़यन्त्र केसमें १९१४-१५ में प्राणदण्ड दिया गया था। श्री रासविहारीकी गिरफ्तारीके लिए १२०००) रुपयेके इनामकी घोषणाकी गयी तथा आपके चित्र हिन्दुस्तान भरमें बांटे गये थे। इसके बाद १९१५ तक आप बनारस और लाहौरसे षड़यन्त्रकारी आन्दोलनका संचालन करते रहे और फिर जापान चले गये। भारत से बिना पासपोर्ट आपका जापान चला जाना वैसा ही था जैसा श्री सुभाष का ब्रिटिश गुप्तचरोंके देखते देखते भारतसे बाहर निकल

जाना। आपने चीनसे भारतमें शस्त्र भेजनेकी भी चेष्टा की परन्तु रास्तेमें ही ब्रिटिश जासूसों द्वारा जब्त कर लिये गये। ब्रिटिश अधिकारियोंकी प्रार्थनापर जापानियोंने आपको पांच दिनके भीतर शंघाईसे निकल जानेका आदेश दिया। उसके बाद श्री रासबिहारी आठ वर्ष तक अज्ञात वासमें रहे।

प्रकट होनेके बाद आपने जापानमें भारतीय स्वातन्त्र्य लीग की स्थापना की। आपने भारतीय समस्याओं पर जापानी भाषा में पांच पुस्तकें लिखी हैं तथा श्री सुन्दरलालकी पुस्तक 'भारतमें अंग्रेजी राज्य" का जापानी भाषामें अनुवाद भी किया है। आपने जापानी भाषामें भारतीय समाचार पत्र भी निकाला था। और टोकियोमें शिवमन्दिरकी स्थापनाके लिये चन्दा भी जमा किया था। भारतकी ब्रिटिश सरकारकी ओरसे उनके विरुद्ध यह आज्ञा थी कि वे जब भारतमें आयें तो उन्हें फांसी दे दी जाय। उनकी मृत्युसे भारतका एक सच्चा क्रांतिकारी दुनियां से उठ गया। आजाद सेनाके अन्य सेनानायकों में कैप्टेन मोहन सिंह—आप कपूरथला राजवंश से सम्बन्धित हैं, और कैप्टेन. बुरहानुद्दीन—आप चित्रालके मेहतरके भाई हैं, का भी स्थान महत्वपूर्ण है। आप दोनों भी लालकिलेमें बन्द हैं और परिणाम की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

कर्नल भोंसले

कर्नल जगन्नाथ भोंसले का जन्म १९०६ मे सावन्तवाडी राज्यके विरोडी गाँवमे हुआ था। आप उस भोसले वंशके रत्न है जिसमे छत्रपति शिवाजी जैसी महान विभूतिका जन्म हो चुका है। सावन्तवाडीमे प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करनेके बाद आप देहरादून के मिलेटरी कालेजमें भरती हो गये। यहांकी ट्रेनिंग समाप्त करनेके बाद आप १९२६ मे इंगलैण्ड के सढर्स्ट कालेजमे भरती हुए। आपकी योग्यता और चातुरी की सभी सम्बन्धित जनोने प्रशंसा की है। १९२८ मे आपने क्वेटा स्थित लङ्काशायर रेजीमेट मे प्रवेश किया और वहांसे एक वर्ष बाद रायल मराठा इन्फ्रेन्ट्री में आपकी बदली हो गयी। १९४० मे आप लेफ्टीनेन्ट एड्जूटेण्टके पदपर पहुचे और कोनूरमे नियत किये गये। यहीं पर उन्होने तूफानी सागरकी तरंगोमे डूबते हुए दो उच्च पदाधिकारी यूरोपियन सैनिकोंको प्राण रक्षा की थी। आपके इस कार्यकी बडी सुख्याति हुई और सम्राटने इस वीरताके लिये आपको एक मेडल प्रदान किया। १९३७ मे कर्नल भोसले कप्तान बनाये गये और उसी वर्ष लन्दनमे राजतिलक होनेवाले उ सवमे सम्मिलित हुए। इंगलैण्डसे लौटने पर आप जनरल स्टाफकी ट्रेनिंगके लिये चुने गये। आप पहले भारतीय हैं जो इस कार्यके लिये चुने गये थे। यहांकी शिक्षा समाप्त कर आप बरेली स्थित जनरल स्टाफमे नियत किये गये और वहाँ से जनरल स्टाफके अन्तर्गत लेफ्टीनेण्ट कर्नल बनाकर सिंगापुर भेजे

गये। सिंगापुर के पतनके पश्चात् आपने आजाद सेनामें प्रवेश किया और इतनी उन्नति की कि उसके चीफ आफ स्टाफ बनाये गये। उन्होंने आजाद फौजके सहस्रों भारतीय अफसरोंको शिक्षा दी है।

जापानी आत्मसमर्पण के बाद आप बैंकाकमें पकड़े गये और जहांतक पता लगता है इस समय दिल्लीके लालकिलेमें कैद हैं। आपके कई भाई बंधु बड़ौदा और सावन्तवाड़ीके सेना विभाग के ऊंचे पदोंपर हैं। आप सिन्धिया राजवंशसे सम्बन्ध रखते हैं। आपकी धर्मपत्नी चन्द्रिका बाई बहुत ही ऊँचे कुटुम्ब की हैं और बड़ौदा, कोल्हापुर और सावन्तवाड़ीके राज्य परिवारोंसे आप घनिष्ठ रूपसे सम्बन्धित हैं। आपके तीन लड़कियां हैं जिनमें सबसे बड़ी ११ वर्षकी है। पुत्रियों समेत आपकी धर्मपत्नी का निवास इन दिनों बड़ौदामें है। आपका शरीर बहुत ही सुन्दर बना हुआ है और एक सैनिकके सर्वथा योग्य है। आपका स्वभाव बहुत ही सादा और चरित्र उत्तम है। मराठीके अतिरिक्त अंगरेजी, हिंदी और उर्दू पर भी आपका अच्छा अधिकार है। आप क्रिकेटके अच्छे खिलाड़ी हैं। आपकी ८५ वर्षकी वृद्धा माता श्रीमती गङ्गाबाई सावन्तवाड़ीमें अपने दिन अपनी कुलदेवी माता भवानीकी प्रार्थनामें बिताती हैं कि जिससे अपने पुत्रके साथ पुनः मिल सकें। परमेश्वर करे उनकी प्रार्थना सफल हो और वे अपने हृदय के टुकड़ेको अपने हृदयमें पुनः लगानेका अवसर पायें।
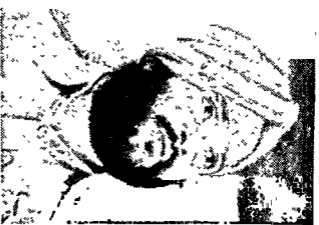
कैप्टेन जी० गिलानी
आज़ाद सेना की नींव डालनेवाले
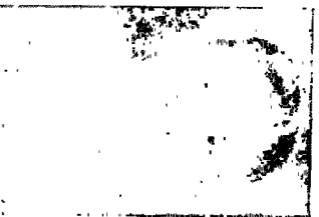
कर्नल जगन्नाथ भोंसले
आजाद सेना के चीफ आफ स्टाफ

स्वर्गीय रासबिहारी बोस
स्वाधीन भारत लीग के अध्यक्ष

कैप्टेन गुरुबख्श सिंह ढिल्लन

नेहरू ब्रिगेड के नायक

कैप्टेन सहगल

कैप्टेन शाहनवाज

सुभाष ब्रिगेड के नायक

आज़ाद सेना कंबन में
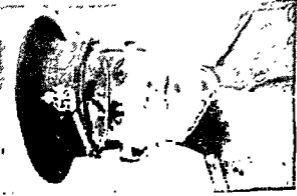
व परिच्छेदों में पाठक यह पढ़ चुके हैं कि अगस्त १९४४ के अन्तिम सप्ताहमें प्रधान सेनापति नेताजी सुभाषचन्द्र बोसकी आज्ञा से आक्रमणमूलक युद्ध आज़ाद हिन्द सेनाने बंद कर दिया था। नेताजीने उसी समय यह घोषित किया था कि वर्षा बाद पुनः आक्रमणकी तैयारी की जायगी। सितम्बरके प्रथम सप्ताहमें स्वाधीनता संघका सम्मेलन रंगूनमें प्रारम्भ हुआ। बर्मामें इस संघकी ७४ शाखायें थीं और इसके १८० प्रतिनिधि इस सम्मेलनमें उपस्थित थे। इसके बाद २२ सितम्बर को यतीन्द्र दास तथा दूसरे शहीदोंका दिवस मनाया गया। जुबली हाल भलीभांति सजाया गया था। जिसमें भगतसिंह, राजगुरु और सुखदेव जो इन्कलाब जिन्दाबाद के नारेके साथ फांसीके फूले पर चढ़े थे, चन्द्रशेखर आजाद और

सुनीति, शान्ति तथा जिन्होंने मेदिनीपुरमें मजिस्ट्रेटपर पिस्तौल से आक्रमण किया था, बीणादास,—जिसने कलकत्ता विश्व-विद्यालयके दीक्षान्त भाषणके समय गवर्नर पर गोली छोड़ी थी और यतीन्द्रदास, जिन्होंने लाहौर जेलमें भूख हड़तालके द्वारा प्राण विसर्जित किये थे, आदिके जीवन और देशके लिये कष्ट सहन पर विविध वक्ताओंके भाषण हुए। इसके बाद नेताजीने अपने प्रभावशाली भाषणमें अधिक बलिदानकी मांग की और कहा कि तुम मुझे खून दो और मैं तुम्हें आजादी दूंगा। स्वाधीनता आपसे रक्तका दान मांगती है।

जनता ने एक स्वरसे कहा, हम तैयार हैं। हम खून देंगे, अभी ले लीजिये। नेताजीने कहा,—मेरी बात सुनो। मैं आपसे भावुक उत्तर नहीं चाहता हूं। मैं उन व्यक्तियोंको चाहता हूं जो सामने बढ़कर आयें और अपने रक्तसे आत्मघाती दलके प्रतिज्ञा पत्र पर अपने हस्ताक्षर करें। जनताने उत्तर दिया हम तैयार हैं। नेताजीने कहा, किन्तु मौत के साथ होनेवाले सौदे पर साधारण स्याहीसे हस्ताक्षर नहीं हो सकते। मैं यहां मातृभूमिकी स्वाधीनताके लिये आपकी रक्त मुद्राके साक्षी रूपमें खड़ा हुआ हूं। हालमें हलचल मच गयी। हर आदमी आगे बढ़कर अपने रक्तसे नेताजीके सामने हस्ताक्षर करना चाहता था। छुरियों और दूसरे अस्त्रोंसे लोगोंने अपना अपना रक्त निकाला और नेताजी के समक्ष अपने अपने हस्ताक्षर किये।

इनमें १७ महिलायें थीं जिन्होंने सब से पहले अपने रक्त से हस्ताक्षर किये थे। इसके बाद २ अक्टूबर को गांधी जयन्ती और १७ नवम्बर को पंजाब केशरी लाला लाजपतराय की पुण्यतिथि बड़े उत्साह से मनायी गयी। बड़ी हलचल रही। इसी बीच समाचार मिला कि जापानी सेना टिड्डिमसे भाग खड़ी हुई है और चीनी सेनाएं भार्मो और ब्रिटिश सेनाएं बुथीडांग पहुंच गयी हैं। नेताजीने तो पहले ही कहा था कि आसाम और बंगालकी सीमा पर ब्रिटिश जोरदार लड़ाई करेगा। बर्मामें ब्रिटिशोंके आनेसे आजाद सेनाकी गतिविधिमें बाधा पड़ने लगी और पैसफिकमें जापानी सेना कठिनाईमें फंसी हुई थी इसलिये उधरसे भी आजाद सेनाको कोई सहायता नहीं मिल सकती थी। फिर भी नेताजी आजाद सेनाके पुनः संगठनमें उत्साह के साथ लगे हुए थे। कई डिवीजनोंके नाम बदले गये। पांचवीं छापामार सेनाका नाम बदलकर दूसरी तोपखाना सेना किया गया। इसी प्रकार और भी कितने ही महत्वपूर्ण परिवर्त्तन किये गये।

जनवरी के प्रथम सप्ताहमें नेताजीने इसका निरीक्षण किया और भाषण देते हुए कहा कि गत वर्ष आजाद सेना पहले पहल लड़ाईके मैदानमें उतरी थी। हमारी सेनाका काम इतना गौरव-मय रहा है कि जिसे मैं आशातीत मानता हूं। हमारे मित्रों और

शत्रुओं दोनोंने ही इसकी बड़ी प्रशंसा की है। शत्रु सेनासे ज
कहीं हमारी मुठभेड़ हुई है वहीं हमने उसपर गहरी चोट की है
इम्फाल के मैदानसे हम अपनी सेनाको मौसमकी खराबी औ
दूसरी असुविधाओंके कारण बिना पराजित हुए चतुराईके साथ
पीछे हटा लाये हैं। अब हमने इन सब असुविधाओं पर विजय
प्राप्त कर ली है। परन्तु आप मेंसे प्रत्येक को याद रखना चाहिये
कि हमारी सेना क्रान्तिकारियों की सेना है। हमारे सिपाही
उस प्रकार सुसज्जित नहीं हैं जिस प्रकार हमारे शत्रु सिपाही
सुसज्जित हैं। उनके अस्त्र शस्त्र और राशन हमारे अस्त्रों
और राशन से उत्तम हैं क्योंकि वे हमारे साथ युद्ध करनेके
विचारसे भारतवर्ष को लूट रहे हैं।

हमारे शत्रुओंने निश्चय किया है कि भारत को ब्रिटिश
साम्राज्यमें बनाये रखनेके लिये वे आसाममें पहला मोर्चा लेंगे।
भारतके इस हिस्सेको उन्होंने स्टालिनग्राड बना रखा है। यह वर्ष
युद्धका निर्णयात्मक वर्ष होगा। इम्फालकी पहाड़ियोंके समीप और
चटगाँवके मैदानोंमें भारतीय स्वतन्त्रता के भाग्यका निपटारा
होगा। गत वर्ष हमारे कुछ सिपाही शत्रुओंसे जाकर मिल गये
थे। मैं नहीं चाहता कि वैसी ही घटना पुनः दोहरायी जाय। यदि
कोई भाई अपनी कमजोरी और बुजदिलीसे समर क्षेत्रमें न जाना
चाहता हो तो मैं उसे पीछे लौटा दूंगा। मैं आपके सामने मोर्चे
का कोई मनमोहक चित्र नहीं खींचना चाहता। वहाँ तो आपको

भूख, प्यास और दूसरी कठिनाइयों यहां तक कि मृत्यु तकका सामना करना पड़ सकता है। हमारे शत्रुओंने बड़ी भारी तैयारी की है। अतः हम लोगोंको भी सब साधन जुटा लेने होंगे।

"दिल्ली चलो के नारेके साथ साथ अबहमने खून, खून अधिक खून का नारा भी जोड़ लिया है।"

इसका अर्थ यह है कि चालीस करोड़ भारतवासियों की स्वतन्त्रताके लिये हम अपना रक्त बहा देंगे। और इसी निमित्त शत्रुका भी खून बहाया जायगा। नेताजी के दिल्ली चलो और खून खून और अधिक खून के नारेका सब ओर से स्वागत किया गया। इसी बीच २६ जनवरी आ गयी। इण्डियन नेशनल कांग्रेस के फैसले के अनुसार भारत भरमें इस तारीख को स्वतन्त्रता दिवस मनाया जाता है। आज़ाद सेना ने बड़े समारोह से स्वतन्त्रता दिवस मनाया। इस दिन आजाद सरकार की सहायता के लिये ४० लाख रुपये एकत्र किये गये। बर्मा से कुल संग्रह ८ करोड़ रुपयों का हुआ था। फरवरी १९४५ से फिर नये उत्साह से आजाद सेना संग्राम में रत हुई। इस फौजने इस युद्धमें बड़ा जौहर दिखाया। फरवरीके दूसरे सप्ताहमें १४ वीं सेनाको जिसे अब मलाया कमान कहा जाता है, सुभाष ब्रिग्रेड के सैनिकोंने कैप्टेन सहगल के नेतृत्वमें आगे बढ़ने से रोक दिया। परन्तु सप्लाईकी त्रुटि, युद्ध सामग्री, खाद्य और

यान वाहन तथा विमानों की कमीसे इस सेनाको फिर पीछे हटना पड़ा। हथियारोंकी भी बड़ी कमी थी। मलेरियाका बड़ा जोर था और दवाइयोंका स्टाक समाप्त हो चुका था। अतः पीछे हटनेके सिवा कोई और उपाय न था। फिर भी आजाद सेना सहजमें पीछे नहीं हटी।

इरावती नदीपर दो बार उसने अंगरेजी सेनाको पीछे खदेड़ा था और जब आजाद सैनिक पीछे हटनेको विवश हुये तो उनका हृदय दुःख से इतना भरा हुआ था कि उनमें कितने ही सिपाही बच्चोंकी तरह फूट फूट कर रोये। उन लोगोंने बार बार कहा कि घास और पत्तियोंपर जीवित रहनेके बाद भी आज यह दिन देखना पड़ रहा है। किन्तु युद्धकी परिस्थिति बदल चुकी थी। योरपमें जर्मनी घुटने टेकनेके समीप था और पूर्वी मोर्चे पर भी मित्र राष्ट्रोंकी शक्ति बहुत अधिक बढ़ गयी थी। मार्चके ३ रे सप्ताहमें जापानियोंने रंगून खाली करनेकी सूचना दी। नेताजीने बहुतेरा समझाया कि रंगूनको यों ही छोड़ना ठीक नहीं है। वहां आजाद सेनाको लड़ते ही रहना चाहिये। वर्मा यदि फिर कभी ब्रिटिशोंके हाथमें जाने दिया गया तो इसका अर्थ यह होगा कि दिल्ली हमसे और भी दूर हो जायगी, और स्वतन्त्रताकी आशा मिट जायगी। परन्तु जापानी अपनी जिद पर अड़े रहे। इधर गान्धी और नेहरू ब्रिगेडको सम्मुख युद्धमें भारी हानि उठानी पड़ी थी। तथापि ब्रिटिश सेनाको उससे कहीं ज्यादा हानि उठानी पड़ी। धीरे धीरे

ब्रिटिश सेना मंडाले और मेमेयो पहुच गई। अप्रैल के प्रथम सप्ताह मे मास्को ने सोवियट और जापान मे जो तटस्थता का पैक्ट था उसे भग कर दिया। यह समाचार आज़ाद सेना के लिये अच्छा नहीं था। चौबिस अप्रैल को सुभाष बाबू रंगून से सिंगापुर चले गये, परन्तु जब तक झांसी की रानी रेजीमेण्ट की सदस्यायें वहां से नहीं हटाई गईं तब तक सुभाष बाबू ने रंगून छोडना स्वीकार नहीं किया। जापानी प्रधान सेनापति एक दिन पहले ही रंगून खाली कर गया था। कर्नल लोकनाथ के मातहत ७००० आज़ाद सैनिक रंगून की रक्षा के लिये छोड दिये गये जिससे वहा अराजकता न फैले और धन जन की हानि न हो। साथ ही यह भी निश्चय कर लिया गया था कि ब्रिटिश सेना जब रंगून पहुचेगी तब उससे युद्ध नहीं किया जायगा। यद्यपि यह सैनिक मलाया हटाये जा सकते थे, क्योंकि रंगून घिर गया था। फिर भी यह देखकर कि अब विजय का कोई सुयोग नहीं है आत्मसमर्पण का ही निश्चय किया गया।

आज़ाद सरकार ने बैंकाक जाने के पहले सब देनदारों का पैसा चुका दिया था। तीन मई को तीन वर्ष २ मास बाद रंगून पुन. ब्रिटिशो के हाथ आ गया। यद्यपि ऐरावती नदी मे जापानियों ने सर्वत्र सुरंग बिछा रखी थीं और रंगून मे घर घर आसानीसे लडाई की जा सकती थीं। परन्तु अब केवल जापानियों की प्रतिष्ठा के लिये भारतीय जन धनकी हानि

करना उचित नहीं समझा गया। रंगून में आजाद फौज ने अमन चैन की रक्षा के लिये बड़ा सुन्दर कार्य किया था। इस बीच वहां चोरी डकैती और ठगी आदि की कोई रिपोर्ट नहीं मिली। रंगून पर अधिकार करने वाले ब्रिटिश भारतीय सेनाके ब्रिगेडियर लाउडरने जनरल लोकनाथन् को विश्वास दिलाया था कि आज़ाद सेनाके प्रत्येक नर नारीको स्वतंत्रताके साथ भारत जाने का अवसर दिया जायगा। उसने उनसे यह अनुरोध किया था कि आज़ाद सैनिक अपनी युनीफार्म छोड़ दें और जो अफसर पहले ब्रिटिश भारतीय सेना में थे वे अफसर अपनी पहली युनिफार्म धारण करें। ब्रिगेडियर लाउडर ने जनरल श्री लोकनाथन् को यह भी विश्वास दिलाया था कि आज़ाद सेना के सैनिकों को सड़क कूटने आदि के काम में नहीं लगाया जायगा। ब्रिटिश भारतीय सेना के साथ आजाद सेना के सिपाही आवश्यक कार्यों में बराबरीके साथ सम्मिलित हो सकेंगे। यह भी स्वीकार किया गया था कि आजाद सेना के कैम्पोमें उन्हींका पहरा रहेगा। कैम्पोपर तिरंगा झण्डा फहरायेगा और उनको अपना राष्ट्रीय गीत गानेका अधिकार रहेगा। परन्तु दो ही सप्ताह बाद ब्रिगेडियर लाउडरकी प्रतिज्ञायें छिन्न भिन्न हो गयीं। आजाद बैंक पर सरकारी कब्जा हो गया तथा बैंकका ३५ लाख रुपया सरकारी खजानेमें सम्मिलित कर लिया गया; और ज्योंही आजाद हिन्द फौजियोंने हथियार डाल दिये त्योंही वे सब

बन्द करके रंगूनके सेन्ट्रल जेलमें बन्द कर दिये गये और उनपर ब्रिटिश सन्तरियोंका पहरा लग गया। उनसे कैदियों की भांति व्यवहार किया जाने लगा और वे ब्रिटिश भारतीय सिपाहियोंके निरीक्षणमें सड़कोंकी कुटाई, सफाई और धुलाई आदिमें लगाये गये। लगभग २०० सैनिकों को बिना मुकदमा चलाये विविध सजायें दे दी गयीं और वे इनसीन जेलमें भेज दिये गये।

सिंगापुर आजाद सेना और आजाद सरकार का पार्श्ववर्त्ती मुख्य केन्द्र था। रगूंनसे आजाद सरकार बैंकांक चली गई और सिंगापुरमें आजाद फौजके मेजर जनरल कियानी पकड़ कर पर्ल हिल जेलमें और २६००० हजार आजाद सैनिक वहां से हटाकर विदादरी कैम्पमें रखे गये। आजाद सेनाके आदि संस्थापक श्री राघवन् भी पेनांगमें पकड़े गये। रंगून पतनके बाद ही झांसीकी रानी रेजीमेन्ट तोड़ दी गयी थी।

वर्माके दूसरे स्थानोंमें जो सेना लड़ रही थी। वह भी धीरे २ गिरफ्तार कर ली गई जिसमें से ढिल्लन, सहगल और शाहनवाज तथा बुरहानुद्दीन आदि पर दिल्ली के लाल किलेमें मामला चल रहा है। कैप्टेन लक्ष्मी वर्मा के दक्षिणी शान स्टेट के कालावा में वर्मा सरकार की आज्ञा से नजर बन्द हैं। नेताजी सुभाषचन्द्र बोसके सिंगापुर पहुंचनेका विवरण पहले दिया जा चुका है। इस प्रकार उस गौरवमय परिच्छेदका शोकमय अन्त हुआ। जो नेता जीने पूर्व एशियामें भारतीय स्वतंत्रताके लिये प्रारम्भ किया था।

—:०:—

आज़ाद सेनाकी कुछ बिखरी बातें

आजाद सेना सिंगापुर से इम्फाल तक २७७५ मील चलकर आयी थी। कभी कभी इस सेनाको ऐसे भी लड़ना पड़ा है जब एक भाई एक ओर और दूसरा भाई दूसरी ओर था। कैप्टेन शाहनवाज अपने भाई से लड़े थे। डा० श्यामाप्रसाद मुकर्जीने कलकत्ते की एक सभामें आजाद फौजके सम्बन्धमें चर्चा करते हुए कहा था कि "पुत्र ब्रिटिश सेना का कैदी बन गया था और पिता जो पीछे रह गया था, आजाद फौजमें शामिल हो गया। मोर्चे पर जब लड़का पिता को समझाने बुझाने के लिये भेजा गया तो पिता ने पहले उसको गोली मार दी। फिर अपने गोली मार कर आत्म हत्या कर ली। इसी प्रकार एक दूसरे आजाद हिन्द सैनिक ने ब्रिटिश कैम्प में इसलिये आत्महत्या कर ली कि उसकी माताने उसके लिये ब्रिटिश सरकार

से क्षमा प्रार्थना कर ली थी।" आजाद सेना जब भारतमें प्रवेश कर रही थी उस समय कर्नल शाहनवाज ने उसको आदेश दिया था कि भारत पहुंचने पर जो नर नारी हमें मिलेंगे उनमें जो हम से बड़ी हैं उन्हें माता और जो हमसे छोटी हैं उन्हें बहन और बेटी मानना होगा। जो सैनिक इसकी अवज्ञा करेगा वह गोली से उड़ा दिया जायगा। यदि जापानी सैनिक हमारी माताओं को अपमानित करें तो उन्हें पहिले मौखिक चेतावनी दे दी जाय और यदि वे फिर भी न मानें तो उन्हें भी गोली से उड़ा दिया जाय। आजाद सेनाके सिपाही नेताजी के कैसे भक्त थे यह निम्नलिखित एक मुस्लिम सैनिक के बयान से विदित हो जायगा। लखनऊ सेन्ट्रल जेल से कितने ही आजाद सैनिक जेल हाल में ही छूटे हैं। उनमें से एक मुस्लिम सैनिक ने लखनऊ के नेशनल प्रेस आव इण्डिया के प्रतिनिधि से गर्व के साथ कहा हमें तनख्वाह की परवाह न थी। नेताजी की फौज का कोई सिपाही चांदी के टुकड़ों पर नहीं मरता था, उसकी तनख्वाह तो मुल्क की आजादी है। सुभाष बाबू के प्रति आजाद सैनिकों के दिलमें अपार सम्मान की भावना है। उनमें से अनेकोंने कहा है कि कांग्रेस के अनेक नेता अधिक विख्यात हैं किन्तु नेताजी जैसा शानदार कोई नहीं। हां; पण्डित जवाहरलाल नेहरू में नेताजी की बात जरूर दिखाई पड़ती है। उनके अनुसार नेताजी दिखावे से घृणा

करते थे और एक बार उस सैनिक पर बिगड़ पड़े थे, जो सिंगापुर में एक खुली सभा में उनके भाषण के समय उन्हें धूप से बचाने के लिए उनपर छतरी तान कर खड़ा हो गया था। इन सैनिकों के अनुसार नेताजी को कांग्रेस पर पूरा यकीन था और आजाद हिन्द फौज के सभी सैनिकों को कांग्रेस पर अभिमान है। एक पठान सैनिक ने कहा कि कांग्रेस तो हिन्दू मुसलमान सबकी है। जङ्ग के पहिले हम लोग अंधेरे में थे, लेकिन नेताजी ने हमारी आंखें खोल दी हैं। इन सैनिकोंमें से किसी को विश्वास नहीं है कि नेताजी मर गये। उनका कहना है कि वे जीवित हैं और परिस्थितियांवश उनको अज्ञात वास करना पड रहा है तथा उचित अवसर पर वे पुनः उनका नेतृत्व करनेके लिए अवश्य प्रकट होंगे।"

बंगाल में जैसोर जिले के झीकरगाछा में आजाद सेनाके सहस्रों सैनिक बन्दी हैं। उनमें से कुछ लोग सरकारी आज्ञा से हाल में ही छोड़े गये हैं इनमें चन्द्रप्रकाश नामक सैनिक से एक पत्रकार की वार्ता हुई है। चन्द्रप्रकाश वह व्यक्ति है जिन्होंने सुभाष बाबू को जर्मनी से जापान पहुंचाया और पुरस्कार स्वरूप नेताजी से दो वस्तुएं पायीं। एक तो हाथकी घड़ी और दूसरा लचकीला कमरबन्द। श्री चन्द्रप्रकाश ने बातचीतके दौरानमें बताया कि सुभाष बाबू सैनिकों में अतिशय लोकप्रिय थे। वे सबके साथ बराबरीका व्यवहार

करते थे। प्रत्येककी सुख सुविधापर ध्यान देते थे। वे सैनिकों के साथ बराबर उठते बैठते और उनके साथ ही खाते पीते भी थे। बर्मा, मलाया और सिंगापुरके भारतीयोंने आजाद हिन्द फौज के कोषमें पर्याप्त धन दिया था। जापानियों द्वारा प्राप्त युद्ध सामग्रीका मूल्य सुभाष बाबूने नगद चुकाया था। इन सब कारणों से आजाद हिन्द फौजकी महिमा और भी बढ़ गयी थी।

१९४४ को ४ फरवरी का जो स्वतन्त्रता संग्राम आजाद सेना ने प्रारम्भ किया था उसका वर्णन करते हुए श्री चन्द्र प्रकाश ने कहा:—जब यह सेना भारतके उत्तर पूर्व द्वारपर पहुंची तो डेढ़ सौ वर्ष पुराना ब्रिटिश साम्राज्य अपनी जड़ों समेत हिलने लगा। सुभाष बाबू स्वयं सेना का नेतृत्व कर रहे थे। उन्होंने अपनी देखरेखमें प्रथम श्रेणीके छापामार और दूसरे प्रकार के सैनिक तयार किये थे। स्वतन्त्रता की सेनाने जब डटकर हमला किया तो उसके सामने ब्रिटिश, अमरीकी, भारतीय और दूसरे भतखड़ये ठहर नहीं सके। आजाद सेना द्वारा १७ जबरदस्त लड़ाइयां लड़ी गयीं। छोटे मोटे संग्राम तो अनेकों ही हुए किन्तु देश भक्तोंके बढ़ावके सामने रनके शत्रुओंके पैर उखड़ गये और वे लज्जाजनक रीतिसे पीछे हटे। मनीपुर संग्राममें जो विजय मिली वह तो बहुत ही महत्व-पूर्ण थी। इसका कारण यह है कि आजाद फौज जिस परिस्थिति में लड़ रही थी वह उसके लिये जान बूझकर कठिन बना दी

गयी थी। सुभाष बाबूने अपने हवाई सैनिकोंको यह आदेश दिया था कि वे भारतीय घरों व नगरोंपर बमवर्षा न करें। जहां तक सम्भव हो भारतीय सैनिकों पर प्रहार न करें। बंगाल व आसामके नगरोंपर सुभाष बाबूका विमान बराबर घूमता रहता था। यह मान्य उनकी कृपापर पूर्ण रूपसे आश्रित थे।

इम्फालका घेरा पड़ चुका था और उत्तर पूर्व भारतकी ब्रिटिश छावनी पर फन्दा मजबूतीसे कसा जा रहा था। किन्तु ब्रिटेन जहां असफल होता है वहां चालोंकी गोटियोंसे लड़ाई करता है। आजाद फौज जिस समय इम्फालमें पूरी ताकतसे आक्रमणके लिये तैयार थी, उसी समय आजाद फौजका लेफ्टीनेण्ट सिंह नामक एक विश्वासघातक पूरी योजनाके साथ ब्रिटिशोंके साथ जा मिला। जब यह विश्वासघातक आगे बढ़ रहा था; तब आजाद सेनाके पहरेदारने उसका रास्ता रोका। किन्तु बेईमान सिंहने उसे भरोसा दिया कि वह आजाद फौजकी अगली टुकड़ीसे मिलनेके लिये आगे जा रहा है और उसके साथ जो नक्शा आदि हैं वे आक्रमणके लिये लाभदायक हैं। पर वह विश्वासघातक फिर नहीं लौटा। नेताजीको दूसरे दिन सवेरे यह खबर मिली। उन्होंने आजाद फौजकी स्थितिमें जल्दी जल्दी परिवर्तनकी आज्ञा दी। पर अब बहुत देर हो चुकी थी। विश्वासघातक का काम पूरा हो चुका था। उसने बहुमूल्य रहस्य शत्रुके सामने खोल दिये और ब्रिटिश तथा अमरीकी

बमवर्षा प्रारम्भ कर दी। इस प्रकार आजाद फौजकी जीत हारमें बदल गयी। ऐसी घटनाओंको रोकने के लिये नेताजीने आज्ञा दी कि कोई भी सैनिक फिर चाहे वह कितने ही ऊँचे पद पर क्यों न हो आजाद सेनाकी सीमाके आगे न जाय। अन्यथा वह गोलीसे उड़ा दिया जायगा। ऐसी स्थितिमें जापानी सेनाके साथ उनका मतभेद प्रारम्भ हुआ। परिणाम यह हुआ कि उनकी यान-वाहन और विमानोंकी सहायता बन्द हो गयी, और इस प्रकार आजाद सेना पीछे हटनेको विवश हुई।

नीलगंज कैम्प जेल से हालमें ही मुक्त आजाद फौज के पांच उड़िया नजरबन्दोंके जरिये ज्ञात हुआ है कि करीब दो हजार उड़िया बहादुर भी बरमा और मलाया में आजाद फौजमें सम्मिलित हुए जिनमें से ५०० युद्ध मोर्चे पर मारे गये। सबके सब नेहरू ब्रिगेड प्रथम पैदल बटालियन के अन्तर्गत थे जो इम्फाल मोर्चे पर लड़ा था। सैनिकों ने बताया कि हमारी वर्दियां अधिकारियों ने ले ली हैं और उसके बदले अङ्गरेजी सेना की फटी पुरानी वर्दी पहननेको दी है। बहुतसे गुरखा भी आजाद हिन्द फौजमें शामिल थे तथा वे इस समय लाल किले में पड़े हुए हैं। बहुतों पर मुकदमा चलाया जाने वाला है। मलाया एवं अन्य स्थानों में रहनेवाली गुरखा महिलायें खुशी खुशी आजाद फौज के झांसी की रानी दलमें शामिल हुई थीं। पता चला है कि प्रसिद्ध गुरखा नायक लेफ्टिनेंट रामसिंह सिंगापुर से आजाद हिन्द

रेडियो पर ब्राडकास्ट किया करते थे। आजाद हिन्द फौज के गुरखा अफसरोंमें, जिनपर मुकदमा चलाया जाने वाला है, कप्तान रामसिंह तथा तुलवीर बहादुर भी हैं। तुलवीर बहादुर नेताजी सुभाषचन्द्र बोसके अङ्ग रक्षक थे।

कोर्ट मार्शल (फौजी अदालत) के सामने बयान देते हुए कर्नल शाहनवाज ने कहा,—"आजाद फौज में शामिल होने का निर्णय करते ही मैंने इसके लिये अपने सर्वस्वके अर्थात् अपने जीवन, अपने घर, अपने परिवार और सम्राट के प्रति वफादार रहने की अपनी परम्परा सभी के बलिदान का फैसला कर डाला। मैंने अपना विरोध करने वाले अपने भाई तक से लड़ने का निश्चय किया और १९४४ में जो संग्राम छिड़ा था, उसमें वास्तव मे मैं अपने भाई से लड़ा था। वह घायल हो गया। चिन पहाड़ियों में लगभग २ मास तक मैं और मेरा भतीजा प्रतिदिन एक दूसरे का विरोध करते रहे। मेरे सामने राजा अथवा मातृ भूमिके प्रति वफादारी का प्रश्न था और मैंने मातृभूमि के प्रति वफादारी का निश्चय किया।" कर्नल शाहनवाज के पिता ३० वर्षों तक भारतीय सेना में काम कर चुके हैं। इस कुटुम्ब के ८० सदस्य इस समय भी भारतीय सेना विभाग के भिन्न-भिन्न पदों पर काम कर रहे हैं।

लेफ्टीनेण्ट चन्द्रशेखर मिश्रने, जो कुछ समय पहले तक आजाद फौजमें होनेके अभियोगमें जबलपुर जलमें बन्द थे,

आज़ाद सेनाकी कुछ बिखरी बातें

हाल में ही जेल से छूट कर बताया है कि भारत सरकारने आजाद सैनिकों को चार श्रेणियोंमें विभक्त किया है :—

श्वेत—इस श्रेणीमें आजाद सेनाके वे कैदी सम्मिलित हैं जिन्होंने जांच करने वाली अदालतको विश्वास दिलाया है कि इस समयकी असधारण परिस्थितिसे विवश होकर उन्होंने आजाद सेनामें प्रवेश किया था।

धूसर—इसमें आजाद सेनाके वे सैनिक हैं जिन्होने स्वेच्छा से सेनामें नाम लिखाया था।

कृष्ण - इसमें वे आजाद सैनिक हैं जिन्होंने स्वेच्छा से सेनामें नाम लिखाया था और ब्रिटिश सेनासे युद्ध भी किया था।

अतिकृष्ण—इसमें वे सैनिक है जो खुलकर कहते हैं कि हमने जो कुछ किया वह ठीक किया और स्वतन्त्र होने पर फिर वही करेंगे।

आजाद सेना के मामले में गवाही देनेके लिये जापान सरकारके तीन उच्च पदाधिकारी ब्रिटिश सरकारके अनुरोध पर भारत आये हैं। इन तीनोंमें प्रथम रेंजोसावाडा हैं जो आजाद हिन्द सरकारके रंगून स्थित हेडकार्टरमें राजदूत थे। दूसरे तेरू यँग याचिया हैं जो आजाद हिन्द सरकारमें जापानके कूटनीतिज्ञ दूत रह चुके हैं। और तीसरे सुनिची मतसुमोतो हैं जो जापान सरकार में वैदेशिक विभागके और पूर्व एशियाई काम काजके उप सचिव थे। एक प्रेस प्रतिनिधिसे बातचीत करते हुए मिस्टर

याचिया ने स्वीकार किया कि आजाद हिन्द सरकार जापान द्वारा बराबरी की सरकार मानी गई थी और इस सरकार के प्रति जापानी वैसा ही व्यवहार करते थे जैसा कि जर्मनी और इटली आदि स्वतन्त्र देशोंकी सरकारोंके साथ करते थे।

जापानी आत्म समर्पण के बाद बैंकाक में लगभग दो हजार आजाद सैनिक गिरफ्तार किये गये। इसमें उन दोनों डिवीजनोंके बचे हुये सैनिक थे जिन्होंने बर्मामें और वहां से पीछे हट कर स्याम आये थे। इनके पीछे हटकी चर्चा करते हुए ब्रिटिश सेना के नायकोंने कहा है कि इन सैनिकोंने उत्तरदायित्वकी अनुकरणीय भावना दिखाई है। जापानियोंने यद्यपि उन्हें निराधार छोड दिया था और सप्लाई आदिका सर्वथा अभाव था। फिर भी प्रशंसनीय रीतिसे व्यवस्थापूर्वक पीछे हटे। यहीं पर आजाद सरकारके पांच सदस्य गिरफ्तार किये गये थे। आजाद सेनाके चीफ आफ स्टाफ मेजर जनरल जे० के० भोसले भी यहां पकड़े गये थे। आजाद सेनाके बर्मासे पीछे हटने पर आजाद सरकारका हेडक्वार्टर बैंकाक लाया गया था।

आजाद सेनाके बहादुर ब्रिगेड का नेतृत्व कप्तान बुरहा--नुद्दीनके हाथों में था। आप चित्रालके मेहतरके भाई हैं। यह ब्रिगेड युद्धकालमें तोड़ फोडके काममें लगा रहता था और इसी निमित्त शाही सेनाके पीछे और भारतीय सीमाके अन्दर तक इसके सैनिक घुस जाते थे। कभी-कभी

-सामने की लड़ाई में भी यह लोग भेजे जाते थे। रंगून के पतनके समय इस ब्रिगेडके सहायक अफसर राजाराम सिन्देने जो अभी हालमें पूनाके निकटवर्ती दीघी कैम्पसे छोड़े गये हैं, एक प्रेस प्रतिनिधिको बताया कि इम्फाल मोर्चे पर आजाद सेना युद्ध सामग्री, अस्त्र शस्त्र और खाद्य पदार्थों की सप्लाईके अभावमें पीछे हटी। श्रीयुत सिन्दे रंगूनपर ब्रिटिश सेना के अधिकारके समय जो ७००० आजाद सैनिक रह गये थे उनमें सम्मिलित थे। आप इसी वर्षकी मईमें पकड़े गये और रंगूनसे कलकत्ते के समीप झीकरगाछा कैम्पमें रक्खे गये थे। आपने बताया कि इस कैम्पमें हमारे रुपये पैसे और कपड़े ले लिये गये थे। आपने नेताजीके सम्बन्धमें बताया कि वे मोर्चे पर उपस्थित रह कर सेनाओंको आदेश देते थे। वे सैनिक वेशमें पिस्तौल और तलवारसे सुसज्जित रहते थे। वे बहुधा अपना राशन अन्य अफसरोंकी भाँति अपनी पीठ पर लाद कर लाते थे। यह खाद्य १० दिनों तक चलता था। नेताजी अपने मन्त्रिमण्डलके सदस्योंके साथ यात्रा करते थे। सिन्दे आजाद सेनामें भरती होनेके पहले ६ वर्ष तक भारतीय सेनामें कम कर चुके हैं। उन्होंने कहा कि आजाद फौजमें हम लोगोंको ६ मास तक जंगली युद्ध, टामी बन्दूकके व्यवहार तथा मशीनगन आदि चलानेकी शिक्षा दी गई थी। और फिर मोर्चे पर भेजा गया था। यह हथियार वही थे जो अङ्गरेज सेना जापानियोंसे परास्त होते समय वहीं छोड़ कर भाग आयी थी।

आजाद हिन्द फौजके अफसर जिनपर मुकद्दमा चल रहा है या चलनेकी सम्भावना है, दिल्लीके लाल किले में मौजूद हैं। कर्नल लोकनाथन, कर्नल एन०एस० गिल, कर्नल भोंसले, मेजर एन०एस० भगत, मेजर रियाज, निरान सिंह, कैप्टन गुरमुख सिंह, कैप्टन सुन्दरम, कैप्टन अमाहम, कैप्टन कयूम, कैप्टेन जहांगीर, कैप्टन बद्रानुद्दीन, कैप्टन अब्दुल रशीद, कैप्टन अजीज अहमद, कैप्टन आर० के० अर्शाद, कैप्टेन ईशान कादिर, कैप्टन मगल सिंह, कैप्टन हबीबुर रहमान, सैकण्ड लैफ्टनेण्ट लिमू सिंह, काकर सिंह, मेहर सिंह, ब्रह्मदेव पाठक, सोहन सिंह, एस० एन० चोपड़ा, जी० एस० फागवन, पी० डी० शोढी, आत्मा सिंह, माल सिंह, कर्तार सिंह परदेशी, हवलदार मेला सिंह, हवलदार मेजर ओंकार सिंह, हवलदार होशियार सिंह (१७ वीं डोगरा रेजीमेंट) जमादार डी० जी० गोंडा (मैसूर पैदल सेना) नायक सुलतान खान, कनवल सिंह, जमादार केसरीचन्द्र शर्मा, दरपू सिंह, हवलदार बहादुर गुरुंग, निकाराम, शिवचरण सिंह डोगरा, जमादार उत्तम सिंह बगाल, जमादार फतेहखान, सूबेदार सिंगारा सिंह, कुछ नागरिक भी मुकद्दमेके लिये रोके गये हैं। आजाद हिन्द सैनिकोंमेंसे कर्नल भोंसले महाराजा बड़ौदाके सम्बन्धी हैं। कैप्टन बद्रानुद्दीन चित्रालके शासकके भाई हैं। काकर सिंह और मेहर सिंह सुभास बसुके अंगरक्षक थे। इनमें २० लालकिलेमें हैं। दूसरे लोग अन्य स्थानों पर कैम्पोंमें हैं। उनके साथ २०० आजाद हिन्द सैनिक लालकिलेमें कैद हैं।

प्रेम पूजारी देशभक्त राजा महेन्द्र प्रताप

दिल्लीका ऐतिहासिक लाल किला
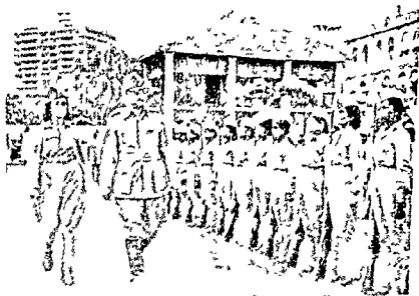
नेताजी और कैप्टेन डा० लक्ष्मी द्वारा झासीकी रानी रेजिमेण्टका निरीक्षण

झासीकी रानी रेजीमेण्टकी सदस्याएं

नेताजी कहाँ हैं ?

आज़ाद रेडियो सिंगापुरसे सुभाष बाबूने अपना जो भाषण ब्राडकास्ट किया था वह उनका अन्तिम ब्राडकास्ट कहा जाता है। इस भाषण में सुभाष बाबूने दक्षिण पूर्व एशियामें रहने वाले भारतीयोंके त्याग और बलिदान की बड़ी प्रशंसा की और कहा,—क्षणिक असफलताओं से हमें निराश नहीं होना चाहिये। सुभाष बाबूके निकटस्थ मित्र भी इसके बाद केवल यही जानते हैं कि वे महत्वपूर्ण परामर्शके लिये बैंकाक होते हुए टोकियो गये हैं।

टोकियो न्यूज एजेन्सी ने २३ अगस्त को प्रचार किया कि सुभाषचन्द्र बोस १८ अगस्त को हवाई जहाज की दुर्घटना से बुरी तरह घायल होकर एक अस्पतालमें उसी रात को इस संसार से चल बसे। इस संवाद को भारत वर्ष में रायटरने २६ अगस्त

की दोपहर में प्रचारित किया। जिससे देशभर में विशेषतः कलकत्ते में भारी शोक छा गया। सर्वत्र बाजार बन्द हो गये। कलकत्ता कार्पोरेशन की सभा उनके सम्मान में स्थगित रही।

किन्तु १९४२ की फरवरी में भी रायटर सुभाष बाबू के सम्बन्धमें इसी आशय का मिथ्या समाचार विश्वभर में फैलाने का अपराधी हो चुका था,—अतः इस सम्वाद पर यद्यपि पूर्ण रूप से सबका विश्वास नहीं जमा; फिर भी सम्पूर्ण देशमें में गम्भीर शोक छा गया। महात्मा गांधी तथा सरदार पटेल आदि नेताओं ने सहानुभूति सूचक तार श्री बोस के कुटुम्बियों को भेजे; पण्डित जवाहरलालजी नेहरू तो सुभाष बाबू की मृत्यु सुनकर एक सभा में भाषण देते हुए रो पड़े; किन्तु बाद को अमरीकी युनाइटेड प्रेस के सम्वाददाता ने इसका खण्डन करते हुए कहा कि सुभाष बाबू इन्दु चीनमें देखे गये हैं। तब से अब तक यह प्रश्न विवादास्पद बना हुआ है। गत २२ से २४ सितम्बर तक बम्बईमें आल इण्डिया कांग्रेस कमेटीका जो अधिवेशन हुआ था; उसमें जिन देशभक्तोंकी मृत्यु पर शोक प्रकट किया गया था उनमें सुभाष बाबू का नाम नहीं था। इस पर कुछ प्रतिनिधियों ने बड़ी आपत्ति की। उत्तर में आचार्य कृपलानी ने कहा कि सुभाष बाबू की मृत्यु पर वे ही शोक प्रकट कर सकते हैं जो उन्हें

मृत समझते हैं। हम तो यह मानते ही नहीं कि वे मरे हैं। सुभाष बाबू के बड़े भ्राता श्री शरद्चन्द्र बोस ने भी एक प्रेस-भेंट मे यह स्वीकार किया कि सुभाष बाबू के जीवित होने मे उनका विश्वास है। पं० जवाहरलाल नेहरू भी इसी आशय का मत एकाधिक बार प्रकट कर चुके हैं। परन्तु झाँसी की रानी रेजीमेन्ट की अध्यक्षा कैप्टेन डा० लक्ष्मी का मत है कि सुभाष बाबु अब इस लोकमे नहीं हैं। सिन्ध के अनेको व्यापारियोने भी जिनमें अधिकांश हागकाग से आये हैं, इसी मत का समर्थन किया है। कहा जा चुका है कि जापानके आत्मसमर्पण के समय सुभाष बाबू सिंगापुर मे थे। किन्तु यह सम्वाद पाते ही वे विमान द्वारा बैंकाक चले गये और वहा से टोकियो जा रहे थे कि विमान आग लगकर ईंट के पजावा मे गिर पडा। सुभाष बाबू के सिरमे गहरी चोट लगी और उनके कपड़ो मे आग लग गयी। कर्नल अब्दुर रहमान नामक उनके साथी का उनके बचाने की चेष्टा मे हाथ और मुंह बुरी तरह झुलस गया। दुर्घटना के ६ घण्टे वाद सुभाष बाबू ने इस ससार का त्याग कर दिया और बर्मा के थंकोकू स्थानमे उनका दाह-संस्कार किया गया। कर्नल रहमान कोर्ट मार्शल के सामने गवाही देने के लिये दिल्ली लाये गये हैं। वहा उन्होने सुभाष बाबूका ऊपर लिखी परिस्थिति मे स्वर्गवास होना स्वीकार किया

हैं। वे सुभाष बाबूकी हाथ घड़ी अपने साथ लाये थे, जिसे उन्होंने दिल्लीमें नेहरूजीके सुपुर्द कर दिया। नेहरूजीने कलकत्ता पधारने पर गत ५ दिसम्बर को श्री शरत्चन्द्र बोसको यह घड़ी दे दी है। संवाद है कि उनके शरीरकी भस्मको भारत लानेका प्रयत्न हो रहा है। पर यह प्रश्न अभी तक अन्तिम रूप से सुलझा नहीं।

समाचार पत्रोंमे अभी तक इस सम्बन्ध मे उभय प्रकार के सम्वाद प्रकाशित होते रहते हैं। इधर कई ज्योतिषियोंने सुभाष बाबू की जन्म पत्री से यह सिद्ध किया है कि वे अभी जीवित हैं और फिर भारत वापस लौटेंगे। उक्त लेखोंका सार मर्म यह है:—

श्री शम्भुसेन गुप्त लिखते हैं, सुभाष बाबू से हमने एक बार उनकी जन्म तिथि और समय के लिये याचना की थी। सन् १९४० के जून की बात है। कलकत्ते मे डलहौजी स्क्वायर में अन्धकूप स्मृति (ब्लैक होल मनूमेन्ट) को हटाने के लिये आन्दोलन चल रहा था। उन्होंने हम से कहा—शनिवार २३ जनवरी १८९७ में १२ बजकर १३ मिनट पर मेरा जन्म हुआ था। उस समय का राशि चक्र हम नीचे दे रहे हैं।
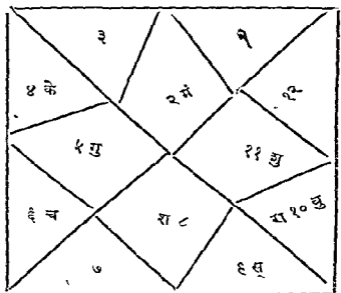
उन्होंने मुझसे कहा—'मेरी आयु कब तक है देखियेगा" और कुछ दिन बाद उनकी जन्मकुण्डली बनाकर मैं उनसे मिलने गया। मैंने उनसे कहा, आपने मुझे अपना जो जन्म समय दिया है उसमें यदि दो मिनट और जोड़ दिये जायें अर्थात् १२ बजकर १५ मिनट कर दिया जाय तो आपके अतीत की घटनाओं के साथ फल मिल जाता है। आपका जीवन दीर्घ है। विश्व कवि रवि बाबूकी जन्मकुण्डली में जिस प्रकार दीर्घायु पाई जाती है, उसी भांति आपकी भी है। मैंने ७२ वर्ष तक आप की आयु पाई है। जन्म कुण्डली में शुक्र ग्रहके साथ ऐसे सुयोग

से बैठा है कि ७२ सालके पहिले आपकी मृत्यु कभी नहीं हो सकती। आपके वर्तमानके विषय पर एक भविष्यवाणी कर रहा हूं,—"शीघ्र ही आपको जेल जाना पड़ेगा और १६४१ के जनवरी मासमें आपको समुद्र यात्रा या सुदूर भ्रमण करना ही होगा।" उन्होंने मुझसे पूछा कि यदि जेल हुई तो सुदूर यात्रा या समुद्र भ्रमण किस प्रकार सम्भव होगा? मैंने कहा,—उस समय इस प्रकारकी कोई न कोई घटना अवश्य होगी, जिससे आपको समुद्र यात्रा या सुदूर भ्रमण करना ही पड़ेगा।

इसके बाद जुलाई १६४० में सुभाष बाबू गिरफ्तार हो गये। जेलमें अनशन करनेके फलस्वरूप दिसम्बर मासमें उन्हें उनके एलगिन रोड वाले मकानमें नजरबन्द किया गया। १६४१ की २६ जनवरी को अचानक कलकत्तासे वे फरार हो गये।

सुभाष बाबू कहां और किस प्रकार हैं, ऐसा प्रश्न मुझसे सदा ही पूछा जाता है। उनकी जन्मकुण्डली से फल इस प्रकार पाया जाता है। सन् १६४५ के २७ अगस्तके पहले को रात में वे जहां थे वहांसे ६७० मील दूरके एक पर्वतीय गुप्त स्थान में चले गये हैं। उनके साथ ५ और सहकर्मी भी हैं। कितने ही प्रयत्न करने पर भी १६ दिसम्बर के पूर्व उनका पता नहीं लगेगा। इसके बाद ही उनके गिरफ्तार होनेकी सम्भावना है। १६४६ के जनवरी मास में उनके भारत आनेकी सम्भावना है। उस समय अगर वह नहीं लौटे तो १६४७ के २३ मार्च से अप्रैल के अन्त तक तक अवश्य-

लौटेंगे। १९४७ में भारत पूर्ण स्वतंत्र हो जायगा। सुभाष ही स्वतन्त्र भारतके निर्वाचित सभापति होंगे। बंगाल के अन्य ज्योतिषियोंके अतिरिक्त प्रयाग के सुप्रसिद्ध ज्योतिषाचार्य पं० इन्द्रनारायण द्विवेदी ने भी सुभाष बाबू के जन्म पत्रके आधार पर उन्हें दीर्घजीवी बताया है। इधर प्रबल अफवाह है कि सुभाष बाबू इन दिनों रूस मे विद्यमान है। जो भी हो, सुभाष बाबू अपने अनुपम कार्यों के कारण अखिल भारतमें आज देवता की भांति पूजित हैं। २४ अप्रैल को रंगून से सिंगापुर हटते समय सैनिकों और सेनायकों के नाम आपका आदेश इस प्रकार था :—

आजाद हिन्द फौजके बहादुर अफसरों और सिपाहियों !

भरे हुए हृदय से मैं आजाद सेना के उन नायकों और सैनिकों की याद करता हूं जो आजादी के लिये शत्रुओं से अलग-अलग मोर्चों पर लोहा ले चुके हैं और अभी तक लड़ रहे हैं तथा इम्फाल और बर्मा के मोर्चों पर काम आ चुके हैं,— उन सबकी याद करता हूं। पर यह तो स्वाधीनताके युद्धकी पहली झपट है। मैं जन्म से ही आशावादी हूं और पराजय स्वीकार करने के लिये तैयार नहीं। आराकान के जंगलों और आसाम के शैल क्षेत्रों में आपने जो वीरता प्रदर्शित की है, वह स्वाधीनता संग्राम के इतिहास मे अमिट रहेगी।

इनक़लाब जिन्दाबाद
आज़ाद हिन्द जिन्दाबाद

जय हिन्द

सुभाषचन्द्र बोस

२४ अप्रैल १६४५

इस प्रकरण को समाप्त करने के पूर्व हम अपने पाठकों को सरदार वल्लभ भाई पटेल के उन शब्दों की याद दिलाना चाहते हैं जो उन्होंने गत ८ दिसम्बर को कलकत्ते के देश प्रिय पार्क की सभा में नेताजी सुभाषचन्द्र बोस को श्रद्धांजलि देते हुए कहे थे। सरदार पटेल ने कहा :—

नेताजी कुछ लोगों की दृष्टि में देश द्रोही हो सकते हैं, पर हम सब के लिये तो वे परम देशभक्त हैं। हम उनकी वीरता की पूजा करते हैं,—हम उनके बलिदान की पूजा करते हैं। हम उनकी हिम्मत की पूजा करते हैं।"

उफ संहार

आजाद सेना के मामले पर भाषण देते हुये पण्डित जवाहरलालजी नेहरू ने दिल्ली मे कहा था कि यह मामला केवल कानूनी उलझनका ही नहीं है। यह तो उससे कहीं बड़ी बातों से सम्बन्धित है। इसने सम्पूर्ण राष्ट्र की भावना को स्पर्श किया है। आजाद सेना का लक्ष्य भारत की स्वतन्त्रता रहा है। और इस दिशामे उसने भारतीय भावनाओं और आकांक्षाओं का ठीक-ठीक प्रतिनिधित्व किया है। इसके अतिरिक्त देशकी सभी संस्थायें जैसे लीग, महासभा और अकाली दल आदि काम्रेस के साथ इस बात पर सहमत हैं कि आजाद सेना के अफसर और सिपाही छोड़ दिये जायं। भारतीय जनता को ही इस मामले की अन्तिम अदालत और इस मुकदमे का

पथ होना चाहिये। नेहरूजी की यह वाणी भारत के कोने कोने में गूंज रही है और हिमालय से कन्या कुमारी तथा अटक से कटक तक आजाद सेना की मुक्ति की मांग प्रतिध्वनित की जा रही है।

लाहौर में तो इसीलिये दिवाली तक नहीं मनाई गई। रावलपिण्डी, कैम्पवेलपुर, लखनऊ, मदुरा, कलकत्ता और बम्बई आदि में बड़े उत्साह से आजाद सेना दिवस मनाये गये। मदुरा में तो नवम्बर की सात तारीख को गोली भी चली। लखनऊ में हिन्दू मुसलमान विद्यार्थियों पर लाठी वर्षा की गई। भिन्न भिन्न स्थानों में कितने ही व्यक्ति गिरफ्तार किये गये। सब से बड़ी घटना कलकत्ता की है। जहाँ २१ नवम्बर को आजाद सेना दिवस के उपलक्ष में छात्रोंने बड़ा भारी जलूस निकाला था। यह जलूस जब वेलिङ्गटन स्कायर से धर्मतल्ला पहुँचा तो पुलिस ने इसको आगे बढ़ने से रोक दिया। जब छात्रों ने आगे बढ़ने के लिये अधीरता दिखाई तो उनपर गोली चलाई गई। घटनास्थल पर पहले दिन तीन व्यक्ति मारे गये और लगभग २०० घायल हुये। फिर भी छात्र आगे बढ़ने की मांग पर डटे रहे। घटनास्थल पर बङ्गाल के गवर्नर मि० केसी भी पहुचे। श्री शरतचन्द्र बोस के अतिरिक्त बङ्गाल के प्रायः सभी नेता यहां पहले से ही उपस्थित थे। सबने विद्यार्थियों को जलूस भङ्ग करनेकी सलाह दी पर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। जलूसः

रात भर वही बैठा रहा। दूसरे दिन समस्त कलकत्ते मे जबरदस्त हडताल हुई। हिन्दू मुसलमान सबकी दूकानें बन्द रहीं। शहर भरमे उत्तेजना का जोर था। इस दिन कलकत्तेका दृश्य अभूतपूर्व था। कलकत्ते के इतिहास मे यह पहली बात थी कि पुलिस पहरे से हटा ली गई थी। ट्राम, बस, रिक्सा और घोडा गाडी आदि का चलना बन्द था। यहा तक कि साइकिल भी नहीं निकलती दीखती थी। दूसरे दिन कई स्थानोमे फिर गोलिया चलीं और कितने ही मारे गये। पुलिस पर भी इतस्तत पत्थर फके गये। बहुत सी सैनिक लारियाँ जलाई गईं। परन्तु अन्त मे छात्रो की विजय हुई और जिस रास्तेसे पुलिस इसे नहीं जाने देना चाहती थी उसी रास्तेसे जलूस दिल्ली चलो और आजाद सेनाको छोड दो की प्रचण्ड ध्वनि के साथ विजयी बनकर निकला। इस दुर्घटनामें ४० से अधिक व्यक्ति मरे और ५०० से अधिक घायल हुये। कलकत्तेकी इस घटना की देश भरमे गहरी प्रतिक्रिया हुई। जगह जगह हडतालें हुईं और बम्बई मे तो छात्रो पर गोली भी चलाई गई।

इस प्रकार स्पष्ट है कि आजाद सेनाके प्रति प्रत्येक भारतीयके हृदय में गम्भीर सहानुभूति है। आजाद सेनाके जो सैनिक जेला से छूटते हैं जनता उनका जलूस निकालती है। उनको पुष्प मालायें अर्पित करती है और उनके निवास तथा आहारका प्रबन्ध करती है। आजाद सेनाकी सहायताके लिये कांग्रेस की

कार्य समितिने सरदार पटेल के नेतृत्व में एक समिति बनाई है। ऐंग्लो इण्डियन पत्रोंने आजाद सेनाको देशद्रोही बताया है। यू० पी० के गवर्नर सर मारिस हैलेटने भी इन सैनिकों पर इसी प्रकारका आक्षेप किया है। यू० पी० पुलिसको इन मुक्त सैनिकों पर निगाह रखने तकका आदेश दिया गया है। इससे भारतीय जनता घोर असन्तुष्ट और क्षुब्ध हुई है। कहनेका अभिप्राय यह है कि अपने इन बहादुर भाइयोंके विरुद्ध कुछ भी सुननेके लिये वह तैयार नहीं है, क्योंकि यह अब सूर्य्यके प्रकाश की तरह स्पष्ट हो चुका है कि इस सेना का उद्देश्य भारतको स्वतन्त्र करनेका था। जापानियोंकी सहायता करना इसके ध्यानमें भी नहीं था। भारत सरकारने गत ३० नवम्बर को प्रकाशित एक विज्ञप्ति द्वारा इसकी वर्त्तमान स्थिति पर जो प्रकाश डाला है, उसका सार नीचे की पंक्तियों मे दिया जाता है :—

सुदूरपूर्व के युद्ध मे ६० (साठ) सहस्र भारतीय सैनिक जापान के कैदी बने थे। शत्रु द्वारा विविध भांति के कष्ट दिये जाने पर भी इनमें ४० (चालीस) हजार राजभक्त बने रहे। शेष २० (बीस) हजार आजाद फौज में भर्ती हुए; जिनमे ६००० (६ हजार) अभी तक भारत नहीं पहुंचे। १००० (एक हजार) का पता नही लगा। शेष १४००० (चौदह हजार) मे २५०० तो भारतीय सेना में पुनः अपने पूर्व के पदों पर लिये जा रहे हैं। ११५०० में ६ (छै)

हजार ऐसे हैं जो शत्रु के प्रचार कार्य और वहाँ की परिस्थिति से विवश होकर आजाद सेना में गये थे। इनको जापान द्वारा युद्ध वन्दी बनाये गये अन्य सैनिकों की भाँति अब तक पूरा वेतन दिया जा रहा है; और अब उन्हें ४२ दिनका वेतन और देकर विदा किया गया है जिससे वे समाज में अपना-अपना स्थान बना सकें। बाकी बचे ५५०० में १७०० की जाँच-पड़ताल अभी प्रारम्भिक अवस्था मे है। शेष ३८०० ऐसे हैं जो शत्रु को भारत आक्रमण में सहायता देना चाहते थे। ऐसे सैनिक सेना से निकाल दिये जायेंगे और उनको वेतन नहीं मिलेगा। हाँ; लगभग ५० सैनिक, इनकी संख्या घटकर २० भी रह सकती है, ऐसे हैं जिन पर क्रूरता, हत्या आदि के गम्भीर अभियोग हैं। केवल इन्हीं पर मामला चलेगा; परन्तु इनमें भी सबको अपने बचाव की पूरी सुविधा दी जायगी। सरकार बदले की भावना से कोई काम नहीं करना चाहती।

जापानी साक्षियों के विचार

लाल किलेमें कोर्ट मार्शल के सामने आजाद फौज के सम्बन्ध में गवाही देते हुए जापानी वैदेशिक विभाग के भूतपूर्व उपाध्यक्ष मि० रेंजू स्वाडा ने बताया कि मि० हचिया आजाद हिन्द सरकारमें जापान के प्रतिनिधि बनाकर भेजे गये थे। जापान के सरकारी गजट में यह घोषणा की गयी थी कि मि० हचिया

आजाद हिन्द सरकार में जापान का प्रतिनिधित्व करेंगे। मि० हचिया रंगून पहुंच कर आजाद सरकार के वैदेशिक विभाग में कर्नल चटर्जी और श्री एस० ए० अय्यर से मिले। परन्तु उनके पास राजचिह्न नहीं थे। अतः नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने उनसे मिलना स्वीकार नहीं किया। इस पर मि० हचिया ने टोकियो को सूचित किया—जहां से उनको दूनके राज चिह्न भेजे गये। इन पर जापान-सम्राट् के हस्ताक्षर थे।" इसी कोर्ट में मि० स्वाडा के बाद मि० हचिया और बर्मा स्थित जापानी सेनाके प्रमुख केन्द्र के सर्वाधिकारी मि० तादाशी कटाकुरा की भी गवाही हुई। मि० हचिया ने स्वीकार किया कि जापान सरकार के दूत होकर वे रंगून आये और कर्नल चटर्जी तथा मि० अय्यरसे मिले थे। राज चिह्न न होने से नेताजी से वे मिलने में असमर्थ रहे और राज चिह्नके लिये टोकियो तार देना पड़ा। टोकियो से उत्तर मिला कि राज चिह्न भेजे जा रहे हैं। मि० कटाकुरा ने कहा कि जापानी सेना की दक्षिण पूर्वी कमान और आजाद हिन्द सरकार के बीच यह समझौता हो गया था कि जापानी सेना भारतके जितने क्षत्र पर अधिकार करेगी,—उतना सब स्थान आजाद हिन्द सरकार को सौंप दिया जायगा और उस पर आजाद हिन्द सरकार ही शासन करेगी। भारत प्रवेश के पूर्व उभय पक्ष से इस सम्बन्धमें साफ-साफ घोषणा भी की गयी थी। जापान की घोषणा थी कि हम ब्रिटेन से लड़ेंगे, भारतीयों से

नहीं। जीत में हमें जो भी धन-सम्पत्ति या भूमि मिलेगी, हम वह सब आजाद हिन्द सरकार को दे देंगे।" नेताजीने घोषित किया था कि,—"हमलोग हिन्दुस्तान की आजादी के लिये लड़ रहे हैं। जापानियों द्वारा अधिकृत सम्पूर्ण इलाका भारतीयों को दे दिया जायगा।" जनरल कटाकुरा ने अपनी गवाही में यह भी खुलासा किया कि जापानने आजाद सेना से माल ढुलाने, सड़क कूटने और अन्य प्रकार के मोटे काम कभी नहीं लिये गये। आजाद सेना अपने ही सेनापति के नेतृत्व में लड़ती थी। जापानी सेना और आजाद सेनामें बराबरी का दर्जा था। इसी फौजी अदालत में जापानी वैदेशिक विभाग के भूतपूर्व अफसर मि० ओहता और मि० मात्सुमोता की भी गवाही हुई। मि० ओहता ने स्वीकार किया कि १९४३ के २१ अक्तूबर को आजाद हिन्द सरकार की स्थापना घोषित की गयी और २३ अक्तूबरको जापानी सरकार ने इसे स्वीकार करते हुए घोषणा की कि श्री सुभाषचन्द्र बोसके नेतृत्व में स्वाधीन भारत की प्राथमिक सरकार कायम हुई है। जापान सरकार को विश्वास है कि यह एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक कदम है जो भारतीयों को अपने देश को स्वाधीन बनाने की चिर प्रतीक्षित आकांक्षा की ओर उठाया गया है। अतः जापान सरकार इसे स्वीकार करती है और इसे अपने उद्देश की पूर्ति में सब प्रकार की सहायता प्रदान करेगी। ६ नवम्बर को टोकियो में जो बृहत्तर ईस्ट एशिया के देशोंका

सम्मेलन हुआ था। उसमें भाषण देते हुए जापान के तत्कालीन प्रधान और समर सचिव जनरल तोजो ने कहा कि आजाद हिन्द सरकार बन चुकी है। भारतीय देशभक्त इस सरकारके अधीन अपने महान् लक्ष्य को पूरा करना चाहते हैं। जापान सरकार इसे सब प्रकार की सहायता देना स्वीकार कर चुकी है। यह अपनी सत्यता के प्रमाण मे शीघ्र ही अण्डमन और निकोबार टापू आजाद हिन्द सरकार को लौटा देना चाहती है। आपने फिर कहा कि जापान स्वतन्त्रता के युद्धमें भारत को सब प्रकार का सहयोग देने के लिये कटिबद्ध है। जनरल मत्सुमोता ने कहा कि आजाद हिन्द सरकार जर्मनी, इटली, मंचुको, क्रोटिया, नानकिंग थाईलैंड और फिलिपाइन आदि द्वारा स्वीकृत थी। सुभाष बाबू इसके प्रधान थे। व जापान सरकार की व्यवस्था से जर्मनी से टोकियो आये थे। जापान सरकार का भारतके सम्बन्धमे युद्ध उद्देश भारत को स्वतन्त्र करना था।

स्फुट बातें

आजाद हिन्द सरकार तथा बैंकके सम्बन्धमे पिछले पृष्ठोंमे कुछ प्रकाश डाला जा चुका है। बैंकके श्रीदीनानाथ नामक डाइरेक्टरने फौजी अदालत के समक्ष गवाही देते हुए बैंक तथा आजाद हिन्द सरकार के सम्बन्धमें कुछ और भी बातें बतलाई हैं जिनसे पता चलता है कि बैंक का मुख्य कार्यालय रंगून के ६४ पार्क स्ट्रीट में था। यह बर्मा में प्रचलित रजिस्ट्री कानून के अनुसार रजि-

स्टर्ड किया गया था। आजाद हिन्द सरकार के अर्थ विभाग और नेताजी फण्ड के रुपये इसमें रखे जाते थे। वर्मा से.१५ (पन्द्रह) करोड़ और मलाया से ५ (पांच) करोड़ रुपये संग्रह किये गये थे। सरकार के अतिरिक्त जनता भी इसके द्वारा अपना काम करती थी। बैंक १९४४ के अप्रैल से १९४५ के मई मास के मध्य तक चलता रहा। रंगून पर अधिकार करने के पश्चात् ब्रिटिशों ने इसे बन्द कर दिया। उस समय बैंकमे आजाद सरकार के ३५ (पैंतिस) लाख रुपये संचित थे। बैंक के शेयर होल्डर भी थे जिनके ५० लाख बैंक में थे। ब्रिटिश अधिकार में आने के पहले डाइरेक्टर प्रतिमास बैंक की स्थिति पर विचार करते थे।

आजाद सरकार के सम्बन्ध में श्री दीनानाथ ने कहा कि रंगून के समीप जियावाड़ी इस्टेट में आजाद हिन्द सरकार का हेड क्वार्टर था। यह पूरी भारतीय बस्ती है जिसकी जन संख्या १५००० हजार है। यह स्थान किसी भारतीय का ही है और इसके मैनेजर श्री परमानन्द ने इसे आजाद सरकार को दिया था। इस ५० मील विस्तृत इलाके में आजाद हिन्द सरकार का पूरा अधिकार था। इसपर आजाद हिन्द सेना का पहरा था। यहां जापानी और वर्मा सरकार की कुछ भी नहीं चलती थी। आजाद सरकार बनने के पहले जापानी कितने ही भारतीयों को ब्रिटिश गुप्तचर होने के सन्देह में कठोर

दण्ड दे चुके थे। बर्मी लुटेरे भी कितने ही भारतीयों को लूट और मार चुके थे। आजाद सरकार के बनते ही भारतीय नागरिकों के कष्ट मिट गये। इस क्षेत्रमें एक बड़ी चीनी की मिल और सूत, कम्बल और हेशियन बनाने के कई कारखाने थे।

आजाद सरकार के प्रकाशन और प्रचार विभाग के अध्यक्ष श्री एस० ए० अय्यर की गवाही से ज्ञात हुआ कि आजाद सरकार की ओर से १६४३ के बंगाल दुर्भिक्ष के समय श्री सुभाष बाबू ने १ लाख टन चावल भेजने का आफर दिया था। आजाद सरकार स्वाधीन बनाये गये क्षेत्रों मे शासन करती थी। वहां जापानी बैंक कारबार नहीं कर पाती थीं। केवल आजाद बैंक ही वहां काम करती थी। आजाद सेना मे भर्ती स्वेच्छा से होती थी। जापानियो का हस्तक्षेप सहन नहीं किया जाता था।

राजा महेन्द्र प्रताप की जनरल मैकार्थर द्वारा गिरफ्तारीका विवरण पाठक पहले पृष्ठोंमे पढ़ चुके हैं। उनके सम्बन्धमें पूछने पर जापानी वैदेशिक विभागके मि० ओहृता ने एक प्रेस प्रतिनिधि को बतलाया कि जापान सरकार ने जनरल मैकार्थर के आदेश से राजा महेन्द्र प्रतापको गिरफ्तार कर अमरीकी अधिकारियों को सौंप दिया था। मि० ओहृता ने पुनः कहा कि जापान से भारत आने के पूर्व यह सम्वाद उन्होने सुना था कि राजा महेन्द्र

प्रताप अमरीकी सरकार द्वारा ब्रिटिश सरकार को सौंपे गये हैं और भारत भेज दिये गये हैं।

कैप्टेन आर० एम० अर्शद्ने फौजी अदालत के सामने गवाही देते हुए आजाद सेना के अन्तिम दिनो की स्थिति पर अच्छा प्रकाश डाला। आपने बताया कि आजाद सेना मे सीनियर भारतीय अफसरों के सम्मिलित होने का कारण एक यह भावना भी थी कि भारतीय सेना मे ब्रिटिश अफसरों और भारतीय कमीशड अफसरों के साथ होने वाले व्यवहार मे बड़ा पक्षपात किया जाता है। भारतीय कमीशड अफसरो को वह व्यवहार नहीं मिलता जो कि ब्रिटिश अफसरो को मिलता है। भारतीय सीमा मे प्रवेश करने के पश्चात् आजाद सरकार के प्रधान श्री बोस ने यह घोषणा की थी कि स्वतन्त्र बनाये गये क्षेत्रों का प्रबन्ध आजाद हिन्द सरकार करेगी। जापानी कमाण्डर ने अपनी घोषणा द्वारा इसका समर्थन किया था। जिस समय मणिपुर मे युद्ध जारी था, तब मेजर एम० जेड कियानी आजाद हिन्द दल की सहायतासे स्वाधीन बनाये इलाकों का शासन करते थे। उस समय मारेह से कोहिमा विभाग के पालेल तक १५०० वर्ग मील भूमिपर आजाद सरकार का शासन था।

रंगून पर ब्रिटिशों के पुन. अधिकार की चर्चा करते हुए आपने बताया कि जापानी २३ अप्रैल से रंगून खाली करने

लगे थे। नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने २४ अप्रैल को रंगून छोड़ा। जाने के पूर्व आपने कर्नल लोकनाथन् को आजाद सेना को बर्मा कमान का—जनरल कमांडर और मुझे कर्नल लोकनाथन् के स्टाफ का मुखिया नियुक्त किया और रंगून स्थित भारतीय नागरिकों की देखरेख करने का आदेश दिया। नेताजीने हमलोगों को ब्रिटिश सेना के आने तक रंगून की व्यवस्था करने और तत्पश्चात् युद्ध बंदी बन जाने की आज्ञा दी थी और तदनुसार हमने रंगून का शासन प्रारम्भ कर दिया। अब तक जापानी वहाँ से हट चुके थे। बर्मा रक्षा-वाहिनी के सैनिक या तो छिपे हुए थे या रंगून से दूर थे। उस समय आजाद सेना की संख्या वहां ५ से ६ हजार तक थी। आजाद सेना अलग-अलग कैम्पों में बिखरी हुई थी। पर हमने सब को एकत्र किया और रंगून में गश्त, पहरा और संरक्षण का नक्शा बनाया। जापानियों के जाने के बाद रंगून में शासन नाम की कोई वस्तु नहीं रह गयी थी। हां, बर्मा सरकार का काम चलाऊ एक मन्त्री था; परन्तु उसके पास पुलिस नहीं थी। आजाद सेना ने उनको स्वेच्छा से शासन प्रबन्ध में सहयोग दिया। जाते समय जापानी वहां के चावल के गोदाम तथा और खाद्य-भण्डार खोलकर छोड़ गये थे। आजाद सेना ने वहां पहरे की व्यवस्था की जिससे दङ्गा-फसाद न हो जाय और इससे बर्मा सरकार को सूचित भी कर दिया।

२५ या २६ अप्रैल को मैं रंगून के सेंट्रल जेल में पहुंचा—जहां शाही गगन सेना के विंग कमांडर हडसन और उनके १००० साथी युद्ध बन्दी थे। जापानी जाते समय जेल का दरवाजा खुला डाल गये थे। मैंने कमाण्डर हडसन को आजाद सेना के उद्देश्य और कार्य की रिपोर्ट दी और आगे के लिये उनकी आज्ञा मागी। उनकी प्रेरणा का ही यह परिणाम था कि बर्मा रक्षा-वाहिनी ब्रिटिशों के अनुकूल होकर भी रंगून के शासन का अधिकार नहीं पा सकी। जापानियों द्वारा रंगून खाली करने के ६ दिन बाद तक मित्र सेना वहां नहीं पहुंची। उसे भय था कि जापानी अभी वहा छिपे बैठे हैं। इसी बीच आजाद सेना रंगून का पूरा प्रबन्ध करती रही। सन्देह के कारण ब्रिटिश विमान वहां बम बरसाते थे। ब्रिटिश सेना ४ मई को तो भयानक बमवर्षा के द्वारा रंगून को बर्बाद करने की योजना भी बना चुकी थी। अन्त में बड़ी कठिनाई के बाद मैं सारी परिस्थिति ब्रिटिश सेनापति को बतला सका। तब कहीं जाकर ३ मई को ब्रिगेडियर लाउडर सेना समेत चले और ४ मई को रंगून पहुचे। उन्होंने भी पहले आजाद सेनाकी पहरा आदि व्यवस्था जारी रहने दी। अन्त में ब्रिगेडियर लाउडर ने कर्नल लोकनाथन् को आज्ञा दी कि वे आजाद सिपाहियों से हथियार रखा लें और उन्हें आजाद सेना के चिह्न छोड़कर रंगून सेन्ट्रल जेल तथा इनसीन जेल के

अहाते में एकत्र होनेका आदेश दें। जेल आजाद सेनाकी छावनी रहेगी, जहाँ आजाद सैनिक कैदी बनकर नहीं स्वतन्त्र रहेंगे। उन्होंने यह भी खुलासा कर दिया कि बाहर उपयुक्त स्थान न होने के कारण ये सैनिक जेल के अहाते में रखे जा रहे हैं। बैरकों के भीतर सैनिकों पर कोई प्रतिबन्ध नहीं रहेगा। कर्नल लोकनाथन् पहले की भाँति उनके सेनापति बने रहेंगे। चिह्न छोड़नेके सम्बन्धमें जनरल निगेडियरने यह कहा कि आजाद सेना मित्रराष्ट्रों द्वारा स्वीकृत नहीं है। अतः यदि इनके सैनिक और अफसर आजाद सेना के चिह्न लगाकर बाहर निकलेंगे तो उनके प्रति मित्रराष्ट्रों के अफसर सम्मान प्रदर्शित नहीं करेंगे। इससे उपद्रव की आशंका रहेगी।" पर हथियार छोड़ते ही आजाद सेना जेल के भीतर बन्दी बना ली गयी और बाहर ब्रिटिश संतरियों का पहरा बैठा दिया गया।

झासी की रानी रेजमिन्ट की कुछ सदस्याए कैप्टेन लक्ष्मी बीच में बैठी है।

आज़ाद फौज युद्ध भूमि में

आज़ाद सेना की कूच
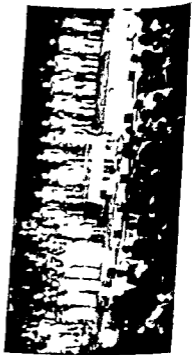
नेताजी परेड करा रहे हैं ।

दो ऐतिहासिक पत्र

नेताजी का मेजर ढिल्लन को पत्र

सदर दफ्तर आला कमान

आजाद हिन्द फौज

रंगून १२ मार्च, १९४४

मेजर, जी० एस० ढिल्लन,

जय हिन्द !

मैं आपकी रेजिमेण्ट द्वारा किये गये कार्यों को ध्यान पूर्वक पूर्ण लगन के साथ देख रहा हूं और विपत्ति में जिस साहसके साथ आपने कठिनाइयों का सामना किया है उसके लिए आपको बधाई देता हूं। पत्ति में मुझे आप पर पूरा भरोसा है।

इस ऐतिहासिक संघर्षमें हमारे साथ चाहे जो कुछ हो परन्तु पृथ्वी पर अब कोई ऐसी शक्ति नहीं है जो हिन्दुस्तानको और अधिक देर तक परतन्त्र रख सके। चाहे हम जीवित रहें और कार्य करें, चाहे हम लड़ते हुए मर जायं, हमें प्रत्येक स्थितिमें,

यह पूर्ण निश्चय और विश्वास रखना है कि जिस उद्देश्य के लिए हम लड़ रहे हैं वह अवश्य सफल होगा। भारत की आजादी के मार्ग की तरफ यह ईश्वर का संकेत है। हमें केवल अपना कर्तव्य पूरा करना है और भारत की स्वाधीनता का मूल्य अदा करना है। मौजूदा लड़ाईमें, जो राष्ट्रीय स्वतन्त्रता का पथ प्रदर्शन कर रही है, हमारा हृदय आपके और आपके साथियों के साथ है। आपके और आपके मातहत अफसरों तथा सैनिकों के प्रति मेरी आन्तरिक शुभकामना है। ईश्वर आपको शक्ति दे और आपको विजय का मुकुट पहनाये।

जय हिन्द

(हस्ताक्षर) सुभाषचन्द्र बसु

मेजर ढिल्लन का नेताजी को उत्तर

बर्मा, २० मार्च, १९४४

श्रद्धेय नेताजी

'जय हिन्द'

आपका १२ मार्च १९४४ का पत्र प्राप्त हुआ। शब्द नहीं, केवल आँसू ही मेरी हृदयगत भावनाओं को प्रकट कर सकते हैं।

आपने मेरे तथा मेरे साथियों के प्रति जो विश्वास प्रकट किया है उसके लिए मैं आपको हार्दिक धन्यवाद देता हूं। नेताजी, मैं आपको अपनी रेजिमेण्ट की ओर से विश्वास दिलाता हूं कि हमारे रास्तेमें चाहे जो कुछ आवे हम आपके आदेशानुसार

लड़ाई जारी रखेंगे और भारतमाता की आजादी के लिए तब तक प्रयत्न करते रहेंगे जब तक इस रेजिमेण्टका एक भी सैनिक जिन्दा रहेगा। अपने सम्बन्धमें रंगूनमें कहे अपने अन्तिम शब्द, 'मैं आपकी आंखें किसी के सामने नीची न होने दूंगा'—मेरे कानों में, जब से मैं आपके पास से आया हूं और विशेष कर जब से मैं नयाऊंगू से लौटा हूं, लगातार गूंज रहे हैं। मैं पूरी तरह महसूस करता हूं कि, उन परिस्थितियों के बावजूद जो सामने आयीं, मैं वह करने में असफल रहा जिसका मैंने वचन दिया और मैं ही एकमात्र ऐसा रेजिमेण्टका कमाण्डर हूं जिसके कारण आपको और आजाद हिन्द फौजको नीचा देखना पड़ा। मैं मुंह दिखाने के योग्य नहीं, केवल मेरे कार्य ही इसका प्रतिकार करेंगे। आपके पत्रने मेरे अन्दर नयी प्रेरणा भर दी है। मैं और सब अफसर तथा सैनिक जो यहां उपस्थित हैं, हृदय से आपको शुभकामनाएं स्वीकार करते हैं। हमे पूर्ण विश्वास है कि ईश्वर की कृपा और आपके आशीर्वाद से सफलता हासिल करना कठिन काम न होगा।

हम आपके चिरायु और स्वास्थ्य के लिए प्रार्थना करते हैं ताकि आप इस 'धर्मयुद्ध' में हमारा पथ प्रदर्शन करते रहें।

जय हिन्द

आप महानुभाव का आज्ञाकारी

जी० एस० ढिल्लन

कांग्रेस और आज़ाद हिन्द फौज

(लेखक—आचार्य जे० बी० कृपलानी)

(प्रधान मंत्री, आल इण्डिया कांग्रेस कमिटी)

आज अहिंसात्मक, जापान विरोधी कांग्रेस वीर, देशभक्त किन्तु जापान के साथी आजाद हिन्द फौज के सदस्यों की सहायता क्यों कर रही है? स्वतन्त्र भारत ही सफलता पूर्वक जापान का मुकाबिला कर सकता है। इस विश्वास पर भारत छोड़ो आन्दोलन जापानी हमले की आशंका होने पर भी क्यों १९४२ मे छेड़ा गया था? क्या, आज और तब के विश्वास और नीति मे फर्क नहीं पड़ा है? ऐसे भाव कुछ कम गहराई से सोचने वाले प्रकट करते हैं?

प्रचलित नीति और काँग्रेस

ऐसे प्रश्नों को समझने के लिये गांधीजी के नेतृत्व में विकसित कांग्रेस का इतिहास देखना चाहिये। गांधीजी की नीति और सिद्धान्त को स्वीकार कर कांग्रेस शांतिपूर्ण वैध उपाय ही अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिये मान सकती है। न वह प्रचलित युद्ध नीतिको मानती है—न हिंसा को राष्ट्रीय आजादी के लिये मान सकती है। अन्तर्राष्ट्रीय युद्ध और शांति में प्रचलित नीति को भी नहीं मानती। क्योंकि इस नीति के द्वारा हिंसात्मक युद्ध और विजय के लिये हर प्रकार के अस्त्र शस्त्रों का व्यवहार अनुचित नहीं।

कांग्रेस २० वर्ष से देशको गांधी नीति पर शिक्षित कर रही है। यह अहिंसात्मक प्रतिरोध की नीति है। स्पष्ट और ईमानदारी की नीति है। इन विचारों को अपनाने में सच्चा रहने के लिये वह विदेशी सशस्त्र सहायता की मांग नहीं कर सकती। न जापान और जर्मनी से गुप्त संधि कर सकती है। क्योंकि ये सब बातें सशस्त्र प्रतिरोध के साथ ही हो सकती हैं।

युद्ध के साथ २ भारत की जनता का भाव उनको अंग्रेजों से दूर करता जा रहा था। ये भाव बडी तेजी से बढ़ रहे थे। इस भाव के कारण ब्रिटिश प्रतिरोध के साथ भारत के कमजोर होने का भय था। तब बर्मा और मलाया की तरह इसके निस्सहायावस्था हो जाने की आशंका थी।

कांग्रेस की नीति और सर्वमान्य नीति

कांग्रेस ने पुरानी नयो सभी विदेशी दस्तंदाजियों को भारत के मामले मे दूर करने के लिये प्रतिरोध की शक्ति बढ़ाने का उपाय किया। "भारत छोड़ो" प्रस्ताव इसी भाव का पोषक था। कांग्रेस का विश्वास था कि यदि भारत बची हुई ब्रिटिश स्वेच्छाचारिता का विरोध नहीं कर सकता—तो युद्ध के समय और बढ़ जायेगी। नये आक्रान्त के योग्य भी न रह जायेगी तब हमारी भी हालत बर्मा और मलाया की तरह होगी। जनता हतोत्साह हो जायेगी—वे उत्साहित हो जायेंगे। इसलिये कांग्रेस प्रतिरोध की शक्ति को बढ़ाकर भारत को स्वतन्त्र कर लेना चाहती थी। क्योंकि उसका विश्वास था—कि जाग्रत और प्रतिरोध करने की शक्ति को बढ़ाकर स्वतन्त्र हुआ भारत ही जापानी हमले का सफलता पूर्वक सामना कर सकेगा। साम्राज्यवादी प्रतिरोध असमर्थ साबित हो चुका था।

सर्वमान्य नीति के उदाहरण

यदि कांग्रेस अन्तर्राष्ट्रीय जगत् मे प्रचलित सदाचार का अनुसरण करती—तो वह इंगलैंड पर पड़े खतरे से लाभ उठाती। उसके दुश्मनोंसे छिपी संधि कर लेती। यह युगों की प्रचलित नीति की पुनरावृत्ति होती। राष्ट्रीय स्वतन्त्रता के लिये सभी देशोंने विदेशियों का साथ पाकर स्वतन्त्रता प्राप्त की है।

कमजोर प्रबल का मुकाबिला करने के लिये उसके शत्रुओं से मिल जाता है। जैसे काँटे को काँटा निकालता है। सामान्य शत्रुता मित्रता की यह सामान्य आधारभूत नीति है जिसके कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं —

१—अमेरिका ने अपनी स्वतन्त्रता की प्राप्ति के लिये मातृदेश विरुद्ध फ्रांस का साथ प्राप्त किया।

२—१६ वीं सदी में इटालियन देशभक्त आजादी के लिये सभी यूरोप के देशों से आस्ट्रिया के विरुद्ध सहायता माँग रहे थे।

३—पिछले १६१४ के युद्धमें फ्रांस और वेलजियम ने ब्रिटिश सेनाको जर्मनी से अपनी रक्षाके लिये बुलाया था।

४—स्पेनके घरेलू युद्ध मे दोनों दल विदेशी सहायता खोज रहे थे। परन्तु स्पेनको कोई दल परतन्त्र नहीं देखना चाहता था। और विदेशी सेनाके आने से स्पेनके परतन्त्र होने का भय नहीं समझता था।

५—फ्रांसने इस युद्धमें भी ब्रिटिश सेना बुलाई। इसे अनुचित नहीं माना गया।

६—विरुद्ध सिद्धान्त वाले होने पर भी रूस और ब्रिटेनमे सन्धि हो गई। दोनों सामान्य शत्रु का मुकाबिला करनेके लिये मिल गये। वे जरूरत पर सेना भी एक दूसरेके देशोंमें भेजते रहे।

७—डा० वेनसने चेकोस्लोवाकियाकी रक्षाके लिये विदेशी मदद ली।

८—जनरल डिगाले द्वारा फ्रांसके उद्धारके लिये फांसिसियों के विरुद्ध विदेशी मदद लेने वाले जर्मन भक्त पीटेन और लावेल ही गोलीके शिकार वनाये गये हैं। यही यह सर्वमान्य नीति है—जो युगोंसे चालू है। लालकिलेके जज इसी नीतिके पक्षपाती हैं। अतः उस सदाचार के आधारपर आजाद हिन्द फौज निर्दोष है।

१९४२ में सुभाष बाबू देशके वाहर निकल गये। आप जेलके भयसे नहीं—किन्तु वेनम और डिगालेकी तरह विदेशी मदद देशकी आजादीके लिये पाने के लिये निकले। यह उतना ही देशभक्ति पूर्ण काम था—जितना किसी यूरोपीयन देशभक्त का। जो यूरोपियन देशभक्त जेलसे या अपने देशसे इसी निमित्त भाग गये उनके इस कामकी प्रशंसा ही की गई। शिवाजी अपनी बुद्धिमानीसे औरंगजेबके पंजसे निकल भागे। कोई उसे राजनैतिक भूल नहीं कहता। ब्रोवर युद्धमें चर्चिल भी पकड़े गये थे—वे भी भाग निकले। क्या उसे कभी धोखा और छल कहा गया है ? क्योंकि यहां कैद ही अनुचित और सदाचार विरुद्ध थी। हम सुभाष बाबू को कांग्रेस की नीति से नहीं जांच सकते। क्योंकि राष्ट्रोंने इसे नहीं माना है। केवल कांग्रेस संगठन ही एक ऐसा राजनैतिक संगठन है—जिसने इसे अभी तक माना है। संसार अभी उसी मान्य नीति पर चल रहा है। जो इस कांग्रेस नीतिको मानते हैं वे ही इस नीतिसे जांचे जा सकते हैं। दूसरे अपनी स्वीकृत मान्य नीतिसे ही जांचे जा सकते हैं। यदि

ऐसा न होता—तो पोलैण्ड, चीन और रूस के प्रति गांधी जी सहानुभूति क्यों प्रकट करते ? इसलिये सुभाष और उनके साथी आजाद हिन्द सैनिक भी उसी प्रकार माने जायगे। उन वीर देशभक्तोंके प्रति जो आसामकी घाटीमें मर गये आज भी फांसी देनेकी सजाके लिये मुकदमेके फेरमें पड़े हैं। यह अन्याय होगा कि हम उनको कांग्रेसकी नीतिसे जांचें। लालकिलेके जज और अभियुक्त एक ही नीतिके मानने वाले हैं। व्यवहारके लिये हरेक का एक ही मापदण्ड सदाचारका नहीं होता—अध्यापकके समान बनियाका सदाचार नहीं होता। बनिये और वकील अपने पेशे के मापदण्डसे ही मापे जायगे। इस प्रकार कांग्रेस और राष्ट्रोंकी नीतिमें फर्क है। सुभाष बाबू और उनके साथी कांग्रेसके मापदण्ड से नहीं नापे जा सकते। व राष्ट्रोंके अन्दर प्रचलित सदाचार का कसौटीको मानते थे। अत वे वैसे ही देशभक्त हैं—जैसे दूसरे देशोंके देशभक्त। जो अच्छा और देशभक्तिपूर्ण सदाचार इंगलैण्ड, फ्रांस और अमेरिकामें है—वह भारतमें क्यों नहीं रहेगा ? देशसे प्रेम, उसके लिये त्याग सभी देशोंमें मान्य गुण हैं। सदाचार या गणितके नियम देश २ में बदलते नहीं रहते। दो और दो भारतमें भी चार ही रहेंगे।

व जापानी खतरा भी समझते थ। अत उन्होंने अपने पैरों पर अपनेको खडा किया। भारतमें गुलामीमें जो नहीं हो सका—वह आजाद भारतमें आसानीसे हो गया। हमें अंग्रेज और

जापानी अपनी सेना में नहीं रखने पड़े। भारत में आज तक सेना का भारतीयकरण नहीं हो सका है। न सरकारी ऑफिसर्स का ही भारतीय करण हो सका है।

राजनीतिमें प्रतिज्ञाका विशेष मूल्य राष्ट्रमें नहीं माना जाता। विची गवर्मेन्टके अफ्रीकाके सरकारी कर्मचारियोंने भी प्रतिज्ञा तोड़ दी थी। राजाके प्रति भक्तिका अर्थ उसके व्यक्तित्वके प्रति नहीं माना जाता, किन्तु उसका अर्थ राष्ट्रप्रेम माना जाता है। राजा राष्ट्रकी मूर्ति माना जाता है। आस्ट्रेलिया-कनाडा, अफ्रीका ने इसी भावमें राजभक्ति की शपथ ली है। यदि राजा के प्रति शपथ मतलब होता—तो अष्टम एडवर्ड को मन्त्रि-मण्डल गद्दी त्यागने के लिये नहीं कह सकता था। इंग-लैंडमे "राजा चिरंजीवी हो—" यह कहते हुए देश प्रेमियोंने राजाका शिर उतार लिया। अतः राजभक्तिकी शपथका अर्थ देशप्रेम ही होता है। इस अर्थमें आजाद हिन्द सैनिक ही सच्चे राजभक्त हैं। जिन्होंने देशके प्रति द्रोह किया है—राजद्रोही हैं। क्योंकि राजाके नाम पर उन्होंने लोगोंको धोखा दिया है।

इस प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय और राजभक्तिके अर्थोंमें वे निर्दोष हैं। हम आजाद हिन्द फौजको नमस्कार करते हैं।

"जय हिन्द"

॥ समाप्त ॥